नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2)
Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com

वर्ष 03, अंक 299, नई दिल्ली, रविवार 29 दिसम्बर 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

त्याग के बिना कुछ भी पाना संभव नहीं है, एक सांस लेने के लिए भी एक सांस छोड़नी पड़ती है।

03 दूसरों के मार्ग में बाधा डालना बहुत बड़ा पाप माना गया है।

06 2025: वैज्ञानिक सफलताओं का एक वर्ष

08 एन आई टी आदित्यपुर का नाम एनआई टी जमशेदपुर किये जाने पर रोष...

नए साल पर दिल्लीवासियों को लगेगा झटका

पेट्रोल-डीजल-सीएनजी वाहनों की बढ़ सकती है कीमत; क्या है वजह?

जब राष्ट्रभक्ति केवल नारा नहीं, बल्कि नागरिक की ईमानदारी, जिम्मेदारी और करुणा का व्यवहार बन जाए—तभी भारत सच्चे अर्थों में महान कहलाएगा।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अप्रैल से दिल्ली में डीजल के साथ-साथ पेट्रोल सीएनजी की गाड़ियां भी महंगी हो सकती हैं। दिल्ली सरकार इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देने के लिए डीजल वाहन पर लगने वाले 1 प्रतिशत ग्रीन सेस (पर्यावरण शुल्क) को पेट्रोल और सीएनजी वाहनों पर भी लगाने का विचार कर रही है। हालांकि यह फाइनल नहीं है सरकार इस मामले में जनता का रुख भी देखेगी।

सूत्रों की मानें तो सरकार इस मुद्दे पर आंतरिक तौर पर एक सर्वे करने पर भी विचार कर रही है, क्योंकि यह मुद्दा सीधे तौर पर जनता से जुड़ा हुआ है और जनता को भी सरकार नाराज नहीं करना चाहती है। अगर सब कुछ ठीक-ठाक रहा तभी इस प्रस्ताव को अप्रैल से आने वाली दिल्ली सरकार की नई इलेक्ट्रिक वाहन नीति में शामिल किया जा सकेगा। अगर इसे लागू किया जाता है तो दिल्ली पेट्रोल, सीएनजी वाहनों के पंजीकरण पर ग्रीन सेस लगाने वाला देश का पहला राज्य बन जाएगी।

बताया जा रहा है कि गत दिनों मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की अध्यक्षता में इलेक्ट्रिक वाहन नीति को लेकर हुई बैठक में इस बारे में चर्चा हुई है, जिसमें डीजल के साथ पेट्रोल और सीएनजी गाड़ियों की खरीद पर 1 से 2 प्रतिशत का ग्रीन सेस लगाने के प्रस्ताव पर भी चर्चा हुई है। सरकार इस प्रस्ताव पर भी विचार कर रही है वाहनों पर पर्यावरण शुल्क न लगाकर पेट्रोल डीजल पर प्रति लीटर 25 से 50 पैसे का अतिरिक्त सेस लगा दिया जाए।

सरकार दिल्ली में खरीदे जाने वाली गाड़ियों पर लगने वाले वन टाइम पार्किंग चार्ज भी बढ़ाने पर विचार कर रही है।

अन्य ईंधन से चलने वाले वाहनों को महंगा कर देना उचित कदम नहीं: अनिल छिकारा

सरकार का इलेक्ट्रिक वाहनों को बढ़ावा देना अच्छा कदम है, मगर इसके लिए अन्य ईंधन से चलने वाले वाहनों को महंगा कर देना भी उचित कदम नहीं है। यह कदम जनता के हित में नहीं होगा। सरकार को अगर निजी वाहनों से होने वाले प्रदूषण को कम करना है तो इसके लिए उसे वाहनों पर सब्सिडी देने से ज्यादा लास्टमाइल कनेक्टिविटी को मजबूत करना चाहिए, इस दिशा में यही एक बेहतर कदम है। सरकार इलेक्ट्रिक वाहनों को सब्सिडी देकर सस्ता कर सकती है, मगर इससे यातायात जाम की समस्या कम होने वाली नहीं है। इसका एक ही हल है कि जो पैसा सरकार वाहन सब्सिडी पर खर्च करना चाहती है तो उसे लास्टमाइल कनेक्टिविटी पर खर्च करे। लास्टमाइल कनेक्टिविटी को इतना मजबूत किया जाए कि लोग अपने वाहन अपने घर पर छोड़ने के लिए मजबूर हो जाएं।

– अनिल छिकारा, पूर्व उपायुक्त, दिल्ली परिवहन विभाग

फिलहाल नई गाड़ी के रजिस्ट्रेशन के समय वन टाइम 2000 से 4000 रुपये तक का पार्किंग चार्ज लगता है। इससे भी गाड़ियों के पंजीकरण का खर्च बढ़ सकता है।

दिल्ली में अब तक कुल पांच लाख से अधिक ई-वीकल पंजीकृत हैं। इस साल 2025 में ही अब तक पंजीकृत हुई कुल 8.11 लाख गाड़ियों में 1.11 लाख से अधिक इलेक्ट्रिक वाहन पंजीकृत हैं। 2024 में कुल इलेक्ट्रिक वाहन 80 हजार, 2023 में कुल इलेक्ट्रिक वाहन 77 हजार, 2022 में कुल इलेक्ट्रिक वाहन 63 हजार और 2021 में 35,444 कुल इलेक्ट्रिक वाहन पंजीकृत हुए थे। नई ईवी नीति में 10 साल से पुराने वाहनों पर पीयूसी प्रमाण पत्र की जांच के समय भी ग्रीन सेस लगाने का भी प्रस्ताव है।

वाहनों पर ग्रीन सेस लगाने से पहले दिल्ली सरकार कराएगी सर्वे

दिल्ली सरकार से जुड़े अधिकारी सूत्र कहते हैं कि पेट्रोल सीएनजी वाहनों पर ग्रीन सेस लगा देना एक संवेदनशील मुद्दा है। इसे लेकर कोई भी फैसला लेने से पहले इस बात का सर्वे भी कराया जाएगा कि इसका जनता पर क्या असर पड़ेगा। सूत्र ने कहा कि दिल्ली में अप्रैल से लागू होने वाली नई इलेक्ट्रिक वाहन नीति में यह एक प्रस्ताव यह जरूर आया है कि इलेक्ट्रिक वाहनों की ओर लोगों को आकर्षित करने के लिए पेट्रोल और सीएनजी के वाहनों को ग्रीन शुल्क लगाकर महंगा किया जाए। मगर इस पर अभी कोई विचार नहीं किया गया है।

जनकल्याण परिवहन सीरीज़:

राष्ट्र की सड़कों पर जनस्वास्थ्य की आवाज़

(लेखक: संजय कुमार बाठला)

भाग 1: मिलावट का ट्रैफिक — भोजन से ईंधन तक विष का सफर

मुख्य विचार:

भोजन ही नहीं, बल्कि ईंधन और ऑटोमोबाइल उद्योग में भी मिलावट की प्रवृत्ति खतरनाक रूप से बढ़ रही है। नकली या निम्न-गुणवत्ता वाले पेट्रोल, डीजल और ल्यूब्रिकेंट्स न केवल इंजन को नुकसान पहुँचाते हैं, बल्कि वातावरण में ज़हरीले प्रदूषक छोड़ते हैं।

संदेश:

ईंधन गुणवत्ता नियंत्रण, BIS मानक, और निरीक्षण प्रणाली की सख्ती ही मिलावट की जड़ों पर प्रहार करेगी।

भाग 2: धुआँ और सांस — वाहन प्रदूषण से बढ़ता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट

मुख्य विचार:

दिल्ली सहित भारत के प्रमुख शहरों में वाहन प्रदूषण फेफड़ों, हृदय और मस्तिष्क संबंधी बीमारियों का सबसे बड़ा कारण बनता जा रहा है।

संदेश:

स्वच्छ ईंधन नीति, इलेक्ट्रिक वाहनों को प्रोत्साहन, और सार्वजनिक परिवहन की मजबूती जनस्वास्थ्य की बुनियाद है। नागरिक का जिम्मेदार व्यवहार—जैसे नियमित वाहन जांच और साझा सफर—भी बदलाव ला सकता है।

भाग 3: सड़कें या रणभूमि — सुरक्षा में लापरवाही की कीमत

मुख्य विचार:

भारत में हर वर्ष लगभग 1.5 लाख लोग सड़क दुर्घटनाओं में अपनी जान गंवाते हैं। दोष सिर्फ सड़कों का नहीं, बल्कि हमारी मानसिकता, अधूरी व्यवस्था और ट्रैफिक अनुशासन की कमी का भी है।

संदेश:

सड़क सुरक्षा केवल नीति नहीं, यह आचरण का प्रश्न है। हेलमेट, सीट बेल्ट, और औपचारिक ड्राइविंग शिक्षा—यही जीवनरक्षक राष्ट्रभक्ति है।

भाग 4: परिवहन और जनस्वास्थ्य — हर सांस की कीमत

मुख्य विचार:

प्रदूषित हवा सिर्फ पर्यावरणीय नहीं, बल्कि चिकित्सा आपदा (Public Health Disaster) बन चुकी है। बच्चे, बुजुर्ग और यात्री सबसे अधिक प्रभावित हैं।

संदेश:

समय आ गया है कि परिवहन व्यवस्था को स्वास्थ्य नीति का हिस्सा माना जाए। "क्लीन ट्रांसपोर्ट, हेल्दी सिटीज़" अब केवल नारा नहीं, राष्ट्रीय जननीति बने।

भाग 5: नैतिकता की गाड़ी — नागरिक ही असली चालक

मुख्य विचार:

कानून और नीतियाँ अपनी जगह हैं, पर नैतिकता और जिम्मेदारी ही बदलाव का इंजन हैं। नागरिक व्यवहार में ईमानदारी, दूसरों की सुरक्षा का सम्मान और जिम्मेदार उपभोग ही मिलावट-मुक्त भारत का रास्ता दिखाएँगे।

संदेश:

सच्ची देशभक्ति वही है, जो अपने कर्तव्य से राष्ट्र और मानवता—दोनों की रक्षा करे।

(श्रृंखला निष्कर्ष): परिवहन केवल गति नहीं, बल्कि जनजीवन की धड़कन है। यदि इस धड़कन में ईंधन, वायु, और नैतिकता की शुद्धता बनी रहे—तो राष्ट्र का शरीर स्वस्थ और आत्मा सशक्त रहेगी। यही सच्चा "परिवहन में जनकल्याण" होगा।

जनकल्याण परिवहन सीरीज, भाग:- 2

धुआँ और सांस — वाहन प्रदूषण से बढ़ता सार्वजनिक स्वास्थ्य संकट

सड़क पर दौड़ता वाहन केवल यातायात का प्रतीक नहीं, बल्कि हवा में घुलता विष भी है। जो सांसें हम लेते हैं, उनमें अब शहरों की रफ्तार का धुआँ मिल चुका है — और यह संकट अब व्यक्तिगत नहीं, राष्ट्रीय बन गया है।

लेखक: संजय कुमार बाठला

भारत ने पिछले तीन दशकों में आर्थिक विकास और मोटर चालित परिवहन का अद्भुत विस्तार देखा है।

परंतु इस तेजी ने एक अदृश्य संकट भी जन्म दिया है — वायु प्रदूषण, जो अब सार्वजनिक स्वास्थ्य का सबसे गंभीर रूप ले चुका है।

आज **दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई जैसे महानगरों में** हवा की गुणवत्ता डब्लूएचओ के मानक से 8 से 10 गुना खराब है। और

इस बदतर हवा का सबसे बड़ा योगदान कर्ता है — वाहन प्रदूषण, जो देश के कुल वायु विषाक्त उत्सर्जन का लगभग 30 - 40 प्रतिशत हिस्सा है।

हर सांस में ज़हर की मात्रा वाहनों से निकलने वाले धुएँ में कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, सल्फर डायऑक्साइड और सूक्ष्म कण (PM2.5 और PM10) शामिल हैं।

ये सूक्ष्म कण इतने महीन होते हैं कि वे फेफड़ों के भीतर गहराई तक पहुँचकर रक्त में मिल जाते हैं।

इसका परिणाम है — सांस की बीमारियाँ, हृदयाघात, स्ट्रोक और फेफड़ों का कैंसर तक।

"लैंसेट" और "ICMR" की रिपोर्ट बताती है कि भारत में वायु प्रदूषण से हर वर्ष लगभग 17 लाख से अधिक समय पूर्व मृत्यु होती हैं। इनमें से एक बड़ा हिस्सा प्रत्यक्ष रूप से वाहनों के उत्सर्जन से जुड़ा है।

सड़क पर बढ़ती रफ्तार, घटती उमर जब हम नई गाड़ियाँ खरीदते हैं, अक्सर ध्यान ईंधन दक्षता और शक्ति पर जाता है — पर उत्सर्जन मानक पर नहीं।

2010 के बाद से भारत ने BS-IV से BS-VI तक की छलांग तो लगा ली है, परंतु लाखों पुराने वाहन अब भी सड़कों पर चल रहे हैं जो शुद्धिकृत ईंधन को भी ज़हरीली धुंध में बदल देते हैं।

दिल्ली में किये गए एक अध्ययन के अनुसार —

* कुल PM2.5 प्रदूषण में लगभग 40% हिस्सा वाहनों का है।
* डीज़ल चालित भारी वाहन और ऑटो-रिक्शा सबसे बड़ा स्रोत हैं।
* ट्रैफिक जाम के दौरान उत्सर्जन तीन गुना बढ़ जाता है।

रफ्तार के इस मोह ने सिर्फ सड़कों को नहीं, बल्कि हमारी श्वास-प्रणाली को भी संघर्ष - क्षेत्र बना दिया है।

सार्वजनिक स्वास्थ्य पर सीधा प्रहार वाहन प्रदूषण का असर अब बाल रोग, गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य और मानसिक विकास तक फैला है।

एआईआईएमएस के अध्ययन बताते हैं कि शहरी बच्चों में अस्थमा और एलर्जी के मामले ग्रामीण बच्चों की तुलना में 3 गुना अधिक हैं।

हर सांस जो बच्चे लेते हैं, उसमें नाइट्रोजन ऑक्साइड और ओज़ोन जैसे गैसों की मात्रा अब खतरनाक स्तर तक पहुँच चुकी है।

यह केवल पर्यावरणीय नहीं, बल्कि जनस्वास्थ्य आपदा (Public Health Emergency) है, जहाँ अस्पतालों में श्वसन रोगियों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है।

समाधान सड़क पर नहीं, सोच में है

इस विष को रोकने के तीन रास्ते हैं —

1. स्वच्छ ईंधन नीति: BS-VI मानक के पालन के साथ - साथ वैकल्पिक ईंधन (CNG, EV, Hydrogen) को व्यापक बनाना आवश्यक है

2. सार्वजनिक परिवहन को प्राथमिकता: दिल्ली मेट्रो की सफलता इस बात का उदाहरण है कि जब जन - परिवहन प्रभावी होता है, तो सड़कों पर वाहन कम और हवा स्वच्छ रहती है।

3. ड्राइविंग अनुशासन और मेंटेनेंस: नियमित प्रदूषण जांच (PUC), कार पूलिंग, और वाहन बंद स्थिति में इंजन बंद रखना — छोटे, पर महत्वपूर्ण परिवर्तन हैं।

नागरिक जिम्मेदारी: सांसों की रक्षा अभियान हर नागरिक को यह समझना होगा कि प्रदूषण केवल सरकार का मुद्दा नहीं, बल्कि व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी भी है।

* ऑफिस तक साझा वाहन से जाना,
* सप्ताह में एक दिन निजी वाहन न चलाना, और
* ई-वाहन या मेट्रो जैसे माध्यम अपनाना
* — **ये कदम केवल पर्यावरण नहीं, हमारे फेफड़ों के पक्ष में हैं।**

*** नगर निगमों और आरडब्ल्यूए स्तर पर "स्वच्छ श्वास दिवस" या "नो कार ज़ोन" जैसे सामुदायिक अभियान** इस चेतना को ज़मीनी बना सकते हैं।

नैतिक निष्कर्ष: जब राष्ट्र अपने नागरिकों को स्वच्छ हवा नहीं दे सकता, तो कोई भी विकाससूचक आँकड़ा अधूरा है। वाहन प्रदूषण की समस्या केवल मशीनों की नहीं, मानव मूल्य की भी है।

देशभक्ति का अर्थ यह भी है कि हम अपनी सड़कें, अपनी हवा और अपनी सांसें स्वच्छ रखें। **जब अंतिम व्यक्ति भी बिना खाँसे साँस ले सके — तभी भारत वास्तव में आगे बढ़ेगा।**

यह लेख "परिवहन विशेष – जनकल्याण सीरीज़" का दूसरा भाग है। अगला लेख विषय होगा:

"सड़कें या रणभूमि — सुरक्षा में लापरवाही की कीमत"

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

पिंकी कुंडू

आज का साइबर सुरक्षा विचार : म्यूल बैंक खातों का बढ़ता गोरखधंधा

म्यूल बैंक खातों की बिक्री और खरीद तेजी से बढ़ रही है, जिससे बड़े पैमाने पर धोखाधड़ी हो रही है और भारी धनराशि विदेशों में बैठे ठगों तक पहुँच रही है।

ऑपरेशन साइहॉक (Operation CyHawk) में दिल्ली पुलिस ने साइबर धोखाधड़ी से जुड़े हज़ारों म्यूल बैंक खातों का पता लगाया। रिपोर्टों के अनुसार, जांचकर्ताओं ने कई बैंकों में संदिग्ध खातों का मानचित्रण और सत्यापन किया तथा उन्हें लगभग ₹944 करोड़ की धनराशि के लेन-देन से जोड़ा। यह अभियान धोखाधड़ी के नेटवर्क की रीढ़ को तोड़ने पर केंद्रित था, जिसमें म्यूल खातों के बड़े समूहों को निशाना बनाया गया।

• पिंपरी चिंचवड़ पुलिस की हालिया जांच में एक चिंताजनक प्रवृत्ति सामने आई है:

साइबर अपराधी फेसबुक और टेलीग्राम जैसे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर खुलेआम म्यूल बैंक खातों की खरीद-फरोख्त कर रहे हैं।

• दिल्ली पुलिस ने कई साइबर धोखाधड़ी मामलों का खुलासा किया जिनमें म्यूल बैंक खातों की खरीद, बिक्री और यहाँ तक कि किराए पर देने की बात सामने आई।

• कमजोर पृष्ठभूमि वाले लोग (जैसे टैक्सी चालक, सब्जी विक्रेता आदि) ऊँचे कमीशन, मुफ्त यात्रा, आलीशान ठहराव और मासिक किराए के भुगतान के लालच में फँसाए जा रहे हैं।

कार्यप्रणाली (Modus Operandi)

• कमजोर व्यक्तियों को निशाना बनाना:

o पुणे के टैक्सी चालक को कोलकाता भेजा गया और होटल में ठहराया गया।

o पिंपरी चिंचवड़ के सब्जी विक्रेता को उदयपुर भेजा गया और रिसॉर्ट में ठहराया गया।

o रिक्शा चालकों और बेरोजगार युवकों को मासिक किराए के कमीशन का लालच देकर उनके खातों का धोखाधड़ी में इस्तेमाल किया गया।

• भ्रामक विज्ञापन:

o सोशल मीडिया पोस्ट में बैंक खातों की पहुँच देने पर कमीशन का वादा।

o पीड़ितों को यह विश्वास दिलाया गया कि वे वैध व्यापारिक सौदे का हिस्सा हैं।

• म्यूल खातों का उपयोग:

o साइबर अपराध पीड़ितों से ठगी गई बड़ी रकम इन खातों में जमा की गई।

o खाता धारक अनजाने में चोरी किए गए धन की मनी लॉन्ड्रिंग में शामिल हो गए।

• सोशल मीडिया पर खुली बिक्री:

o फेसबुक ग्रुप में "Chen" नामक व्यक्ति ने खुद को चीनी गेमिंग कंपनी बताया और कमीशन के लिए 'रेट कार्ड' जारी किया।

o टेलीग्राम पोस्ट में "गेमिंग वर्क" के लिए कॉर्पोरेट खाते की मांग की गई, जिसमें कोई शिकायत न होने और ऊँचे रिटर्न का वादा किया गया।

मुख्य निष्कर्ष

• म्यूल खाते ऑनलाइन घोटालों की रीढ़ हैं, जो ठगों को अवैध धन को बिना पकड़े ले जाने में सक्षम बनाते हैं।

• साइबर अपराधी भर्ती प्रक्रिया को पेशेवर बना रहे हैं, यात्रा और आलीशान ठहराव का लालच देकर खाता धारकों को आकर्षित कर रहे हैं।

• सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म अवैध वित्तीय गतिविधियों के बाज़ार के रूप में दुरुपयोग किए जा रहे हैं, जहाँ खातों की खुली बोली लग रही है।

• पीड़ित अक्सर कानूनी मुसीबत में फँस जाते हैं क्योंकि उनके खाते सीधे धोखाधड़ी लेन-देन से जुड़े होते हैं।

जोखिम और प्रभाव • व्यक्तियों के लिए:

o कानूनी जिम्मेदारी, गिरफ्तारी और प्रतिष्ठा की हानि।

o वित्तीय खाते फ्रीज़ या ब्लैकलिस्ट हो सकते हैं।

जोखिम और प्रभाव • समाज के लिए:

o साइबर धोखाधड़ी मामलों में वृद्धि।

o बैंकिंग प्रणाली पर विश्वास कमजोर होना।

जोखिम और प्रभाव • कानून प्रवर्तन के लिए:

o अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराध नेटवर्क को ट्रैक करने में कठिनाई।

o सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म की निगरानी को मजबूत करने की आवश्यकता।

रोकथाम के उपाय • नागरिक जागरूकता:

o कमीशन के लिए बैंक खाता विवरण या पहुँच साझा करने से बचें।

o किसी भी ऑनलाइन ऑफर की वैधता की पुष्टि करें।

रोकथाम के उपाय • कानून प्रवर्तन कार्रवाई:

o म्यूल खातों की खुलेआम खरीद-फरोख्त करने वाले समूहों की निगरानी और बंद करना।

o अंतरराष्ट्रीय साइबर अपराधियों को ट्रैक करने के लिए सीमा-पार सहयोग को मजबूत करना।

रोकथाम के उपाय • बैंकिंग क्षेत्र की सतर्कता:

o उन्नत KYC और लेन-देन की निगरानी।

o अचानक उच्च मात्रा वाले लेन-देन वाले संदिग्ध खातों को चिन्हित करना।

रोकथाम के उपाय • सोशल मीडिया नियमन:

o प्लेटफॉर्म को अवैध खाता बिक्री को बढ़ावा देने वाले समूहों का पता लगाकर हटाना चाहिए।

निष्कर्ष म्यूल खातों के व्यापार में वृद्धि साइबर अपराधियों की बढ़ती चालाकी को दर्शाती है। कमजोर नागरिकों को धन और विलासिता के झूठे वादों से फँसाकर ठग एक समानांतर भूमिगत अर्थव्यवस्था बना रहे हैं। इस खतरे को रोकने के लिए मजबूत जागरूकता अभियान, नियामक निगरानी और सक्रिय पुलिसिंग आवश्यक है।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

सी-बकथॉर्न (Sea Buckthorn) — पहाड़ों का स्वर्ण

पिंकी कुंडू

कई बार हम अपने आसपास उगने वाले ऐसे पौधों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, जिनमें प्रकृति ने अनगिनत गुण भर रखे होते हैं। सी-बकथॉर्न उन्हीं में से एक है। यह सिर्फ़ एक पौधा नहीं, बल्कि पहाड़ी क्षेत्रों के लिए स्वास्थ्य, पर्यावरण और आजीविका—तीनों का मजबूत सहारा है।

पौधे का संक्षिप्त परिचय सी-बकथॉर्न एक काँटेदार झाड़ी या छोटा पेड़ होता है, जिस पर नारंगी–पीले रंग की खट्टी–कसैली बेरी लगती है। ठंडे और शुष्क इलाकों में यह बहुत अच्छी तरह पनपता है। लद्दाख, लाहौल–स्पीति, किन्नौर, उत्तराखंड और हिमाचल जैसे क्षेत्रों में यह प्राकृतिक रूप से पाया जाता है।

क्यों कहा जाता है इसे "सुपरफूड"? सी-बकथॉर्न की बेरी में पोषण का खजाना छुपा है। इसमें

* संतरे से कई गुना अधिक विटामिन C
* विटामिन A, E, K और B-कॉम्प्लेक्स
* ओमेगा 3, 6, 7 और 9 फैटी एसिड
* शक्तिशाली एंटीऑक्सिडेंट्स
* आयरन, कैल्शियम और मैग्नीशियम पाए जाते हैं।

यही कारण है कि इसे दुनिया भर में Natural Superfood माना जाता है।

आयुर्वेदिक और औषधीय महत्व आयुर्वेद और पारंपरिक चिकित्सा में सी-बकथॉर्न का विशेष स्थान है।

* रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक
* पेट के रोग, गैस और अल्सर में लाभकारी
* हृदय को मजबूत रखने में मददगार
* त्वचा रोग, घाव और जलन में उपयोगी
* आँखों की रोशनी और बालों की मजबूती के लिए लाभकारी
* मधुमेह में सहायक माना जाता है

सी-बकथॉर्न ऑयल के चमत्कारी फायदे फल और बीज से निकाला गया इसका तेल बहुत कीमती होता है।

* जले हुए घावों और कट-फट में
* एक्ज़िमा और सोरायसिस जैसी त्वचा समस्याओं में
* झुर्रियाँ कम करने और त्वचा को पोषण देने में
* होंठों और बालों की देखभाल में
* रेडिएशन थेरेपी के बाद त्वचा सुरक्षा में इस्तेमाल किया जाता है।

उपयोग के पारंपरिक और आधुनिक तरीके सी-बकथॉर्न का उपयोग कई रूपों में किया जाता है—

* जूस और शरबत
* जैम और जेली
* हर्बल चाय
* कैप्सूल/टैबलेट
* तेल (Oil)
* लद्दाख की पारंपरिक चटनी

खेती और बागवानी के लिए वरदान सी-बकथॉर्न की खेती पहाड़ी किसानों और बागवानों के लिए बहुत फायदेमंद है।

* कम पानी में उगने वाला पौधा
* रेतीली और कम उपजाऊ मिट्टी में भी अच्छा उत्पादन
* नाइट्रोजन फिक्स कर मिट्टी की उर्वरता बढ़ाता है
* 3–4 साल में फल देना शुरू करता है

* बंजर भूमि को उपजाऊ बनाने में मददगार पर्यावरण संरक्षण में भूमिका सी-बकथॉर्न सिर्फ़ इंसानों के लिए ही नहीं, बल्कि प्रकृति के लिए भी अमूल्य है।

* मिट्टी कटाव रोकता है
* हरित आवरण बढ़ाता है
* पहाड़ी क्षेत्रों में जल और मिट्टी संरक्षण में सहायक
* बंजर ज़मीन को जीवन देता है

सावधानियाँ

* अत्यधिक सेवन से पेट खराब हो सकता है
* गर्भवती महिलाएँ सेवन से पहले डॉक्टर की सलाह लें
* अत्यधिक खट्टा होने के कारण सीधे बहुत अधिक न खाएँ

रोचक तथ्य

* लद्दाख में इसे "स्वर्ण फल" कहा जाता है
* भारतीय सेना के जवानों के लिए इससे स्वास्थ्यवर्धक पेय बनाया जाता है
* अंतरिक्ष यात्रियों के आहार में भी इसका उपयोग किया जा चुका है

सी-बकथॉर्न सच में पहाड़ों की अनमोल धरोहर है। अगर हम ऐसे पौधों को अपनाएँ, उगाएँ और सहेजें—तो स्वास्थ्य भी बचेगा और प्रकृति भी।

वात दोष बढ़ने से कौन-कौन से दर्द होते हैं?

पिंकी कुंडू

प्रश्नः कई लोगों को कभी गर्दन में, कभी कमर में, कभी घुटनों या पिंडलियों में दर्द होता है। दर्द जगह बदलता रहता है, कभी हल्का तो कभी चुभने जैसा लगता है। क्या यह वात दोष बढ़ने का संकेत हो सकता है?

उत्तरः आयुर्वेद के अनुसार वात दोष नसों, हड्डियों और गति से जुड़ा होता है। जब वात असंतुलित होता है, तो दर्द स्थिर नहीं रहता और शरीर के अलग-अलग हिस्सों में महसूस होता है।

वात बढ़ने से होने वाले प्रमुख दर्द हैं—

- गर्दन और कंधों का अकड़न भरा दर्द
- कमर और पीठ के निचले हिस्से में खिंचाव
- घुटनों व जोड़ों में चुभन या सूखापन
- पिंडलियों में रात का दर्द या ऐंठन
- नसों में झनझनाहट या बिजली-सा दर्द
- चलते समय अस्थिरता या कमजोरी का एहसास

ये दर्द ठंड, खाली पेट, अधिक चलने, कम नींद और सूखे भोजन से और बढ़ जाते हैं।

मुख्य सहायक जड़ी-बूटी:

अश्वगंधा चूर्ण — नसों और मांसपेशियों को बल देता है, वात को शांत करता है।

सेवन विधि:

- रात को
- ½ चम्मच अश्वगंधा चूर्ण
- गुनगुने दूध या पानी के साथ
- 15–20 दिन नियमित सेवन

बाहरी सहारा:

- रोज़ तिल के तेल से हल्की मालिश
- ठंडी हवा और सूखेपन से बचाव
- अचानक भारी काम या झटके से परहेज़

दर्द समझिए, वात संतुलित कीजिए

काचरी पेट के लिए वही करती है, जो सफाई कर्मचारी घर के लिए

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारण:

* काचरी डाइजेशन एंजाइम्स को एक्टिवेट करने में मदद करती है।
* यह गैस, अपच और ब्लोटिंग को कम करने में सहायक मानी जाती है।
* इसके कूलिंग गुण शरीर की अतिरिक्त गर्मी को शांत करने में मदद करते हैं।

आयुर्वेदिक कारण:

* आयुर्वेद में काचरी को दीपक और पाचक माना गया है।
* यह पेट की अग्नि को संतुलित रखती है और भारीपन दूर करती है।

फायदे:

* गैस और अपच में राहत
* पाचन साफ और हल्का
* पेट की गर्मी शांत
* भूख में सुधार
* शरीर में हल्कापन

सावधानियां:

* ज्यादा मात्रा से जलन हो सकती है
* खाली पेट ज्यादा न लें
* अत्यधिक सूखी काचरी नुकसानदेह
* एसिडिटी वालों को सावधानी
* संतुलन जरूरी

कामेच्छा में कमी के कारण और उपाय

पिंकी कुंडू

कामेच्छा में कमी केवल शारीरिक समस्या नहीं है, बल्कि यह मन, जीवनशैली, आहार और आंतरिक धातुओं की स्थिति से गहराई से जुड़ी हुई अवस्था है।

आयुर्वेद में कामेच्छा को जीवन की स्वाभाविक ऊर्जा माना गया है, जो शरीर में ओज, तेज और बल के संतुलन से उत्पन्न होती है। जब यह ऊर्जा क्षीण होने लगती है, तब व्यक्ति भीतर से खालीपन, अरुचि और थकान का अनुभव करने लगता है। आधुनिक जीवन की भागदौड़, तनाव और असंयम ने इस समस्या को और अधिक बढ़ा दिया है।

आयुर्वेद के अनुसार कामेच्छा का मूल आधार शुक्र धातु है। शुक्र केवल वीर्य या यौन द्रव नहीं है, बल्कि यह पूरे शरीर की जीवनी शक्ति का सार है। जब शरीर की अन्य धातुएँ—रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि और मज्जा—संतुलित और पुष्ट होती हैं, तब अंत में शुक्र धातु मजबूत होती है। यदि प्रारंभिक धातुएँ ही कमजोर हों, तो शुक्र स्वाभाविक रूप से दुर्बल हो जाता है, जिसका सीधा प्रभाव कामेच्छा पर पड़ता है।

कामेच्छा में कमी के कारणों में मानसिक कारण सबसे प्रमुख हैं। लगातार चिंता, भय, असफलता का दबाव, पारिवारिक तनाव और भविष्य की अनिश्चितता मन को थका देती है। जब मन अशांत रहता है, तब शरीर की ऊर्जा नीचे की ओर प्रवाहित नहीं हो पाती। अत्यधिक मोबाइल उपयोग, अश्लील विचार, बार-बार उत्तेजना और फिर शारीरिक प्रतिक्रिया का अभाव भी मानसिक थकावट पैदा करता है, जिससे धीरे-धीरे इच्छा समाप्त होने लगती है।

शारीरिक कारणों में गलत आहार प्रमुख भूमिका निभाता है। अत्यधिक तला-भुना, फास्ट फूड, रासायनिक पेय, अधिक चाय-कॉफी, शराब और धूम्रपान शरीर में पित्त और वात को बढ़ाते हैं। इससे शरीर में शुष्कता आती है और शुक्र धातु क्षीण होने लगती है। लंबे समय तक कमजोरी, खून की कमी, मधुमेह, थायरॉयड विकार और मोटापा भी कामेच्छा को दबा देते हैं। बहुत अधिक शारीरिक श्रम या बिल्कुल शारीरिक गतिविधि का अभाव—दोनों ही स्थितियाँ हानिकारक हैं।

कामेच्छा में कमी के लक्षण धीरे-धीरे उभरते हैं। पहले व्यक्ति को यौन विषयों में रुचि कम लगने लगती है। बाद में शारीरिक थकान, उत्साह की कमी और आत्मविश्वास में गिरावट दिखाई देती है। पुरुषों में स्तंभन की कमजोरी, शीघ्रपतन या अधूरा संतोष अनुभव हो सकता है। महिलाओं में शारीरिक शुष्कता, अरुचि, चिड़चिड़ापन और भावनात्मक दूरी बढ़ सकती है। कई बार व्यक्ति बिना किसी स्पष्ट कारण के चिड़चिड़ा और उदास रहने लगता है।

आयुर्वेदिक उपचार का उद्देश्य केवल कामेच्छा बढ़ाना नहीं, बल्कि शरीर और मन के मूल असंतुलन

को ठीक करना है। इसके लिए रसायन औषधियाँ, पौष्टिक आहार और सही दिनचर्या का सहारा लिया जाता है।

अश्वगंधा चूर्ण वात दोष को शांत कर मानसिक तनाव को कम करता है और शुक्र धातु को बल देता है। आधा चम्मच अश्वगंधा चूर्ण एक कप गुनगुने दूध के साथ रात को सोने से पहले लेने से धीरे-धीरे शक्ति और इच्छा दोनों में वृद्धि होती है।

शतावरी चूर्ण विशेष रूप से स्त्रियों के लिए उपयोगी मानी गई है, लेकिन यह पुरुषों में भी शुक्र धातु को पोषण देती है। आधा चम्मच शतावरी चूर्ण एक चम्मच मिश्री के साथ गुनगुने दूध में सुबह लेने से हार्मोन संतुलन सुधरता है और शरीर में शीतलता आती है।

कौंच बीज चूर्ण आयुर्वेद में एक प्रभावी वाजीकरण औषधि है। एक चौथाई चम्मच कौंच बीज चूर्ण एक चम्मच शहद के साथ सुबह खाली पेट लेने से मानसिक उत्साह, आत्मविश्वास और यौन शक्ति में वृद्धि होती है।

सफेद मूसली चूर्ण बल, ओज और सहनशक्ति बढ़ाने के लिए जानी जाती है। आधा चम्मच सफेद मूसली चूर्ण दूध के साथ दिन में एक बार लेने से शरीर की कमजोरी दूर होती है और कामेच्छा स्वाभाविक रूप से लौटने लगती है।

देशी गाय का घी आयुर्वेद में श्रेष्ठ रसायन माना गया है। एक चम्मच घी सुबह खाली पेट या रात को दूध में लेने से शरीर की शुष्कता दूर होती है, वात शांत होता है और धातुएँ पुष्ट होती हैं।

आहार में दूध, घी, खजूर, अंजीर, किशमिश, भीगे हुए बादाम (3–4), मूंग दाल, चावल और मौसमी फल शामिल करना लाभकारी है। बहुत ठंडा, बहुत गरम, अत्यधिक मसालेदार और बाजार का जंक फूड कामेच्छा को कमजोर करता है, इसलिए इनसे दूरी आवश्यक है।

दिनचर्या में समय पर सोना, सूर्योदय के आसपास जागना, हल्का योग, प्राणायाम और कुछ समय मौन या ध्यान मन को स्थिर करता है।

जब मन शांत और शरीर संतुलित होता है, तब कामेच्छा को बाहर से बढ़ाने की आवश्यकता नहीं पड़ती, वह स्वयं भीतर से जागृत हो जाती है। आयुर्वेद इसी प्राकृतिक और स्थायी संतुलन पर विश्वास करता है।

बिना दूध पिए भी हड्डियां मजबूत होंगी!

पिंकी कुंडू

दूध नहीं पीना है? फिर भी चलेगा! आज से ही कैल्शियम की ताकत वाले ये 7 फूड्स खाएं।

सर्दियों में हड्डियों और जोड़ों का दर्द बढ़ जाता है आजकल सिर्फ बुजुर्ग ही नहीं बल्कि जवान भी जोड़ों के दर्द, कमर दर्द और घुटनों के दर्द से परेशान हैं। इसका मुख्य कारण कैल्शियम + विटामिन-D की कमी है! जिन्हें दूध और डेयरी प्रोडक्ट्स बर्दाश्त नहीं होते, उनके लिए ये 7 कैल्शियम से भरपूर फूड्स वरदान हैं!

1. तिल – कैल्शियम सुपरफूड

* 100 ग्राम तिल में लगभग 975 mg कैल्शियम होता है,
* लड्डू, चटनी, सलाद – किसी भी रूप में लें

ठंड के मौसम में रोज़ाना इसका सेवन करने से हड्डियां मजबूत होती हैं

2. हरी पत्तेदार सब्जियां

* पालक • मेथी • केल,
* कैल्शियम + विटामिन-K से भरपूर
* जोड़ों का दर्द कम करता है • हड्डियों को मजबूत बनाता है

3. राजमा और छोले

* 1 कप उबले हुए छोले में 80–100 mg कैल्शियम*
* प्रोटीन • फाइबर • आयरन से भरपूर
* हड्डियों के लिए गर्माहट देने वाली ताकत

4. अंजीर (सूखे)

* 4–5 सूखे अंजीर रोज़ाना
* कैल्शियम की ज़रूरत पूरी करता है

* कब्ज़ कम करता है • ब्लड फ़्लो बढ़ाने में मदद करता है

5. सोया और सोया प्रोडक्ट्स जो लोग दूध नहीं पीते उनके लिए बढ़िया ऑप्शन

* सोयाबीन • टोफ़ू • सोया मिल्क
* 100 ग्राम टोफ़ू ₹350 mg कैल्शियम

6. बादाम दिमाग + हड्डियों के लिए फ़ायदेमंद

* 100 ग्राम बादाम में 260 mg कैल्शियम
* रोज़ाना 5–7 बादाम भिगोकर खाएं

7. काबुली चना (रागी) 100 ग्राम काबुली चने में 3 गिलास दूध जितना कैल्शियम होता है! बच्चे, महिलाओ, बुजुर्गों के लिए बढ़िया

8. ब्रेड • डोसा • खीर • दलिया

निष्कर्ष:

* दूध पिए बिना भी हड्डियां मजबूत हो सकती हैं और जोड़ों को स्वस्थ रखा जा सकता है
* बस सही डाइट चुनें।
* हेल्थ ही सफलता की चाबी है!
* हेल्थ – डायबिटीज-फ्री ज़िंदगी के लिए

रोज़ लहसुन खाना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक

1. लहसुन में एलिसिन एलिसिन वह सक्रिय यौगिक है जो कली काटने/चबाने पर बनता है और एंटीबैक्टीरियल, एंटीऑक्सीडेंट, सूजन-रोधी गुण रखता है।

2. हृदय स्वास्थ्य

* लहसुन से ब्लड प्रेशर कम हो सकता है।
* रक्त-संचार बेहतर हो सकता है

3. कोलेस्ट्रॉल संतुलन लहसुन खराब कोलेस्ट्रॉल (LDL) को कम कर सकता है और अच्छा कोलेस्ट्रॉल (HDL) बढ़ा सकता है, जिससे दिल का जोखिम कम होता है

4. रोग-प्रतिरोधक क्षमता इसमें मौजूद गुण इम्यून सिस्टम को मजबूत कर सकते हैं और सामान्य सर्दी-जुकाम में मदद कर सकते हैं।

5. डिटॉक्स व स्वास्थ्य लहसुन में पाये जाने वाले सल्फर यौगिक लिवर की डिटॉक्स गतिविधि में मदद करते हैं।

6. सावधानियाँ हर किसी पर एक जैसा असर नहीं होता। लहसुन कुछ दवाओं (जैसे खून पतला करने वाली) के साथ प्रतिक्रिया कर सकता है। अधिक कच्चा लहसुन पेट में जलन कर सकता है।

निष्कर्ष (Scientific) रोज़ लहसुन खाना स्वास्थ्य के लिए लाभदायक हो सकता है — लेकिन यह कोई जादुई इलाज नहीं है। इसे स्वस्थ जीवनशैली का हिस्सा मानकर ही उपयोग करें।

रोज़ाना खाने की चीज़ें जो कोलेस्ट्रॉल बढ़ाती हैं – आज ही सावधान रहें!

पिंकी कुंडू

आज की भागदौड़ भरी लाइफस्टाइल में, हम अनजाने में ऐसी चीज़ें खा लेते हैं जो धीरे-धीरे हमारे शरीर में 'बैड कोलेस्ट्रॉल (LDL)' बढ़ाती हैं और दिल की बीमारी, स्ट्रोक और डायबिटीज़ का खतरा बढ़ाती हैं।

याद रखें: कोलेस्ट्रॉल दो तरह का होता है: अच्छा (HDL) और बुरा (LDL)। जब बैड कोलेस्ट्रॉल बढ़ता है, तो खून की नसें पतली हो जाती हैं और सीधे दिल पर असर डालती हैं।

आज से इन खाने की चीज़ों से बचें – और अपने दिल को हेल्दी रखें

1. प्रोसेस्ड मीट, सॉसेज, हॉटडॉग, बेकन, फ्रोजन कबाब – इम्यूनिटी कम करता है, LDL बढ़ाता है

2. जंक फूड, चिप्स, नाचोस, चॉकलेट, कोल्ड ड्रिंक्स, मैदा, तेल और चीनी कोलेस्ट्रॉल बढ़ाते हैं,

3. फ्राइड फूड, भाजी, वड़ा, समोसा, फ्राई चिप्स, मोटापा + दिल के लिए बेहद खतरनाक

4. मीठी चीज़ें, केक, पेस्ट्री, आइसक्रीम, डोनट्स, शुगर बढ़ती है, कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल से बाहर हो जाता है

5. फास्ट फूड, बर्गर, पिज़्ज़ा, फ्रेंच फ्राइज़, डायबिटीज, दिल की बीमारी का खतरा कई गुना बढ़ जाता है

आज ही फैसला लें

* घर का बना, ताज़ा, सात्विक खाना
* सब्ज़ियाँ, फल, दालें
* रेगुलर वॉकिंग, योग, प्राणायाम
* अगर हेल्थ अच्छी है, तो ही ज़िंदगी खुशहाल है!
* हेल्थ ही सफलता की चाबी है!
* शुगर फ्री – आइए भारत को हेल्दी बनाएं!

कुल कुमारी पूजन शाक्ततंत्र का गूढ रहस्य

पिंकी कुंडू

कुल कुमारी पूजन शाक्त – तांत्रिक परम्परा का अत्यन्त गोपनीय और गूढ़ अंग है। यह केवल "बालिका पूजन" नहीं, बल्कि जीवित शक्ति-तत्त्व (Living Shakti Principle) की साक्षात्उपासना है।

1. कुमारी कौन है? (शास्त्रीय दृष्टि) -- शास्त्रों में कुमारी उस कन्या को कहा गया है — जो रजोदर्शन से पूर्व हो जिसमें विकार, वासना और अहं का प्रवेश न हुआ हो। जो अविभाजित शक्ति (अखंड शुद्ध चेतना) की प्रतीक हो।

*देवीभागवत और तंत्रचूड़ामणि में कहा गया है — "या कन्या सा देवी साक्षात्शक्तिरूपा न संशयः।" अर्थात कन्या स्वयं देवी का प्रत्यक्ष रूप है, प्रतीक नहीं।

2. कुल शब्द का रहस्य -- यहाँ कुल का अर्थ केवल वंश नहीं है अपितु कुल का तात्पर्य शक्ति-परम्परा है। तांत्रिक वंश है। मूल प्रकृति अर्थात मूलाधार से सहस्रार तक की शक्ति-श्रृंखला है। इसलिए कुल कुमारी पूजन ही अपनी कुल-शक्ति (Root Shakti) को जीवित रूप में प्रणाम है। समर्पण है।

3. कुल कुमारी पूजन का आध्यात्मिक उद्देश्य --

* कुमारी साक्षात शक्ति का अवतरण है। मूर्ति में शक्ति आह्वान से आती है, लेकिन कुमारी में शक्ति पहले से प्रतिष्ठित होती है। इसलिए शास्त्र कहते हैं — "कुमारीपूजनात् शक्तिः शीघ्रं सन्निधिं गच्छति।"

*कुमारी पूजन को गुरु-कृपा का द्वार तंत्र में माना गया है — गुरु की कृपा, देवी की कृपा और कुमारी की तृप्ति। ये तीनों एक ही सूत्र से जुड़ी हैं। यदि कुमारी अप्रसन्न तो साधना निष्फल। यदि कुमारी प्रसन्न तो साधना सिद्ध समझो।

* कर्म-ग्रन्थि का क्षय-- कुल कुमारी पूजन से— वंशानुगत दोष, पितृ-ऋण, स्त्री-अपमानजन्य दोषयुक्त कर्मों का क्षय होता है। कुलार्णव तंत्र कहता है— "कुमारीतोषणेनैव कुलदोषः प्रणश्यति।"

4. नौ कुमारी और शक्तितत्त्व शास्त्रों में आयु के अनुसार कुमारी को विभिन्न देवियों से जोड़ा गया है –

आयु	नाम	शक्ति-तत्त्व
1 वर्ष	सन्ध्या	आद्य शक्ति
2 वर्ष	सरस्वती	वाणी
3 वर्ष	त्रिधामूर्ति	क्रिया-शक्ति
4 वर्ष	कालिका	संहार
5 वर्ष	सुभगा	सौभाग्य
6 वर्ष	उमा	तप
7 वर्ष	मालिनी	आकर्षण
8 वर्ष	कुब्जिका	कुण्डलिनी
9 वर्ष	कालसन्धि	महामाया

विशेषतः 8 वर्ष की कुब्जिका कुमारी कुण्डलिनी शक्ति की जीवित अभिव्यक्ति मानी गई है।

5. तंत्र में कुमारी पूजन क्यों अनिवार्य? -- क्योंकि तंत्र देह-विरोधी नहीं, तंत्र स्त्री-विरोधी नहीं अपितु तंत्र जीवित चेतना का विज्ञान है। जहाँ स्त्री का सम्मान नहीं, वहाँ तंत्र सिद्ध नहीं होता है। इसी कारण श्रीविद्या में कहा गया— "स्त्री-निन्दा महापातकः।"

6. कुल कुमारी पूजन का फल (शास्त्रीय) -- साधना में शीघ्र प्रगति होती है। मंत्र-जागरण होता है। गुरु-तत्त्व की कृपा बढ़ती है। वंश में शान्ति बनी रहती है। पुत्र-पुत्री दोष का नाश होता है। शक्ति-मार्ग में स्थिरता बढ़ती है। कुल संबंधी दोष का नाश होता है। स्त्री-दोष शमन होता है। काम-विकार का शोधन होता है। कुण्डलिनी की सुरक्षित जागृति होती है। गुरु-कृपा का प्रवेश और तंत्र-मार्ग में स्थिरता बढ़ती है।

7. गूढ़ रहस्य (बहुत महत्त्वपूर्ण) -- कुमारी पूजन वास्तव में बाह्य नहीं, आन्तरिक साधना भी है। कुमारी पूजन तुम्हारी निर्मल चेतना की जागृति है। तुम्हारे अहं-रहित चित्त की चैतन्यता है। तुम्हारी अविकृत शक्ति का अंतर्निहित जागरण है। जब साधक अपने भीतर की "कुमारी-चेतना" का सम्मान करता है, तभी सच्ची सिद्धि घटित होती है।

निष्कर्षतः-- कुल कुमारी पूजन

कोई लोकाचार नहीं, बल्कि शक्ति - विज्ञान की मूल कुंजी है। जहाँ कुमारी पूजित है, वहीं देवी सजीव हैं। कामाख्या कुल कुमारी पूजन कोई सामाजिक कर्म नहीं, यह सृष्टि-तंत्र का प्रवेश-द्वार है। जहाँ कुमारी पूजित है, वहां कोई कर्म बन्धन नहीं बल्कि वही ब्रह्म का मार्ग बन जाता है।

दूसरों के मार्ग में बाधा डालना बहुत बड़ा पाप माना गया है।

पिंकी कुंडू

श्रीमद् भागवत महापुराण में यह स्पष्ट रूप से बताया गया है कि दूसरों के मार्ग में बाधा डालना बहुत बड़ा पाप माना गया है।

भागवत का भावार्थ यह है कि – जो व्यक्ति किसी के जीवन - मार्ग, धर्म - मार्ग, आजीविका, सेवा, भक्ति या सत्य के रास्ते में जानबूझकर रुकावट डालता है, वह स्वयं अपने जीवन की प्रगति भी रोक देता है।

भागवत के अनुसार दूसरों की राह रोकने के दुष्परिणाम

1. पुण्य नष्ट हो जाता है ऐसे व्यक्ति का जमा हुआ पुण्य भी धीरे-धीरे नष्ट हो जाता है। "जो परमार्थ के मार्ग में विघ्न डालता है, उसका अपना भाग्य भी बाधित हो जाता है।" — भागवत का भावार्थ

2. लक्ष्मी और सौभाग्य दूर चले जाते हैं भागवत में बताया गया है कि ईर्ष्या, द्वेष और मार्ग-विघ्न करने वालों के घर में लक्ष्मी स्थायी नहीं रहती।

3. संतान, स्वास्थ्य और सम्मान में बाधा आती है दूसरों को रोकने वाला व्यक्ति अपने परिवार की उन्नति, संतान सुख और समाजिक प्रतिष्ठा में भी गिरावट अनुभव करता है।

4. अगले जन्म में कष्टदायक स्थिति भागवत के अनुसार जो लोग जानबूझकर किसी का भला बिगाड़ते हैं, वे अगले जन्म में निर्बल, आश्रित या अपमानित स्थिति में जन्म लेते हैं।

5. भगवान की कृपा से वंचित हो जाता है कृष्ण स्पष्ट कहते हैं — जो जीवों के दुःख का कारण बनता है, वह मुझे प्रिय नहीं होता।

निष्कर्ष दूसरों का रास्ता रोकना = अपने भाग्य का रास्ता बंद करना

भागवत हमें सिखाता है कि जो दूसरों को आगे बढ़ने देता है, ईश्वर स्वयं उसके मार्ग प्रशस्त कर देते हैं। इसलिए सच्चा धर्म यही है कि हम किसी का रास्ता न रोकें बल्कि जहाँ सम्भव हो, दूसरों की राह आसान बनाएँ।

श्रीमद्भागवत महापुराण में "दूसरों का रास्ता रोकना पाप है"

1. षष्ठ स्कन्ध – अध्याय 1 (अजामिल उपाख्यान – यमदूत और विष्णुदूत संवाद) यहाँ बताया गया है कि – जो व्यक्ति दूसरों को दुःख देता है, उनके धर्म और जीवन-मार्ग में बाधा बनता है, उसे यमलोक में कठोर दण्ड मिलता है। यमदूत बताते हैं कि "जो जीवों के

कष्ट का कारण बनते हैं, वे महान पाप के भागी होते हैं।"

2. तृतीय स्कन्ध – अध्याय 29 (कपिलदेव द्वारा भक्तों का लक्षण) कपिल भगवान कहते हैं जो किसी के भक्ति-मार्ग या जीवन-मार्ग में बाधा नहीं डालता, वही सच्चा भक्त कहलाता है।

* भावार्थ — दूसरों की उन्नति रोकना भक्ति के विपरीत कर्म है।

3. पंचम स्कन्ध – अध्याय 26 (नरक वर्णन) यह अध्याय बहुत स्पष्ट है। यहाँ उन लोगों का नरक बताया गया है — जो दूसरों को कष्ट देते हैं, उनका हक छीनते हैं, रास्ता रोकते हैं, काम-धंधे में बाधा डालते हैं। ऐसे लोगों को "अविची, सूकरमुख नरक में डाला जाता है।

अविची और सूकरमुख हिंदू पौराणिक कथाओं के नरक हैं;

* अविची मुख्य रूप से झूठ बोलने वालों, झूठी गवाही देने वालों के लिए है जहाँ उन्हें बिना राहत के अथाह पीड़ा मिलती है, जबकि

* सूकरमुख उन शासकों के लिए है जो निरपराधों को दंड देते हैं, जहाँ उन्हें कोल्हू में पीसने जैसी यातनाएं दी जाती हैं, जिससे दूसरों को दी गई पीड़ा का कई गुना अधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

अविची नरक

पापः झूठी गवाही देना, व्यापार या दान में धोखा देना, झूठ बोलना।

स्थान और स्वरूपः यह यमलोक के सात प्रमुख नरकों में से पाँचवाँ है, जिसे 'अविचिमान' भी कहते हैं। इसकी भूमि पथरीली और जल के समान दिखती है, जहाँ पीड़ा अंतहीन होती है (इसीलिए 'अविचि' का अर्थ 'बिना लहरों' या 'अथाह' है)।

दंडः झूठे गवाहों को 100 योजन ऊँचे पहाड़ से सिर के बल गिराया जाता है, जहाँ कष्ट बिना रुके जारी रहता है।

सूकरमुख नरक

पापः निरपराध (बेकसूर) लोगों को दंड देने वाले राजा, शासक या अधिकारी।

स्थानः यह भी नरक लोक में स्थित है और यमराज द्वारा शासित है।

दंडः यहाँ पापियों को बड़े-बड़े पत्थरों की चक्की में अनाज की तरह पीसा जाता है, जिससे उन्हें अकल्पनीय पीड़ा होती है। यह दंड इस बात का प्रतीक है कि दूसरों को पीड़ा देने वाले को उससे कहीं अधिक कष्ट मिलता है।

संक्षेप में, अविची 'अथाह पीड़ा' का प्रतीक है, जबकि सूकरमुख 'अन्यायपूर्ण दंड' देने वालों के लिए है, जहाँ उन्हें अपने किए का कई गुना अधिक प्रतिफल मिलता है।।

पूजाप्रसुन एन
अंक ज्योतिष सलाहकार
09599101326, 07303855446

साप्ताहिकी अंकशास्त्र

अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के गुण: 1 से 9 तक

अंक ज्योतिष एक रहस्यमय विज्ञान है, जो अंकों की कंपन शक्ति के माध्यम से व्यक्ति के जीवन और स्वभाव का अध्ययन करता है।

1 से 9 तक प्रत्येक अंक की अपनी विशेष ऊर्जा होती है, जो व्यक्ति के व्यक्तित्व, सोच, व्यवहार, शक्तियों और चुनौतियों को प्रभावित करती है। नीचे अंक 1 से 9 तक के व्यक्तित्व गुणों का विस्तृत वर्णन दिया गया है।

अंक 1 – नेतृत्व का अंक

मुख्य गुणः आत्मनिर्भरता, महत्वाकांक्षा, मौलिकता

अंक 1 सूर्य द्वारा शासित होता है और नेतृत्व व आत्मविश्वास का प्रतीक है। इस अंक के लोग स्वभाव से नेता होते हैं और अपने दम पर आगे बढ़ना पसंद करते हैं।

सकारात्मक गुणः
उत्कृष्ट नेतृत्व क्षमता
नवोन्मेषी और रचनात्मक
साहसी और महत्वाकांक्षी

नकारात्मक पक्षः
अहंकारी या हुक्म चलाने वाले
अधीर और जिद्दी

अंक 2 – कूटनीतिज्ञ/ अंतर्ज्ञान/ सहजबोध

मुख्य गुणः सहयोग, संवेदनशीलता, संतुलन

अंक 2 चंद्रमा द्वारा शासित होता है और भावनाओं व सामंजस्य का प्रतिनिधित्व करता है। ये लोग शांति प्रिय और सहानुभूतिशील होते हैं।

सकारात्मक गुणः
कोमल स्वभाव
सहयोगी और मध्यस्थ
प्रबल अंतर्ज्ञान शक्ति

नकारात्मक पक्षः
अत्यधिक भावुक
आत्मविश्वास की कमी
भावनात्मक निर्भरता

अंक 3 – संप्रेषक (The Communicator)

मुख्य गुणः अभिव्यक्ति, आनंद, रचनात्मकता

अंक 3 गुरु (बृहस्पति) से संबंधित है और ज्ञान व आशावाद का प्रतीक है। ऐसे लोग मिलनसार और अभिव्यक्तिशील होते हैं।

सकारात्मक गुणः
प्रभावशाली बोलने की कला
रचनात्मक और कल्पनाशील
खुशमिज़ाज और आशावादी

नकारात्मक पक्षः
एकाग्रता की कमी
बढ़ा-चढ़ाकर बोलने की प्रवृत्ति
अनुशासन का अभाव

अंक 4 – व्यवस्थापक (The Organizer)

मुख्य गुणः स्थिरता, अनुशासन, परिश्रम

अंक 4 राहु से संबंधित है और व्यवस्था व व्यावहारिकता को दर्शाता है। ये लोग नियमप्रिय और मेहनती होते हैं।

सकारात्मक गुणः
जिम्मेदारी की प्रबल भावना
व्यावहारिक और यथार्थवादी
परिश्रमी और अनुशासित

नकारात्मक पक्षः
विचारों में कठोरता
परिवर्तन से डर
नकारात्मक सोच
बड़ा जोखिम लेने वाला

अंक 5 – स्वतंत्रता प्रेमी (The Freedom Lover)

मुख्य गुणः अनुकूलनशीलता, जिज्ञासा, बहुमुखी प्रतिभा

अंक 5 बुध ग्रह से जुड़ा है और परिवर्तन व गति का प्रतीक है। ये लोग आज़ादी और विविधता पसंद करते हैं।

सकारात्मक गुणः
तीव्र बुद्धि
बहुमुखी और लचीले
कुशल संचारक

नकारात्मक पक्षः
चंचल स्वभाव
जल्दबाज़ी
प्रतिबद्धता की कमी

अंक 6 – पालनकर्ता (The Caregiver)

मुख्य गुणः जिम्मेदारी, प्रेम, सामंजस्य

अंक 6 शुक्र द्वारा शासित है और प्रेम, सौंदर्य व परिवार का प्रतीक है। ये लोग अत्यंत स्नेही और जिम्मेदार होते हैं।

सकारात्मक गुणः
प्रेमपूर्ण और रक्षक स्वभाव
कला और सौंदर्य की समझ
निष्ठावान और जिम्मेदार

नकारात्मक पक्षः
अधिक अधिकार जताने वाले
अत्यधिक त्याग
दूसरों के जीवन में दखल

अंक 7 – चिंतक (The Thinker)

मुख्य गुणः आध्यात्मिकता, विश्लेषण, ज्ञान

अंक 7 केतु से संबंधित है और गहन चिंतन व आध्यात्मिकता का प्रतीक है। ये लोग आत्ममंथन करने वाले होते हैं।

सकारात्मक गुणः
गहरे विचारक
आध्यात्मिक प्रवृत्ति
विश्लेषणात्मक और अंतर्ज्ञानी

नकारात्मक पक्षः
अंतर्मुखी स्वभाव
भौतिक जीवन से दूरी
भावनाओं को व्यक्त करने में कठिनाई

अंक 8 – शक्तिशाली (The Powerhouse)

मुख्य गुणः अधिकार, अनुशासन, सफलता

अंक 8 शनि द्वारा शासित होता है और कर्म व भौतिक सफलता का प्रतीक है। ये लोग दृढ़ निश्चयी होते हैं।

सकारात्मक गुणः
मजबूत इच्छाशक्ति
प्रबंधन क्षमता
आर्थिक अनुशासन

नकारात्मक पक्षः
कठोर व्यवहार
जीवन में विलंब व संघर्ष
कार्य और निजी जीवन में असंतुलन

अंक 9 – मानवतावादी (The Humanitarian)

मुख्य गुणः करुणा, सेवा, पूर्णता

अंक 9 मंगल से संबंधित है और त्याग व साहस का प्रतीक है। ये लोग निस्वार्थ और आदर्शवादी होते हैं।

सकारात्मक गुणः
साहसी और ऊर्जावान
दयालु और सहानुभूतिशील
प्रभावशाली व्यक्तित्व

नकारात्मक पक्षः
तीव्र भावनाएं
शीघ्र क्रोध
जरूरत से ज्यादा देने की प्रवृत्ति

निष्कर्ष

अंक 1 से 9 तक प्रत्येक अंक एक विशिष्ट व्यक्तित्व ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है। जहाँ सकारात्मक गुण व्यक्ति की प्रतिभा को दर्शाते हैं, वहीं नकारात्मक पक्ष सुधार की दिशा बताते हैं। अंक ज्योतिष के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन, संबंधों और करियर को बेहतर ढंग से समझ सकता है।

जगत को तीर्थरूप बनाने वाले संत

पिंकी कुंडू

दो संन्यासी युवक यात्रा करते-करते किसी गाँव में पहुँचे। लोगों से पूछाः ₹हमें एक रात्रि यहाँ रहना है। किसी पवित्र परिवार का घर दिखाओ।₹ लोगों ने बताया कि ₹वह एक चाचा का घर है। साधु-महात्माओं का आदर सत्कार करते हैं। 'अखिल ब्रह्माण्डमां एक तुं श्रीहरि' का पाठ उनका पक्का हो गया है। वहाँ आपको ठीक रहेगा।₹ उन्होंने उन सज्जन चाचा का पता बताया।

दोनों संन्यासी वहाँ गये। चाचा ने प्रेम से सत्कार किया, भोजन कराया और रात्रि-विश्राम के लिए बिछौना दिया। रात्रि को कथा-वार्ता के दौरान एक संन्यासी ने प्रश्न कियाःक

"आपने कितने तीर्थों में स्नान किया है ? कितनी तीर्थयात्राएँ की हैं। ? हमने तो चारों धाम की तीन-तीन बार यात्रा की है।"

चाचा ने कहाः ₹मैंने एक भी तीर्थ का दर्शन या स्नान नहीं किया है। यहीं रहकर भगवान का भजन करता हूँ और आप जैसे भगवत्स्वरूप अतिथि पधारते हैं तो सेवा करने का मौका पा लेता हूँ। अभी तक कहीं भी नहीं गया हूँ।"

दोनों संन्यासी आपस में विचार करने लगेः ₹ऐसे व्यक्ति का अन्न खाया ! अब यहाँ से चले जायें तो रात्रि कहाँ बितायेंगे ?यकायक चले जायें तो उसको दुःख भी होगा। चलो, कैसे भी करके इस विचित्र वृद्ध के यहाँ रात्रि बिता दें। जिसने एक भी तीर्थ नहीं किया उसका अन्न खा लिया, हाय !₹ आदि-आदि। इस प्रकार विचारते हुए वे सोने लगे लेकिन नींद कैसे आवे ! करवटें बदलते-बदलते मध्यरात्रि हुई। इतने में द्वार से बाहर देखा तो गौ के गोबर से लीपे हुए बरामदे में एक काली गाय आयी.... फिर दूसरी आयी.... तीसरी, चौथी.... पाँचवीं... ऐसा करते-करते कई गायें आयीं। हरेक गाय वहाँ आती, बरामदे में लोटपोट होती और सफेद हो जाती तब अदृश्य हो जाती। ऐसी कितनी ही काली गायें आयीं और सफेद होकर विदा हो गयीं। दोनों संन्यासी फटी आँखों से देखते ही रह गये। वे दंग रह गये कि यह क्या कौतुक हो रहा है !

आखिरी गाय जाने की तैयारी में थी तो उन्होंने उसे प्रणाम करके पूछाः

"हे गौ माता ! आप कौन हो और यहाँ कैसे आना हुआ ? यहाँ आकर आप श्वेतवर्ण हो जाती हो इसमें क्या रहस्य है ? कृपा करके आपका परिचय दें।"

गाय बोलने लगीः ₹हम गायों के रूप में सब तीर्थ हैं। लोग हममें गंगे हर... यमुने हर.... नर्मदे हर... आदि बोलकर गोता लगाते हैं। हममें अपने पाप धोकर पुण्यात्मा होकर जाते हैं और हम उनके पापों की कालिमा मिटाने के लिए द्वन्द्व-मोह से विनिर्मुक्त आत्मज्ञानी, आत्मा-परमात्मा में विश्रान्ति पाये हुए सत्पुरूषों के आँगन में आकर पवित्र हो जाते हैं। हमारा काला बदन पुनः श्वेत हो जाता है। तुम लोग जिनको अशिक्षित, गँवार, बूढ़ा समझते हो वे बुजुर्ग तो जहाँ से तमाम विद्याएँ निकलती हैं उस आत्मदेव में विश्रान्ति पाये हुए आत्मवेत्ता संत हैं।"

तीर्थी कुर्वन्ति जगतीं.... ऐसे आत्मारामी ब्रह्मवेत्ता महापुरुष जगत को तीर्थरूप बना देते हैं। अपनी दृष्टि से, संकल्प से, संग से जन-साधारण को उन्नत कर देते हैं। ऐसे पुरुष जहाँ ठहरते हैं, उस जगह को भी तीर्थ बना देते हैं। जैन धर्म ने ऐसे पुरुषों को तीर्थंकर (तीर्थ बनाने वाले) कहा है।

पृथ्वी तत्व का महत्व

पिंकी कुंडू

मानव शरीर में तलवों (पैरों के नीचे के भाग) का सीधा और गहरा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। तलवे पृथ्वी के सीधे संपर्क में रहते हैं।

लेकिन हमने जूते चप्पल पहनकर और घरों में पक्की फर्श से चलते अपने आपको पूरी तरह भूमि से संपर्क को तोड़ लिया है। इससे पृथ्वी से मिलने वाली प्राकृतिक ऊर्जा का प्रवाह बाधित हो गया है।

जब तलवे धरती से जुड़े नहीं रहते, तो इसका प्रभाव केवल पैरों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि धीरे-धीरे मस्तिष्क, हार्मोनल संतुलन और सम्पूर्ण जीवनचक्र पर पड़ता है।

इसी कारण आज देखा जा रहा है कि मानव की कद-काठी और शारीरिक शक्ति कम होती जा रही है।

लड़कियों में मासिक धर्म बहुत कम उम्र (9–10 वर्ष) में प्रारम्भ हो रहा है।

संतान उत्पति में समस्याएं, पुरुष का पौरुष और स्त्री का स्त्रीत्व की ऊर्जा भी कम हो रही है इसलिए दोनों का स्वभाव बदलने लगा है।

जीवनचक्र अस्वाभाविक रूप से छोटा और असंतुलित होता जा रहा है

आज का मनुष्य दिन में एक घंटा भी मिट्टी पर नंगे पाँव नहीं चलता। यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन प्रातःकाल धरती या मिट्टी पर नंगे पाँव चलना प्रारम्भ करे, तो केवल एक महीने में स्पष्ट अन्तर अनुभव किया जा सकता है—

मानसिक शांति, स्थिरता और ऊर्जा में वृद्धि।

तलवों की संवेदनशीलता इतनी अधिक होती है कि यदि उन पर किसी वस्तु का लेप किया जाए, तो उसका प्रभाव तुरन्त मस्तिष्क पर पड़ता है। यही कारण है कि तंत्र, आयुर्वेद और योग परम्पराओं में तलवों को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है।

हमारे शरीर को मिट्टी से बना हुआ कहा गया है और यदि हम मिट्टी से ही अलग हो गए तो हमारे शरीर में बहुत सी कमियां हो जाएगी। मिट्टी में खेलने से बलवान बना जाता है कमजोर नहीं।

हॉकी इंडिया लीग 2025–26 की शुरुआत, महिला टूर्नामेंट से हुआ आगाज़; लाइव प्रसारण की पुष्टि

संगिनी घोष विशेष संवाददाता परिवहन विशेष

हॉकी इंडिया लीग (HIL) 2025–26 की आज आधिकारिक शुरुआत हो गई है, जिससे भारत की प्रमुख फ्रेंचाइज़ी हॉकी प्रतियोगिता में एक और रोमांचक अध्याय जुड़ गया है। इस सत्र की शुरुआत महिला हॉकी इंडिया लीग से हुई है, जो 28 दिसंबर 2025 से रांची में खेली जा रही है और 10 जनवरी 2026 तक चलेगी। महिला प्रतियोगिता में चार टीमें भाग ले रही हैं, जो राउंड-रॉबिन प्रारूप में मैच खेलेंगी, जिसके बाद शीर्ष दो टीमें फाइनल में आमने-सामने होंगी।

हॉकी इंडिया लीग की शुरुआत वर्ष 2013 में भारतीय हॉकी की घरेलू संरचना को मजबूत करने और भारतीय खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों के साथ खेलने का अवसर देने के उद्देश्य से की गई थी। यह लीग देश में हॉकी की लोकप्रियता बढ़ाने और युवा खिलाड़ियों को आगे बढ़ने का मंच देने में महत्वपूर्ण रही है। कुछ वर्षों के अंतराल के बाद लीग की वापसी हुई है और इस बार इसे नए उत्साह, बेहतर आयोजन और व्यापक प्रसारण समर्थन के साथ दोबारा शुरू किया गया है, जिससे यह सत्र खास बन गया है।

2025–26 सत्र के मौजूदा अपडेट्स के अनुसार, सभी मैचों का सीधा प्रसारण सोनी स्पोर्ट्स नेटवर्क और डीडी स्पोर्ट्स पर किया जा रहा है, जिससे देशभर के दर्शक आसानी से मुकाबले देख सकते हैं। इसके अलावा, आधिकारिक डिजिटल प्लेटफॉर्म और ओटीटी सेवाओं पर लाइव स्ट्रीमिंग की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि दर्शक मोबाइल, टैबलेट और लैपटॉप पर भी मैच देख सकें।

महिला टूर्नामेंट के बाद पुरुष हॉकी इंडिया लीग की शुरुआत जनवरी 2026 के पहले सप्ताह में होने वाली है। इस सत्र में भारतीय राष्ट्रीय टीम के प्रमुख खिलाड़ी, उभरती युवा प्रतिभाएँ और अंतरराष्ट्रीय सितारे हिस्सा ले रहे हैं। बढ़ी हुई मीडिया कवरेज और मजबूत टीम संयोजनों के साथ, हॉकी इंडिया लीग 2025–26 से भारतीय हॉकी को नई ऊंचाइयों पर ले जाने और आने वाले अंतरराष्ट्रीय टूर्नामेंटों के लिए खिलाड़ियों को तैयार करने की उम्मीद की जा रही है।

दिल्ली फायर सर्विस एवं जोन 4 सोलुसन ने आग से बचने की मुहिम चलाई हुई है।

नवदीप सिंह

सर्दियों में ठंड से बचने के लिए आग, अंगीठी, हीटर और बिजली के उपकरणों का ज़्यादा इस्तेमाल होता है। थोड़ी-सी लापरवाही बड़ी आग और जान-माल के नुकसान का कारण बन सकती है।

आपकी सुरक्षा सबसे ज़रूरी है।

कृपया इन बातों का ध्यान रखें:

- कमरे के अंदर अंगीठी या खुली आग जलाकर न सोएँ , कई हादसा हो चुका है ।
- हीटर, रॉड या सिगड़ी के पास कपड़े न सुखाएँ
- बिजली के टूटे तार, ढीले प्लग या ओवरलोड सॉकेट का इस्तेमाल न करें
- सोने से पहले आग और बिजली के सभी उपकरण बंद कर दें
- गैस सिलेंडर और चूल्हे को सुरक्षित दूरी पर रखें
- एक ही कमरे में बहुत ज़्यादा लोग और आग का इस्तेमाल खतरनाक हो सकता है
- आग लगने पर तुरंत शोर मचाएँ और 101 पर कॉल करें

याद रखें: थोड़ी-सी सावधानी आपको, आपके साथियों और परिवार को सुरक्षित रख सकती है।

वात्सल्य ग्राम में त्रिदिवसीय वात्सल्य महोत्सव 30 दिसंबर से 01 जनवरी तक

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित वात्सल्य ग्राम में पद्म विभूषण, वात्सल्य मूर्ति ₹दीदी मां₹ साध्वी ऋतंभरा का त्रिदिवसीय अवतरण दिवस (वात्सल्य महोत्सव) 30 दिसंबर 2025 से 01 जनवरी 2026 पर्यन्त विभिन्न धार्मिक व सांस्कृतिक कार्यक्रमों के मध्य बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ आयोजित किया गया है।

जानकारी देते हुए मीडिया प्रभारी उमा शंकर राही ने बताया है कि महोत्सव के अंतर्गत 30 दिसंबर को सायं 05:30 बजे से मीरा माधव रिजॉर्ट के आनंद उत्सव हॉल में राष्ट्रीय कवि सम्मेलन आयोजित होगा।जिसमें प्रख्यात कवि गजेन्द्र सोलंकी, सुरेन्द्र सार्थक, मनवीर ₹मधुर₹, यशपाल ₹यश₹, वेदप्रकाश ₹वेद₹ एवं डॉ. रुचि चतुर्वेदी आदि काव्य पाठ करेंगे।

31 दिसंबर को सायं 05 बजे से समविद् गुरुकुलम्में संस्थापक दिवस के अवसर पर पद्म विभूषण, वात्सल्य मूर्ति ₹दीदी मां₹ साध्वी ऋतंभरा के पावन सानिध्य में समविद् गुरुकुलम्गर्ल्स सैनिक स्कूल द्वारा ₹सतयुग से कलयुग तक अनंत शक्ति-नारी का अमर उत्सव₹ की प्रस्तुति दी जाएगी।साथ ही नेत्र परीक्षण शिविर व स्वैच्छिक रक्तदान शिविर भी लगाए जाएंगे।जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में उत्तर प्रदेश के माननीय उप-मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य व विशिष्ट अतिथि कैबिनेट मंत्री चौधरी लक्ष्मी नारायण होंगे।

उन्होंने बताया कि 01 जनवरी 2026 को समविद् गुरुकुलम्गर्ल्स सैनिक स्कूल में प्रातः 10 बजे से वैशिष्ट्यम् स्कूल एवं ब्रह्मरतन विद्या मंदिर के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी जाएगी। तत्पश्चात सरस भजन संध्या आयोजित होगी।जिसमें प्रख्यात भजन गायक किशन दास (किशन भैया) अपने श्रीमुख से ठाकुर श्रीराधा कृष्ण की महिमा से ओत-प्रोत भजनों की प्रस्तुति देंगे।कार्यक्रम के अंतर्गत स्तोत्र ₹मेरे मनोभाव₹ वीडियो का विमोचन भी किया जाएगा।महोत्सव का समापन पद्म विभूषण दीदी-मां साध्वी ऋतंभरा की वात्सल्य वाणी (आशीर्वचन) के साथ होगा।

किसान इंटर कॉलेज के 77 वें स्थापना दिवस समारोह में सम्मानित हुए "यूपी रत्न" डॉ. गोपाल चतुर्वेदी

परिवहन विशेष न्यूज

वृन्दावन/मथुरा। सौंख खेड़ा स्थित किसान इंटर कॉलेज का 77 वां स्थापना दिवस समारोह बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम के साथ मनाया गया।जिसके अंतर्गत नगर के प्रमुख अध्यात्मविद्, साहित्यकार व समाजसेवी ₹यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी का उनके द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में की गई अविस्मरणीय सेवाओं के लिए सम्मान किया गया।उन्हें यह सम्मान कॉलेज के प्रबंधक एवं वरिष्ठ पत्रकार विनोद कुमार चूड़ामणि, एडवोकेट ने ठाकुरश्री बांके बिहारी महाराज का चित्रपट, ₹मथुरा का इतिहास₹ ग्रन्थ, अंगवस्त्र एवं ठाकुरजी का पटुका-प्रसादी-माला आदि भेंट कर प्रदान किया।साथ ही प्रभु से उनके उज्ज्वल, स्वस्थ्य, सुखद व समृद्ध जीवन की मंगल कामना भी की।

इस अवसर पर बलदेव क्षेत्र के विधायक पूरन प्रकाश, पद्मश्री डॉक्टर सरोज चूड़ामणि, प्रख्यात हृदय रोग विशेषज्ञ डॉक्टर श्रीधर द्विवेदी (नेशनल हार्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली) किसान इंटर कॉलेज के सचिव योगेंद्र चूड़ामणि, कॉलेज के प्रधानाचार्य चन्द्रभान यादव, पूर्व ब्लॉक प्रमुख श्रीमती पुष्पा प्रकाश एवं युवा साहित्यकार डॉ. राधाकांत शर्मा आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।संचालन देवेन्द्र परिहार ने किया।

गीतांजलि काव्य मंच द्वारा जन्मशताब्दी पर "यादें नीरज की" विशेषांक का भव्य लोकार्पण

डॉ. शंभु पंवार

नई दिल्ली। राजधानी की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था गीतांजलि काव्य प्रसार मंच एवं नोएडा इकाई द्वारा पद्मभूषण गीत ऋषि गोपालदास 'नीरज' जी की जन्मशताब्दी वर्ष–२०२५ पर मंच की ई-पत्रिका "नीरज कुंज" (प्रिंट अंक) के विशेषांक "यादें नीरज की" का नोएडा में लोकार्पण एवं रचनाकार सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

लोकार्पण समारोह का शुभारंभ मां सरस्वती की मधुर वंदना से हुआ।समारोह के मुख्य अतिथि वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक, पत्रकार एवं विचारक डॉ.शंभू पवार ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज का यह क्षण केवल 'यादें नीरज की' विशेषांक के लोकार्पण का नहीं है,यह पद्मभूषण गीतऋषि गोपालदास 'नीरज' जी को हृदय से स्मरण करने का एक भावपूर्ण अनुष्ठान है।उन्होंने कहा नीरज जी का साहित्य हमें यह सिखाता है कि सच्ची कविता वही है, जो जीवन बन जाए और नीरज जी उसी जीवन के अमर गीतकार थे।डॉ.पंवार ने मंच के संस्थापक नीरज अरोड़ा जी का स्मरण करते हुवे कहा कि वे भी साहित्य की अनमोल शख्सियत थे। उन्होंने मंच की स्थापना को लेकर जो सोच ओर विचार थे उनको मंच की अध्यक्ष एवं उनकी धर्मपत्नी सुप्रसिद्ध साहित्यकार लेखिका डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा जी साकार कर रही है।मंच ने कम समय में उल्लेखनीय उपलब्धियां हासिल की ओर मंच का नाम अंतरराष्ट्रीय पटल पर सुशोभित किया है।'यादें नीरज की' जैसे अनमोल साहित्यिक प्रयास के लिए मैं गीतांजलि काव्य प्रसार मंच की अध्यक्ष डॉ. गीतांजलि नीरज अरोड़ा जी एवं पूरी टीम को ढेर सारी शुभकामनाएं। कार्यक्रम के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.प्रेम भारद्वाज ज्ञानभिक्षु ने कहा कि गीतऋषि पद्मभूषण गोपालदास 'नीरज' जी वास्तव में एक कालजयी व्यक्ति थे।वे केवल साहित्य तक सीमित नहीं रहे,उन्होंने फिल्मी जगत को भी ऐसे अमर गीत दिए जो आज भी जन-जन की जुबा पर है। मंच की अध्यक्ष डॉ.अरोड़ा ने मंच की उपलब्धियों की चर्चा करते हुवे,मंच के सदस्यों एवं जतिन आयुषी,अनुराग-भाविका द्वारा किए जारहे सहयोग की सराहना की।नोएडा इकाई की अध्यक्ष

एवं कार्यक्रम संयोजक श्रीमती रश्मि भटनागर ने स्वागत उद्बोधन दिया। इसके पश्चात कार्यक्रम में मंचासिन विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. पुष्पा जोशी, हिल्स की ममता सोनी, डॉ.वीणा मित्तल,डॉ. कल्पना पाण्डेय, डॉ. मनोज कामदेव, देवेंद्र प्रकाश शर्मा, कृष्णा दामिनी,संध्या सेठ ने भी विचार व्यक्त किए। तत्पश्चात अतिथियों ने मंच की ई पत्रिका (प्रिंट अंक) के गीत ऋषि गोपाल दास नीरज पर केंद्रित विशेषांक "यादें नीरज की" का लोकार्पण किया और रचनाकारों को मोती माला ओर स्मृतिचिन्ह प्रदान कर सम्मानित किया।इस अवसर पर श्रीमती रश्मि भटनागर,डॉ.वीणा मित्तल,डॉ.मनोज कामदेव,सरिता विजय शर्मा, संध्या सेठ,अपर्णा भटनागर, निशा सक्सेना,स्वाति पूजा,जयवीर सिंह अत्री,रमा गुरु,अर्चना सिंह,अपर्णा गर्ग, जगदीश मीणा,नीलम गुप्ता, संगीता वर्मा,दीपिका वाल्दिया, हिमांशु शुक्ला,कृष्ण दामिनी, रजनी बाला,अंजू अग्रवाल,शशि किरण श्रीवास्तव,सांत्वना सिंह, सोनिया सरीन,अर्चना शर्मा,सुकृति श्रीवास्तव ने एक से बढ़कर एक शानदार काव्य प्रस्तुति दे कर समारोह को काव्य के रंगों से सराबोर कर दिया।मनमोहक संचालन सरिता शर्मा ओर हिमांशु शुक्ला ने किया।अंत में पत्रिका के सचिव देवेंद्र प्रकाश शर्मा ने आभार व्यक्त किया।

आधुनिक युग में आध्यात्मिकता का पुनराविष्कार: संभवतः आस्था ,पहचान और करियर के बीच बदलता भारतीय समाज- एक समग्र अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण

भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 प्रत्येक नागरिक को धर्म मानने ,आचरण करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है,तो कर्तव्य ,विवेक,उत्तरदायित्व और जागरूकता भी आध्यात्मिकता तप,त्याग, मौन और दीर्घ साधना से जुड़ी मानी जाती थी,आज मंच, माइक, कैमरा सोशल मीडिया और विशाल जनसमूहों के बीच दिखाई देती है –एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पिछले कुछ वर्षों में भारतीय समाज ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में यह स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है कि आध्यात्मिकता का स्वरूप तीव्र गति से बदल रहा है। एक समय था जब आध्यात्मिकता तप, त्याग, मौन और दीर्घ साधना से जुड़ी मानी जाती थी, वहीं आज आध्यात्मिकता मंच, माइक , कैमरा, सोशल मीडिया और विशाल जनसमूहों के बीच दिखाई देती है। कथावाचक क़े रूप में बाबाजी कहलाने का चलन केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक परिवर्तन का संकेत भी है। यह परिवर्तन न तो पूर्णतः सकारात्मक है और न ही पूर्णतः नकारात्मक,यह आधुनिक समाज की जटिलताओं का प्रतिबिंब है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं की गोंदिया महाराष्ट्र मानता हूं कि यह किसी व्यक्ति,संप्रदाय या कथावाचक पर टिप्पणी या व्यंग्य नहीं है,बल्कि समकालीन आध्यात्मिक प्रवृत्तियों की गहरी पड़ताल है।भारतीय संविधान का अनुच्छेद 25 प्रत्येक नागरिक को धर्म मानने,आचरण करने और प्रचार करने की स्वतंत्रता देता है। इसी संवैधानिक अधिकार के अंतर्गत कथावाचक,बाबा और आध्यात्मिक नेतृत्व का उभार संभव है। कोई भी व्यक्ति आध्यात्मिक मार्ग अपनाए, कथा कहे या अनुयायी बनाए,संविधान उसे रोकता नहीं।लेकिन लोकतंत्र केवल अधिकारों का नहीं, बल्कि विवेक,उत्तरदायित्व और जागरूक नागरिकता का भी नाम है।तेज़ी से बदलती अर्थव्यवस्था, प्रतिस्पर्धी जीवनशैली और सामाजिक असुरक्षा के बीच भारतीय नागरिक मानसिक शांति और जीवन अर्थ की तलाश में है। यह तलाश लोकतंत्र के भीतर हो रही है,जहाँ राज्य भौतिक आवश्यकताओं पर केंद्रित है,वहीं नागरिक आध्यात्मिक संतुलन खोज रहा है।यही कारण है कि आध्यात्मिक मंच आज भीड़ खींचते हैं। यह स्थिति लोकतंत्र की विफलता नहीं,बल्कि उसकी मानवीय सीमा को भी दर्शाती है।पारंपरिक भारतीय संस्कृति में कथावाचक समाज का नैतिक शिक्षक होता था,जो रामायण, भागवत और लोककथाओं के माध्यम से मूल्यों का संचार करता था। आज कथावाचक की भूमिका बदल रही है। वह अब केवल संस्कृति का वाहक नहीं,बल्कि एक सार्वजनिक व्यक्तित्व, प्रभावशाली वक्ता और कभी-कभी सामाजिक नेता भी बन जाता है। यह परिवर्तन संस्कृति के स्थिर न रहने, बल्कि समय के साथ रूप बदलने का प्रमाण है।संवैधानिक दृष्टि से आधुनिक युग में यह स्पष्ट दिखता है कि कुछ लोग आध्यात्मिकता को जीवन- समर्पण मानते हैं,जबकि कुछ स्पष्ट रूप से नहीं परंतु कहीं ना कहीं संभवतःछिपे रूप से इसे पेशे और करियर के रूप में अपनाते हैं। संविधान इस अंतर पर निर्णय नहीं देता।लोकतंत्र में यह नागरिक कीस्वतंत्रता है। लेकिन लोकतांत्रिक समाज यह अपेक्षा करता है कि आस्था का उपयोग भय,अंधविश्वास या विभाजन के लिए न हो, बल्कि नैतिकता और सामाजिक सद्भाव के लिए हो।

साथियों बात अगर हम आध्यात्मिकता की ओर बढ़ता आकर्षण:एक वैश्विक सामाजिक प्रवृत्ति इसको समझने की करें तो,आधुनिक युग में व्यक्ति भौतिक प्रगति के शिखर पर पहुँचने के बावजूद मानसिक अस्थिरता, अकेलापन अवसाद और अस्तित्वगत संकट से जूझ रहा है।भारत ही नहीं, अमेरिका, यूरोप, जापान और दक्षिण- पूर्व एशिया जैसे क्षेत्रों में भी योग, ध्यान, माइंडफुलनेस और आध्यात्मिक प्रवचनों की लोकप्रियता तेजी से बढ़ी है। यह आकर्षण बताता है कि आधुनिक जीवनशैली मनुष्य की आंतरिक आवश्यकताओं को पूर्ण रूप सेसंतुष्ट नहीं कर पा रही। ऐसे में आध्यात्मिकता एक मानसिक शरणस्थली के रूप में उभरती है।

साथियों बात अगर हम कथावाचक से बाबाजी तक: पहचान निर्माण की नई प्रक्रिया इसको समझने की करें तो, पारंपरिक भारतीय समाज में कथावाचक होना एक विद्या- साध्य कार्य था, जिसमें शास्त्रों का गहन अध्ययन,गुरु-शिष्य परंपरा और वर्षों की तपस्या आवश्यक मानी जाती थी। किंतु आज कथावाचन कई बार व्यक्तिगत ब्रांडिंग का माध्यम बनता दिख रहा है। कथा कहना अब केवल धार्मिक कर्म नहीं, बल्कि पहचान निर्माण का साधन भी है। आधुनिक संचार माध्यमों ने इस प्रक्रिया को और तीव्र कर दिया है,जहाँ कुछ ही वर्षों में कोई व्यक्ति लाखों अनुयायियों तक पहुँच सकता है।आध्यात्मिक समर्पण या करियर विकल्प:रेखा कहाँ खिंचती है ?-वर्तमान समय की एक बड़ी सच्चाई यह है कि आध्यात्मिकता में प्रवेश करने वालों के उद्देश्य समान नहीं हैं।कुछ लोग वास्तव में जीवन को ईश्वर-समर्पित करना चाहते हैं,तो कुछ इसे एक सुरक्षित सम्मानजनक और आर्थिक रूप से स्थिर करियर विकल्प के रूप में देखते हैं। यह द्वंद्व केवल भारत तक सीमित नहीं है; पश्चिमी देशों में भी स्पिरिचुअल कोच, लाइफ गुरु और हीलिंग एक्सपर्ट जैसे पेशे उभर चुके हैं। प्रश्न यह नहीं कि आध्यात्मिकता में करियर गलत है या सही, बल्कि यह है कि क्या इसका मूल उद्देश्य आत्मोन्नति से हटकर बाह्य सफलता बनता जा रहा है ?

साथियों बात अगर हम अनसुने नाम, जानी-पहचानी कथाएँ: आस्था का बदलता भूगोल इसको समझने की करें तो, आज अनेक ऐसे कथावाचकों

और बाबाओं के नाम सामने आ रहे हैं, जिनका उल्लेख न तो पारंपरिक धर्मग्रंथों में मिलता है और न ही ऐतिहासिक धार्मिक परंपराओं में। फिर भी उनकी कथाओं में श्रोता उमड़ रहे हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि आधुनिक समाज में आस्था का आधार केवल शास्त्र या परंपरा नहीं,बल्कि प्रस्तुति, भाषा, भावनात्मक जुड़ाव और व्यक्तिगत करिश्मा भी बन गया है।यह एक नई प्रकारकी भावनात्मक आध्यात्मिकता का उदय है।यह विचार उद्देश्यहीन आलोचना नहीं, समकालीन यथार्थ की स्वीकृति-यह आवश्यक है कि इस विषय पर चर्चा करते समय हम किसी भी कथावाचक या बाबाजी के चरित्र पर प्रश्नचिह्न न लगाएँ। समाज में हर व्यक्ति अपने अनुभव, परिस्थिति और समझ के अनुसार मार्ग चुनता है। यह लेख किसी पर व्यंग्य या टिप्पणी नहीं करता,बल्कि उस यथार्थ को स्वीकार करता है जिसे हम रोज़ देख रहे हैं। आलोचना से अधिक आवश्यक है आत्ममंथन,कि हम किस प्रकार की आध्यात्मिकता की ओर बढ़ रहे हैं।पचास वर्ष पहले और आज: आस्था का केंद्र कैसे बदला-लगभग पाँच दशक पहले तक भारतीय घरों में भगवान की पूजा का केंद्र मूर्तियाँ, ग्रंथ और परंपरागत रीति-रिवाज हुआ करते थे। राम, कृष्ण, शिव, दुर्गा और हनुमान जैसे देवता जीवन के नैतिक मार्गदर्शक माने जाते थे। आज भी उनकी पूजा होती है, किंतु उनके साथ-साथ जीवित बाबाओं की भूमिका कहीं अधिक प्रत्यक्ष और प्रभावशाली हो गई है। देवता अब चित्रों और मंदिरों तक सीमित होते जा रहे हैं, जबकि बाबाजी मंच पर संवाद करते हैं।जीवित बाबाजी का आकर्षण:संवाद, समाधान और तात्कालिकता-आधुनिक मनुष्य तत्काल समाधान चाहता है। जीवित बाबाजी प्रश्नों का उत्तर देते हैं, समस्याओं पर टिप्पणी करते हैं और व्यक्तिगत संबंध का अनुभव कराते हैं। यह अनुभव चित्रों या ग्रंथों से संभव नहीं हो पाता। यही कारण है कि वर्तमान बाबाओं के प्रति आकर्षण बढ़ा है। यह केवल आस्था नहीं, बल्कि संवाद की आवश्यकता भी है।

साथियों बात अगर हम मीडिया और सोशल मीडिया: आध्यात्मिकता का नया मंच इसको समझने की करें तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया टेलीविजन चैनल यूट्यूब, इंस्टाग्राम और फेसबुक ने आध्यात्मिकता को वैश्विक मंच प्रदान किया है। अब कथा सीमित श्रोताओं तक नहीं, बल्कि करोड़ों दर्शकों तक पहुँचती है। यह विस्तार आध्यात्मिक संदेश को लोकतांत्रिक बनाता है, लेकिन साथ ही सतहीकरण का खतरा भी पैदा करता है। गहन साधना की जगह कभी- कभी वायरल कंटेंट प्राथमिकता बन जाता है।आस्था और बाज़ार एक जटिल संबंध- आधुनिक आध्यात्मिकता पूरी तरह बाज़ार से अलग नहीं रह गई है। आश्रम, प्रवचन, कार्यक्रम, पुस्तकें और डिजिटल सब्सक्रिप्शन, ये सभी आर्थिक संरचना का हिस्सा बन चुके हैं।यह न तो पूर्णतः अनुचित है और न ही पूर्णतःउचित;यह समय की मांग का परिणाम है। किंतु प्रश्न यह है कि क्या बाज़ार आस्था को नियंत्रित कर रहा है, या आस्था बाज़ार को दिशा दे रही है ?

साथियों बात अगर हम इस विषय कोअंतरराष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य: भारत अकेला नहीं इस रूप में समझने की करें तो,यह परिवर्तन केवल भारतीय समाज तक सीमित नहीं है। अमेरिका में टेली-एवेंजेलिस्ट, यूरोप में स्पिरिचुअल मोटिवेशनल स्पीकर्स और एशिया में ध्यान गुरु,हर जगह आध्यात्मिकता आधुनिक रूप में प्रकट हो रही है। भारत इस वैश्विक प्रवृत्ति का एक प्रमुख केंद्र है, क्योंकि यहाँ आध्यात्मिक विरासत अत्यंत गहरी है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे क़ि विवेकपूर्ण आस्था की आवश्यकता -आधुनिक युग की आध्यात्मिकता न तो पूरी तरह खोखली है और न ही पूरी तरह शुद्ध। यह हमारे समय की उपज है,जहाँ आस्था,पहचान, करियर और बाज़ार एक-दूसरे में गुंथे हुए हैं। आवश्यकता इस बात की है कि समाज विवेकपूर्ण दृष्टि अपनाए, प्रश्न पूछे, पर श्रद्धा का अपमान न करे। आध्यात्मिकता का उद्देश्य अंततः आत्मबोध, करुणा और नैतिक जीवन होना चाहिए,चाहे वह मंदिर में मिले या मंच पर।

केरल के निकायों में भाजपा की जीत का नैरेटिव और जमीनी हकीकत

(आलेख : संजय पराते)

केरल के स्थानीय निकायों के चुनाव में भाजपा द्वारा बड़ी छलांग लगाने और तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन में कब्जा करने का गोदी मीडिया द्वारा बड़े पैमाने पर प्रचार किया जा रहा है। गोदी मीडिया का दुष्प्रचार यह भी है कि केरल में वाम मोर्चे का जनाधार ही खत्म हो गया है और आने वाले विधान सभा चुनाव में अब मुकाबला कांग्रेस और भाजपा के बीच ही होने जा रहा है।

वास्तविकता क्या है, इसे जानने के लिए किस पार्टी या मोर्चे को कितने वोट और सीटें मिली हैं, इस पर नजर डालना जरूरी है। तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन में माकपा नीत वामपंथी-जनवादी मोर्चा अभी भी पहले नंबर की ताकत है। वाम मोर्चे को 1,75,000 वोट मिले हैं, जबकि भाजपा को 1,65,000 वोट और कांग्रेस नीत मोर्चे को 1,25,000 वोट ही मिले हैं। भाजपा की जीती हुई 50 वार्डों में से 41 वार्डों में कांग्रेस मोर्चा तीसरे नंबर पर है और इनमें से 25 वार्डों में उसे 1,000 से भी कम वोट मिले हैं। इन सभी सीटों पर माकपाई मोर्चा दूसरे स्थान पर है और 7 वार्डों में वह 60 से भी कम वोटों से हारी है। तिरुवनंतपुरम मूलतः कांग्रेस की सीट है और भाजपा को जो कुछ भी बढ़त मिली है, वह वोटों के कांग्रेस से भाजपा की ओर प्रवाह का नतीजा है। तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन के चुनाव में कांग्रेस के कथित असंतुष्ट नेता, जो अब लगभग भाजपा नेता के रूप में में अपनी काया पलट चुके हैं, शशि थरूर की भूमिका किसी से छुपी हुई नहीं है। उनके इस रुख के बावजूद कांग्रेस ने भाजपा की हार को सुनिश्चित करने का कोई प्रयास नहीं किया, क्योंकि कांग्रेस केरल की राजनीति में अपना असली दुश्मन माकपा को मानती है। उसे इस बात से कोई मतलब ही नहीं था कि इस चुनाव में भाजपा की बढ़त का पूरे देश में क्या राजनैतिक संदेश जाएगा। साफ है कि माकपा नीत वाम मोर्चे को हराने के लिए कांग्रेस और भाजपा का अप्रत्यक्ष गठबंधन काम कर रहा था।

तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन में भाजपा की बढ़त से साफ हो गया है कि कांग्रेस का यह दावा खोखला है कि उसमें अकेले ही भाजपा को हराकर सत्ता से बाहर रखने की ताकत है। चुनाव नतीजों ने साफ कर दिया है कि कांग्रेस का राष्ट्रीय नेतृत्व और राहुल गांधी धर्मनिरपेक्षता के लिए प्रतिबद्ध होने की कितनी ही डींगें क्यों न मार लें, वास्तविकता यही है कि निचले स्तर का स्थानीय नेतृत्व और शशि थरूर जैसे नेता भी उसे गंभीरता से लेने को तैयार नहीं है और कहीं भी, किसी भी समय भाजपा के हाथों खेलने के लिए तैयार हैं।

कांग्रेस के दोगलेपन के कारण तिरुवनंतपुरम कॉर्पोरेशन के चुनाव में सीटों के मामले में भाजपा भले ही सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरकर सामने आई हो, लेकिन न वह बहुमत हासिल कर पाई है और न ही सबसे ज्यादा वोट पाने वाला मोर्चा बन पाया है।

स्थानीय निकाय चुनावों में वाम मोर्चे को झटका लगने के गोदी मीडिया के प्रचार के विपरीत वास्तविकता यह है कि नगर पालिकाओं और जिला पंचायतों में भी भाजपा को करारा झटका लगा है। उसे पिछली बार 4 नगरपालिका में बहुमत हासिल हुआ था, तो इस बार वह केवल 2 नगर पालिकाएं ही जीत पाई है। इसी प्रकार, पिछली बार उसके पास 14 जिला पंचायतों में 3 सीटें थीं, तो इस बार केवल एक सीट पर ही वह कब्जा कर पाई है। 941 ग्राम पंचायतों में से केवल 6 ग्राम पंचायतों में ही वह बहुमत हासिल कर पाई है। इसके विपरीत, वाम मोर्चा ने 343 ग्राम पंचायतों, 63 ब्लॉक पंचायतों, 7 जिला पंचायतों, 28 नगर पालिकाओं में जीत हासिल की है।

2020 में हुए स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपाई मोर्चे को 15 प्रतिशत वोट मिले थे, जो 2024 के लोकसभा चुनाव में बढ़कर 19.4 प्रतिशत हो गए थे। इस बार के स्थानीय निकाय चुनाव में उसे केवल 14.5 प्रतिशत वोट ही मिले हैं, जो पूरे केरल में उसके जनाधार में गिरावट को दिखाता है।

कांग्रेसी मोर्चे यूडीएफ़ का मत प्रतिशत भी स्थानीय निकाय चुनावों में पिछली बार के 37.9 प्रतिशत की तुलना में इस बार 37.1 प्रतिशत रह गया है, जबकि माकपाई मोर्चे एलडीएफ का मत प्रतिशत पिछली बार के 40.2 प्रतिशत के मुकाबले इस बार बढ़कर 41.6 प्रतिशत हो गया है। यह माकपाई मोर्चे के वोटों में 1.4 प्रतिशत की वृद्धि है। माकपा को मंथन करना होगा कि वह अपने वोटों को सीटों में क्यों नहीं बदल पाई?

6 ग्राम पंचायतों, जिला पंचायतों में 3 सीटों, 2 नगरपालिकाओं और 1 नगर निगम में जीत के साथ भाजपा का पक्षधर गोदी मीडिया पूरे केरल में भाजपा की जीत का नैरेटिव सेट करना चाहता है। लेकिन समग्रता में देखें, तो झटका वामपंथ को नहीं, दक्षिणपंथी भाजपा को ही लगा है और केरल की आम जनता ने उसकी विभाजनकारी सांप्रदायिक नीतियों को खारिज किया है। असली टक्कर, और यह आगामी विधानसभा चुनावों के लिए वास्तव में कड़ी टक्कर बनने जा रही है, कांग्रेस और माकपा मोर्चों के बीच ही है।

इन चुनावों के बाद माकपा ने यह महत्वपूर्ण रुख अख्तियार किया है कि जहां उसके पास बहुमत नहीं है, वहां वह विपक्ष में रहकर आम जनता को उसके मुद्दों पर संगठित करेगी और जन संघर्ष को तेज करेगी, लेकिन वह सांप्रदायिक पार्टियों के साथ कोई गठबंधन नहीं करेगी। उसने कहा है कि वह उन सभी निर्दलीयों के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार है, जो वामपंथ के साथ सहयोग करना चाहते है। अब यह देखना दिलचस्प होगा कि केरल में सत्ता में आने की ललक में कांग्रेस कौन-सी चाल चलती है और उसकी चाल से भाजपा को कितना फायदा होता है? वैसे पिछली बार के अपवाद को छोड़ दिया जाएं, तो केरल का इतिहास सत्ता बदलने का इतिहास रहा है, जिसका फायदा कांग्रेस को ही मिल सकता है। लेकिन जिस प्रकार उसने स्थानीय निकाय चुनाव में पूरे प्रदेश में सबसे ज्यादा वोट बटोरे हैं, यदि वह इसे सीटों में बदल पाई, तो एक नया चमत्कार भी देखने को मिल सकता है।

(लेखक अखिल भारतीय किसान सभा से संबद्ध छत्तीसगढ़ किसान सभा के उपाध्यक्ष हैं।)

मां की अनकही ममता: नववर्ष का सच

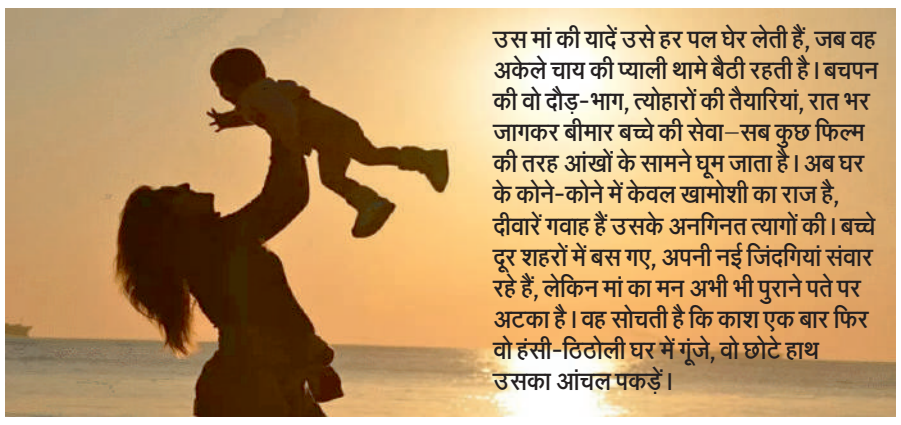

उस मां की यादें उसे हर पल घेर लेती हैं, जब वह अकेले चाय की प्याली थामे बैठी रहती है। बचपन की वो दौड़-भाग, त्योहारों की तैयारियां, रात भर जागकर बीमार बच्चे की सेवा—सब कुछ फिल्म की तरह आंखों के सामने घूम जाता है। अब घर के कोने-कोने में केवल खामोशी का राज है, दीवारें गवाह हैं उसके अनगिनत त्यागों की। बच्चे दूर शहरों में बस गए, अपनी नई जिंदगियां संवार रहे हैं, लेकिन मां का मन अभी भी पुराने पते पर अटका है। वह सोचती है कि काश एक बार फिर वो हंसी-ठिठोली घर में गूंजे, वो छोटे हाथ उसका आंचल पकड़ें।

[खुशियों की ध्वनि में छुपा मातृत्व का दर्द]
[हर नए साल की रौनक में छुपी अनकही दास्तान]

नववर्ष की रातें अपनी रौशनी से जगमगाती हैं, आतिशबाजियों की रंग-बिरंगी झिलमिलाहट में डूबी हुई। हवा में हंसी और संगीत की गूँज घुल-मिल जाती है, लोग एक-दूसरे को गले लगाते हैं, नए सपनों और उमंगों की शुभकामनाएँ देते हैं। पर इसी चमक-दमक के बीच, एक कोने में बैठी वो अकेली मां, चुपचाप अपने आंसुओं को पोंछती है। उसकी आंखों की नमी किसी क्षणिक दुःख की नहीं, बल्कि जीवन भर के अनकहे त्याग की गहरी गवाही है। वह मां, जिसने कभी अपने बच्चों के लिए नींद का बलिदान किया था, अब जब उसके बच्चे अपनी दुनिया में खोए हैं, उसके घर में केवल एक सन्नाटा है। ये नववर्ष की रौशनी उसके लिए एक कड़वी हकीकत बन जाती है – हकीकत यह कि समय कितनी बेरहम चाल से सब कुछ बदल देता है।

वो मां खिड़की से बाहर झांकती है, रंग-बिरंगी रौशनियों की झिलमिलाहट में खोई हुई। उसके हाथ में पुरानी तस्वीरें होती हैं—बच्चे छोटे थे, गोद में खेलते थे, नववर्ष के उत्साह में नए कपड़े पहनकर मुस्कुराते थे। बाहर की दुनिया जश्न में डूबी होती है, लेकिन उसके दिल में एक गहरा खालीपन उठता है। बच्चे कभी-कभी फोन करते हैं, जल्दी-जल्दी कहते हैं, ₹मां, खुश रहो, हम ठीक हैं।₹ मगर ये जुबान का सुखद अहसास भी झटपट खत्म हो जाता है। मां समझती है—जिम्मेदारियां हैं, करियर है, उनका परिवार है। फिर भी, उसकी आंखों की नमी थमती नहीं। ये नमी उस अनकहे बलिदान की कहानी कहती है, जो उसने कभी किसी से साझा नहीं की। पति साथ छोड़ गए, रिश्तेदार दूर हो गए, लेकिन मां अडिग रही। नववर्ष की यह रौनक उसके लिए एक आईना है, जो उसकी अकेलीपन की गहराई को और उजागर करता है।

सुबह होती है नववर्ष की, लोग नए संकल्पों की बातें करते हैं—स्वास्थ्य, सफलता, यात्राएं। लेकिन उस मां का संकल्प हर साल एक ही रहता है—बच्चे सुरक्षित और खुश रहें। वह मंदिर जाती है, प्रार्थना करती है, और लौटकर घर में वही मौन उसका इंतजार करता है। बाहर की दुनिया नई शुरुआतों से भरी होती है, सोशल मीडिया पर खुशियों की झलकियाँ बिखरी रहती हैं। लेकिन उसके फोन में सिर्फ पुरानी यादें और पुराने संदेश ही बचे रहते हैं। उसकी नमी आंसुओं में बदल जाती है, जब वह सोचती है—कब बच्चे घर लौटेंगे। समाज मां को मजबूत कहता है, लेकिन मजबूती के पीछे का दर्द कोई नहीं समझता। नववर्ष की ये चमक उसके लिए एक व्यंग्य बन जाती है—सारी दुनिया बदल रही है, लेकिन उसका इंतजार जस का तस है। वह इंतजार जो साल दर साल और गहरा होता जाता है।

उस मां की यादें उसे हर पल घेर लेती हैं, जब वह अकेले चाय की प्याली थामे बैठी रहती है। बचपन की वो दौड़-भाग, त्योहारों की तैयारियां, रात भर जागकर बीमार बच्चे की सेवा—सब कुछ फिल्म की तरह आंखों के सामने घूम जाता है। अब घर के कोने-कोने में केवल खामोशी का राज है, दीवारें गवाह हैं उसके अनगिनत त्यागों की। बच्चे दूर शहरों में बस गए, अपनी नई जिंदगियां संवार रहे हैं, लेकिन मां का मन अभी भी पुराने पते पर अटका है। वह सोचती है कि काश एक बार फिर वो हंसी-ठिठोली घर में गूंजे, वो छोटे हाथ उसका आंचल पकड़ें। स्वास्थ्य उसका साथ छोड़ने लगा है, दवाइयां रोज की साथी बन गई हैं, मगर शिकायत किसी से नहीं। नववर्ष की ये रात उसे याद दिलाती है कि जीवन की असली संपत्ति रिश्ते हैं, जो समय की धारा में कहीं बह न जाएं। उसकी नमी में छिपा है वो ममता का सागर, जो कभी सूखता नहीं।

उस मां की रातें अब लंबी हो गई हैं, जहां नींद आती है तो सपनों में बच्चे फिर छोटे होकर लौट आते हैं। वह पुरानी अलमारी खोलती है, बच्चों के छोटे-छोटे कपड़े सहलाती है, जो सालों से वैसे ही पड़े हैं। हर कपड़े में बसी है वो खुशबू—दूध की, मिट्टी की, त्योहारों की। बाहर आतिशबाजी की आवाजें गूंजती हैं, लेकिन उसके कानों में केवल बच्चों की पुरानी हंसी कौंधती है। वह सोचती है कि समय ने कितनी जल्दी सब कुछ छीन लिया—पति की साथ, रिश्तेदारों की चहल-पहल, घर की रौनक। अब केवल कैलेंडर की तारीखें बदलती हैं, मगर उसका दिल उसी पुराने नववर्ष पर अटका है, जब पूरा परिवार एक साथ होता था। उसकी नमी में छिपा है वो अपार ममता का खजाना, जो कभी खाली नहीं होता। नववर्ष की ये चमक उसे बस इतना याद दिलाती है कि जीवन की सबसे बड़ी खुशी साथ में होती है, अकेले नहीं।

फिर भी, उस मां की आंखों में नमी के साथ एक अजीब सी चमक भी होती है। वह चमक उम्मीद की है, विश्वास की है, और अनकहे धैर्य की है। वह जानती है कि उसके बच्चे उसे कभी भूलेंगे नहीं, बस जीवन की तेज़ भागदौड़ में कहीं खो गए हैं। वह खुद को समझाती है, हल्की मुस्कान देती है, और प्रार्थना करती है कि सब ठीक रहें। उसकी नमी में डूबा है वह अपार प्यार, जो समय के साथ भी कम नहीं होता। मां का दिल कभी शिकायत नहीं करता; वह अपनी खुशी को बच्चों की मुस्कान में ढूँढ लेती है।नववर्ष की बाहरी रौशनी क्षणिक है, लेकिन उसके भीतर की रोशनी हमेशा जलती रहती है। उसकी नमी एक मूक प्रार्थना बन जाती है, जो सीधे ईश्वर तक पहुँचती है—बच्चों की सलामती, उनके सपनों की पूर्णता के लिए। इसी नमी में छिपी है वह अदृश्य शक्ति, जो दुनिया की सबसे बड़ी व्यवस्थाओं को पीछे से संभालती है।

और यही वो सच्चाई है जो हमें झकझोरती है। लाखों मांएं ऐसी हैं, जो नई साल की चमक में अकेले अपनी नमी छिपाती हैं। हम जश्न मनाते हैं, लेकिन क्या कभी सोचा कि हमारी सफलता की चमक में मां की वो नमी शामिल है? एक फोन कॉल, एक छोटा सा विजिट, एक गर्मजोशी भरा गले लगाना – ये छोटी चीजें उस नमी को खुशी की चमक में बदल सकती हैं। नया साल सिर्फ कैलेंडर का बदलना नहीं, दिलों का जुड़ना है। उस अकेली मां की नमी हमें याद दिलाती है कि सच्ची खुशी रिश्तों में होती है, चकाचौंध में नहीं। इस नए साल, चलिए संकल्प लें – मां को कभी अकेला नहीं छोड़ेंगे। उनकी आंखों की नमी को हमारी मुस्कान से पोछ देंगे। यही सच्ची नई शुरुआत होगी।

प्रेमी से गर्भवती होने के शक में कानपुर में जेल से रिहा युवक ने पत्नी को मार डाला : तलाश जारी

– पहली पत्नी की हत्या में भी जेल जा चुका है आरोपी

सुनील बाजपेई

कानपुर। अपने प्रेमी से चार माह की गर्भवती होने के शक में एक युवक ने अपनी पत्नी की हत्या कर दी। वह इसके पहले पहली पत्नी की हत्या में भी जेल जा चुका है और हाल में ही वहां से रिहा होने के बाद इस घटना को अंजाम दिया ,जिसके बाद फरार होने की दशा में पुलिस उसकी तलाश कर रही है।

यह घटना गोविंद नगर थाना क्षेत्र के गुजैनी में हुई, यहां पहली पत्नी की आत्महत्या में जेल जा चुके पति ने दूसरी गर्भवती पत्नी को भी मार डाला। खून से लथपथ शव मकान की पहली मंजिल में पीछे के कमरे में फर्श पर पड़ा मिला, जबकि मेनगेट पर ताला लगा था।

मौके पर पहुंची पुलिस ने बताया कि सिर पर भारी वस्तु से प्रहार के निशान थे और आसपास रखे बर्तन व सामान खून से सने थे। बड़ी बात यह है कि एक साल पहले ही उसकी दूसरी शादी हुई थी लेकिन विवाद के चलते एक माह से वह पत्नी से अलग रह रहा था। पुलिस सूत्रों ने बताया कि दूसरी पत्नी रोशनी 4 माह की गर्भवती थी जिस पर उसके पति संजय को शक था कि वह उससे नहीं बल्कि अपने प्रेमी से गर्भवती है और उसके इसी शक ने उसकी हत्या करवा दी। डीसीपी दक्षिण, एडीसीपी, एसीपी बाबूपुरवा और फोरेंसिक टीम ने मौके पर पहुंचकर साक्ष्य जुटाए।

घटना के बारे में प्राप्त विवरण के अनुसार रेऊना थानाक्षेत्र के अकबरपुर झवैया निवासी 25 वर्षीय रोशनी की शादी आठ दिसंबर 2024 को गड़रियन पुरवा स्थित मेटल फैक्ट्री में काम करने वाले गुजैनी एफ ब्लाक निवासी संजय कुमार के साथ हुई थी।

गोविंद नगर के इंस्पेक्टर रिकेश कुमार सिंह ने बताया कि संजय की यह दूसरी शादी थी, उसकी पहली पत्नी ने आत्महत्या कर ली थी, जिससे उनकी 12 साल की बेटी वर्तिका है। रोशनी के चाचा केश नारायण ने बताया कि बीती 21 नवंबर को झगड़े के बाद संजय ने रोशनी को जलाकर मारने का प्रयास किया था। इस पर रोशनी ने पति संजय और सास इंदिरा देवी के खिलाफ गोविंद नगर थाने में मुकदमा दर्ज कराया था, जिसके बाद से संजय बेटी और मां को लेकर अलग रह रहा था।

घर पर रोशनी के अकेले होने पर छोटा भाई राहुल उसके साथ रहने लगा। इधर पति संजय घर पहुंचा और रोशनी से समझौता करने के बाद कहकर राहुल को जाने के लिए कहा तो वह चला गया। शाम उसने बहन को फोन किया तो मोबाइल स्विच आफ था, इस पर वह उसके घर गया तो मेनगेट पर ताला लगा देख लौट आया। उसने फिर फोन किया, तब भी मोबाइल स्विच आफ था। अनहोनी की आशंका पर वह रोशनी के घर गया और ताला लगा देख पड़ोसियों से पूछताछ की।

उन्होंने संजय को तो घर से निकलते देखने की बात कही लेकिन रोशनी के बारे में कुछ नहीं बता पाए। उसने पुलिस को सूचना दी तो गोविंद नगर इंस्पेक्टर रिकेश कुमार सिंह फोर्स के साथ पहुंचे और ताला तोड़कर अंदर गए। पहली मंजिल में पीछे के कमरे में रोशनी का लहूलुहान शव फर्श पर पड़ा हुआ था। चेहरे पर घाव थे और पास में ही लोहे का तवा और बेलन भी खून से सने पड़े थे।

समाचार लिखे जाने तक फरार हत्यारोपी का कोई सुराग नहीं मिल पाया है। डीसीपी दक्षिण दीपेंद्र नाथ चौधरी ने बताया कि मृतका के भाई की तहरीर पर पति संजय के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कर आरोपित की तलाश में टीमें लगाई गई हैं।

पंच परिवर्तन से होगा राष्ट्र परिवर्तन

प्रो.महेश चंद गुप्ता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने अपने एक सौ साल पूरे होने के मौके पर आने वाले समय के लिए समाज में परिवर्तन लाने का बीड़ा उठाया है। संघ ने समाज में परिवर्तन के अपने दृष्टिकोण को पंच परिवर्तन के रूप में प्रस्तुत किया है जिसके तहत लाखों स्वयंसेवक काम में जुटे हुए हैं। संघ की मान्यता है कि समाज में बड़ा बदलाव केवल कुछ लोगों के प्रयासों से नहीं बल्कि संपूर्ण समाज की शक्ति से ही संभव है। यह ऐसा विचार है जो समाज के जीवन में समयानुकूल परिवर्तन लाने की बात तो करता ही है, राष्ट्रहित में जीवन को ढालने का आग्रह भी इसमें है। अपने शताब्दी पर्व पर संघ ने समाज के सामने पंच परिवर्तन के जिस विचार को रखा है, वह केवल कोई नारा या अभियान नहीं है बल्कि इससे बढक़र एक दीर्घकालिक सामाजिक संकल्प है।

आरएसएस का यह विश्वास रहा है कि राष्ट्र का निर्माण केवल सत्ता या नीतियों से नहीं होता बल्कि समाज के स्वभाव, संस्कार और आचरण से होता है। पंच परिवर्तन की अवधारणा इसी सोच का विस्तार है। यह कोई क्षणिक विचार नहीं है बल्कि सौ वर्षों के अनुभव, प्रयोग और मंथन का निचोड़ है। संघ के स्वयंसेवक वर्षों से समाज के भीतर काम करते हुए इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि यदि परिवर्तन स्थायी चाहिए तो उसे समाज की जड़ों तक पहुंचना होगा।

संघ चालक मोहन भागवत बार-बार कह चुके हैं कि पंच परिवर्तन भारतीय समाज की दिशा और दशा तय करने वाले हैं। यह कथन केवल औपचारिकक भाषण का हिस्सा नहीं बल्कि उस आत्मविश्वास की अभिव्यक्ति है जो समाज की सामूहिक शक्ति पर भरोसा करता है।

संघ का मानना है कि कुछ चुनिंदा लोग समाज को नहीं बदल सकते। समाज स्वयं जब बदलने का निश्चय करता है, तभी राष्ट्र बदलता है। सवाल उठता है कि आखिर पंच परिवर्तन क्या है? इस उत्तर है कि इसमें देश का आमूलचूल परिवर्तन छिपा हुआ है। पंच परिवर्तन के पांच सूत्रों में सामाजिक समरसता, कुटुंब प्रबोधन, पर्यावरण संरक्षण, स्वदेशी आचरण और नागरिक कर्तव्य को लिया गया है और ये सूत्र दरअसल आधुनिक भारत के सामने खड़ी जटिल चुनौतियों का समग्र उत्तर और समस्याओं का समाधान हैं। हमें ये सूत्र अलग-अलग दिखते जरूर हैं लेकिन भीतर से एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। किसी एक को नजरअंदाज करके दूसरे को साधा नहीं जा सकता। हमें सभी सूत्रों को एकरूपता में देखना होगा।

अगर सबसे पहले सामाजिक समरसता की बात करें तो देश की विविधता उसकी ताकत भी है और उसकी चुनौती भी है। जाति, वर्ग, क्षेत्र और भाषा के नाम पर उपजने वाले तनाव हमारे सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करते हैं। संघ हमेशा से यह माननता आया है कि जब तक समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सौहार्द और अपनापन नहीं बढ़ेगा, तब तक 'विकसित भारत' को यथार्थ रूप नहीं दिया जा सकता। सामाजिक समरसता बढ़ेगी तो व्यर्थ के विवादों से मुक्ति मिलेगी और ऊर्जा निर्माण में लगेगी, टकराव में जाया नहीं होगा। इसी प्रकार पर्यावरण संरक्षण आज किसी एक संगठन या देश का मुद्दा नहीं है बल्कि यह मानवता का सवाल बन चुका है।

बढ़ता प्रदूषण, घटते जल-स्रोत और बिगड़ता पारिस्थितिक संतुलन सीधे-सीधे जन-स्वास्थ्य को प्रभावित कर रहा है। पंच परिवर्तन सृष्टि को 'माता' मानकर जीवन शैली में बदलाव की वकालत करता है। संघ का कहना है कि सृष्टि सभी प्राणियो की मां के समान है जो हमारे जीवन का आधार है लेकिन भौतिकतावादी जीवन शैली और उपभोग की अंधी दौड़ के कारण प्रकृति का निरंतर शोषण हुआ है। पश्चिमी विकास के चिंतन पर आधारित इस मॉडल ने मात्र पांच सौ सालों में पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ कर रख दिया है। संघ पंच परिवर्तन के जरिए इसमें सुधार चाहता है और उसकी सोच केवल वृक्षारोपण तक सीमित नहीं है बल्कि उसमें उपभोग की आदतों पर पुनर्विचार का आग्रह है। संघ इसके तहत कम उपभोग, संतुलित जीवन और प्रकृति के साथ सह अस्तित्व की बात करता है।

इसी प्रकार स्वदेशी आचरण का सूत्र हमें हमारी जड़ों की ओर लौटने के लिए प्रेरणा देता है। संघ के लिए स्वदेशी की अवधारणा यह केवल आर्थिक नीति तक सीमित नहीं है बल्कि सांस्कृतिक आत्म विश्वास का मुद्दा भी है। स्वदेशी अपनाने से स्थानीय उद्योगों और कारीगरों को बल मिलता है, रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और आर्थिक असमानता कम करने की दिशा बनती है। आज आय की असमानता लगातार बढ़ती जा रही है।

बंगलादेश में हिंदुओं के उत्पीड़न पर आखिर खामोश क्यों हैं दुनिया के लोग?

कमलेश पांडेय

भारत के पड़ोसी बांग्लादेश में हिंदुओं पर उत्पीड़न एक लंबे अरसे से चली आ रही समस्या है जबकि उसके उदय में भारत सरकार की परोक्ष भूमिका रही है। कभी पूर्वी पाकिस्तान कहे जाने वाले बंगलादेश में अक्सर इस्लामिक कट्टरता ब्रेक के बाद मुखर हो जाती है जो राजनीतिक अस्थिरता के दौरान अमूमन तेज हो जाती है। यह भारत सहित अंतर्राष्ट्रीय चिंता का विषय है और दुनियाभर में अल्पसंख्यक समूह के उत्पीड़न पर संयुक्त राष्ट्र संघ की विफलता का द्योतक है। हाल के दिनों में भारत और बंगलादेश के कूटनीतिक सम्बन्धों पर भी इन बातों का साफ असर महसूस किया जा सकता है।

यदि पुरानी बातें छोड़ भी दीं जाएं तो गत वर्ष यानी 2024 में शेख हसीना की सरकार गिरने के बाद से बंगलादेश में हिंदू विरोधी हिंसा में पुनः उछाल आया है जिसमें मंदिरों पर हमले, घरों में लूटपाट और हत्याएं शामिल हैं। इस पर भारत सरकार और अंतरराष्ट्रीय समुदाय की महज खानापूर्ति वाली प्रतिक्रिया से वहां हिंदुओं पर संकट गहराता जा रहा है। इससे भारत में भी बंगलादेश विरोधी उत्तेजना स्वाभाविक है।

यदि हालिया घटनाओं पर नजर दौड़ाएं तो पता चलता है कि नवंबर 2024 से जनवरी 2025 तक 76 हमले दर्ज हुए, जबकि अगस्त 2024 से अब तक 23 हिंदुओं की हत्या और 152 मंदिरों पर आक्रमण की खबरें हैं। वहीं, 2025 में राजबाड़ी जिले में अमृत मंडल और दीपू चंद्र दास जैसे हिंदू युवकों की पीट-पीटकर हत्या हुई, साथ ही घरों में आगजनी के मामले सामने आए। इसकी एक बड़ी वजह बंगलादेश में हिंदुओं की जनसंख्या में निरंतर कमी होना भी है। आंकड़े बताते हैं कि 1971 में हिंदू बांग्लादेश की आबादी का 22% थे जो अब घटकर 8% से कम रह गए हैं, जो मुख्यतः उत्पीड़न और पलायन के कारण हुआ है।

एक अंतर्राष्ट्रीय रिसर्च के मुताबिक 16 लाख हिंदू भारत चले गए, क्योंकि बंगलादेश में हिंदुओं की भूमि हड़पना, बलात्कार और मंदिर तोड़फोड़ आम अपराध हैं। इससे जुड़े आंकड़े और रिपोर्ट की मानें तो 2025 के पहले छह महीनों में 258 हिंसा की घटनाएं हुईं जिनमें 20 बलात्कार और 59 पूजा स्थलों पर हमले शामिल हैं। कुल 4 अगस्त 2024 से जून 2025 तक 2,244 मामले दर्ज किए जा चुके हैं जबकि अंतरिम सरकार पर निष्क्रियता का आरोप है जिससे अपराधी बेखौफ हैं।

दुर्भाग्यपूर्ण यह है कि बंगलादेश की कार्यवाहक सरकार के मुखिया मोहम्मद युनुस ने बांग्लादेश में हिंदू हत्याओं पर प्रत्यक्ष रूप से कोई स्पष्ट सार्वजनिक बयान या ठोस कार्रवाई नहीं की है जिससे उनकी सरकार पर निष्क्रियता के आरोप लगे हैं। कई रिपोर्ट्स में हिंसा को उनकी कथित कट्टरपंथी नीतियों से जोड़ा गया है लेकिन आधिकारिक प्रतिक्रिया में केवल सामान्य शांति अपील तक सीमित रहने का उल्लेख है। इसलिए उनपर आरोप लगते हैं और आलोचना भी होती है कि युनुस सरकार पर जमात-ए-इस्लामी जैसे कट्टरपंथी समूहों को संरक्षण दे रहे हैं जिसके बाद हिंदू हत्याओं में वृद्धि हुई।

वहीं, भारतीय मीडिया और विपक्षी नेता भी उन्हें हिंसा के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं जबकि युनुस ने भारत के दबाव में जांच के वादे किए बिना कोई स्पष्ट स्टैंड नहीं लिया। जहां तक अंतरराष्ट्रीय दबाव की बात है तो भारत और ब्रिटेन जैसे देशों ने युनुस से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की मांग की लेकिन उनकी प्रतिक्रिया में कोई ठोस कदम नहीं दिखा। वहीं, बंगलादेश की पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने निर्वासन से युनुस पर हिंदू उत्पीड़न को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है। जहां तक इस मसले पर अंतरराष्ट्रीय प्रतिक्रिया का सवाल है तो भारत सरकार ने लोकसभा में मामले उठाया जबकि विश्व हिंदू परिषद ने विरोध प्रदर्शन किए। वहीं, ब्रिटिश सांसदों ने युनुस सरकार पर कार्रवाई की मांग की।

बता दें कि भारत विदेशों में हिंदुओं पर हो रहे उत्पीड़न को मुख्य रूप से कूटनीतिक दबाव, अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आवाज उठाने और संबंधित देशों से न्याय की मांग करके रोकने का प्रयास करता है। बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे देशों में हालिया घटनाओं पर विदेश मंत्रालय ने सख्त बयान जारी किए हैं, जहां दोषियों को सजा देने और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की गई है।

जहां तक कूटनीतिक प्रयास की बात है तो भारतीय विदेश मंत्रालय बांग्लादेश में हिंदू युवकों की हत्या और घरों पर हमलों की कड़ी निंदा करता है तथा अंतरिम सरकार से कार्रवाई की अपेक्षा रखता है। विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने ढाका में बांग्लादेशी समकक्ष से अल्पसंख्यकों की सुरक्षा पर चर्चा की। वहीं भारत उचित अंतरराष्ट्रीय मंचों पर पाकिस्तान में अल्पसंख्यकों की दुर्दशा उजागर करता है, लेकिन सुरक्षा की मुख्य जिम्मेदारी संबंधित देश की सरकार मानता है। जहां तक गृह मंत्रालय की भूमिका की बात है तो गृह मंत्री अमित शाह ने बांग्लादेश सीमा पर विशेष समिति गठित की है जो हिंदू अल्पसंख्यकों की स्थिति की निगरानी करती है और भारतीय नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित करती है। नागरिकता संशोधन कानून के जरिए उत्पीड़ित हिंदू, सिख आदि को भारत में शरण प्रदान की जा रही है।

वहीं, विभिन्न राष्ट्रवादी संगठनों ने भी इस मामले में पहल की है। खासकर आरएसएस ने अपनी शताब्दी बैठक में विदेशों में हिंदुओं की सुरक्षा के लिए संकल्प पारित किया तथा संरक्षण तंत्र की मांग की। जबकि कुछ विश्लेषकों ने 'राइट टू प्रोटेक्ट' सिद्धांत अपनाने का सुझाव दिया है, जिसमें सीमा पर सुरक्षित क्षेत्र बनाने जैसे कदम शामिल हैं।हालांकि इस दिशा में चुनौतियां की काफी हैं, क्योंकि भारत विदेशी सरकारों पर दबाव बनाता है, लेकिन प्रत्यक्ष हस्तक्षेप सीमित रहता है क्योंकि संप्रभुता का सम्मान किया जाता है। वहीं वैश्विक शक्तियां जैसे अमेरिका-ब्रिटेन भी हिंसा की निंदा करती हैं, जो भारत के प्रयासों को मजबूती देती हैं।

पिछले साल आपने देखा होगा कि चिन्मय कृष्ण दास, बांग्लादेश संमिलित सनातन जागरण जोत के प्रवक्ता और पूर्व इस्कॉन नेता, को 25 नवंबर 2024 को ढाका हवाई अड्डे से राजद्रोह के आरोप में गिरफ्तार किया गया। गिरफ्तारी का मुख्य कारण चटगांव में 25 अक्टूबर को हुई रैली में बांग्लादेश के राष्ट्रीय ध्वज के ऊपर केसरिया झंडा फहराने का आरोप था जहां वे हिंदू अल्पसंख्यकों के आठ सूत्री मांगों के लिए प्रदर्शन कर रहे थे। उनकी गिरफ्तारी शेख हसीना सरकार गिरने के बाद अल्पसंख्यक हिंसा के खिलाफ बड़े प्रदर्शनों (चटगांव और रंगपुर में) से जुड़ी थी, जिसे बांग्लादेशी अधिकारी राजद्रोह मानते हैं। बाद में चटगांव में वकील सैफुल इस्लाम की हत्या के मामले में भी उन्हें आरोपी दिखाया गया जो उनकी गिरफ्तारी के बाद हुई हिंसक झड़पों से उपजा।

2025: वैज्ञानिक सफलताओं का एक वर्ष

विजय गर्ग

2025 में खगोलविदों ने MoM-z14 की खोज के साथ हमारे ब्रह्मांडीय क्षितिज का विस्तार किया, जो कि अब तक की सबसे दूर की आकाशगंगा है जिसकी स्पेक्ट्रोस्कोपिक रूप से पुष्टि हुई है। यह बिग बैंग के मात्र 28 करोड़ वर्ष बाद बनी थी। इसकी संरचनात्मक जटिलता और रासायनिक हस्ताक्षर प्रारंभिक आकाशगंगा निर्माण के सिद्धांतों को चुनौती देते हैं।

अंतरिक्ष की सबसे दूर तक पहुंचने से लेकर चिकित्सा में क्रांति लाने और नई तकनीकी सीमाओं को खोलने तक, 2025 को विज्ञान के सबसे उल्लेखनीय वर्षों में से एक के रूप में याद किया जाएगा। विभिन्न विषयों में, शोधकर्ताओं ने पिछली सीमाओं को पार कर लिया है, तथा ऐसी खोजें की हैं जो दशकों तक गूंजती रहेंगी। कॉस्मिक रिवीलेशनः स्पेस एंड एस्ट्रोनॉमी

प्रारंभिक ब्रह्मांड के सबसे गहरे दृश्य

2025 में खगोलविदों ने MoM-z14 की खोज के साथ हमारे ब्रह्मांडीय क्षितिज का विस्तार किया, जो कि अब तक की सबसे दूर की आकाशगंगा है जिसकी स्पेक्ट्रोस्कोपिक रूप से पुष्टि हुई है। यह बिग बैंग के मात्र 28 करोड़ वर्ष बाद बनी थी। इसकी संरचनात्मक जटिलता और रासायनिक हस्ताक्षर प्रारंभिक आकाशगंगा निर्माण के सिद्धांतों को चुनौती देते हैं। रिकॉर्ड तोड़ने वाली अंतरिक्ष घटनाएं

बिग बैंग के लगभग 730 मिलियन वर्ष बाद एक बड़े पैमाने पर तारे के ढहने से जुड़ा सबसे पुराना पुष्टि सुपरनोवा विस्फोट — जीआरबी 250314ए — देखा गया, जो तारों की पहली पीढ़ियों में अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।

ब्लैक होल विलय, GW250114 से एक स्पष्ट गुरुत्वाकर्षण-तरंग संकेत ने हॉकिंग के क्षेत्र प्रमेय की पुष्टि करने वाला सबसे मजबूत सबूत प्रदान किया।

खगोलीय घटना जिसने दुनिया को मोहित कर लिया

वर्ष 2025 को धूमकेतुओं का 'वर्ष' भी कहा गया, जो कि अंतरतारकीय 3आई/एटीएलएएस और धूमकेतु स्वान जैसे शानदार आगंतुकों के लिए धन्यवाद है, जिन्होंने खगोल भौतिकी और सार्वजनिक कल्पना को रोशन किया।

इस बीच, ब्लैक होल अध्ययन ने बहुत बड़ी प्रगति की है:

2.2 मिलियन मील प्रति घंटे की गति से चलने वाले एक भगोड़े सुपरमैसिव ब्लैक होल की खोज।

धनु राशि ए* के आसपास शक्तिशाली ज्वालाओं और अंतरिक्ष बवंडरों का अवलोकन।

अब तक देखे गए सबसे प्राचीन ब्लैक होल का पता लगाना।

जीव विज्ञान और चिकित्सा में आगे बढ़ें

प्रोटीन विज्ञान अभी भी विकसित हो रहा है

अपने लॉन्च के पांच साल बाद, अल्फाफोल्ड ने जटिल प्रोटीन संरचनाओं की भविष्यवाणी करके जीव विज्ञान को बदलना जारी रखा — अब डीएनए, आरएनए और छोटे अणुओं के साथ अंतःक्रियाओं से निपटना और भविष्य में कोशिकीय सिमुलेशन को सशक्त बनाना।

जीन थेरेपी पुनः परिभाषित

2025 ने व्यक्तिगत चिकित्सा में एक मील का पत्थर बनायाः पहली पूरी तरह से अनुकूलित सीआरआईएसपीआर-आधारित जीन थेरेपी बनाई गई, अनुमोदित की गई और छह महीने से कम समय में दुर्लभ चयापचय रोग वाले शिशु को दी गई — एक रिकॉर्ड गति जो भविष्य के उपचारों को फिर से परिभाषित कर सकती है। पुनर्जनन चिकित्सा

टिशू इंजीनियरिंग में सफलताओं में प्रयोगशाला में उगाए गए प्रत्यारोपण योग्य कार्डियक पैच और कार्यशील मूत्रमार्ग ऊतक शामिल थे — जो पुनर्जनन चिकित्सा को नैदानिक वास्तविकता के करीब ला रहे हैं।

चिकित्सा में नोबेल मान्यता

फिजियोलॉजी या मेडिसिन में 2025 का नोबेल पुरस्कार नियामक टी कोशिकाओं और प्रतिरक्षा सहिष्णुता के बारे में आवश्यक खोजों के लिए प्रदान किया गया था, जो ऑटोइम्यून और कैंसर चिकित्सा को लक्षित करने वाले सैकड़ों परीक्षणों को बढ़ावा देता है।

एआई, कंप्यूटिंग और प्रौद्योगिकी

क्वांटम और अगली पीढ़ी की कंप्यूटिंग

क्वांटम कंप्यूटिंग हार्डवेयर में प्रमुख प्रगति — जिसमें टोपोलॉजिकल और -कैट क्यूबिटिंग आर्किटेक्चर शामिल हैं — बेहतर स्थिरता और त्रुटि सुधार, व्यावहारिक क्वांटम मशीनों की ओर बढ़ना।

भौतिकी में 2025 नोबेल पुरस्कार ने मैक्रोस्कोपिक क्वांटम घटनाओं में मौलिक सफलताओं पर प्रकाश डाला जो भविष्य की क्वांटम प्रौद्योगिकियों का आधार हैं।

अनुसंधान और खोज में एआई

एआई उपकरणों ने जीव विज्ञान, भौतिकी और सामग्री विज्ञान में वैज्ञानिक खोज को गति दी - प्रोटीन डिजाइन से लेकर नए दवा लक्ष्यों का प्रस्ताव करने तक - केवल उपकरण के बजाय भागीदारों के रूप में कार्य करना।

कॉम्पैक्ट एआई हार्डवेयर

छोटे एआई प्रोसेसर, जो नमक के दाने से भी हल्के हैं, ने अति-कम ऊर्जा लागत पर उच्च गति वाली छवि प्रसंस्करण और क्वांटम संचार अनुप्रयोगों को शक्ति प्रदान करना शुरू कर दिया — एम्बेडेड एआई सिस्टम के लिए एक महत्वपूर्ण कदम।

पृथ्वी और पर्यावरण

प्राचीन जलवायु रिकॉर्ड खोजा गया

अंटार्कटिक बर्फ कोर के नमूनों ने पृथ्वी के जलवायु इतिहास के 1.2 मिलियन वर्षों से अधिक का खुलासा किया, जो पिछले कार्बन चक्र और जलवायु परिवर्तन पैटर्न में एक अभूतपूर्व खिड़की प्रदान करता है। जैव विविधता खोजें

जैव विविधता के संरक्षण की लड़ाई में एक आवश्यक धक्का, हजारों नई प्रजातियों को त्वरित दर से सूचीबद्ध किया जा रहा है।

आगे देख रहे हैंः विज्ञान नई सीमा का समर्थन करता है

जैसे-जैसे 2025 समाप्त होता है, कुछ विषय उभर कर सामने आते हैंः

अंतरिक्ष दूरबीन और गुरुत्वाकर्षण तरंगें ब्रह्मांड के प्रारंभिक इतिहास को खोल रही हैं।

एआई और क्वांटम प्रौद्योगिकियां खोज में तेजी ला रही हैं और जल्द ही उद्योगों को बदल सकती हैं।

व्यक्तिगत चिकित्सा और जीन संपादन नैदानिक वास्तविकता बन रहे हैं।

पृथ्वी और पर्यावरण विज्ञान जलवायु और जैव विविधता पर महत्वपूर्ण डेटा प्रकट करना जारी रखता है।

ये उपलब्धियां विज्ञान के तेजी से ब्रह्मांड में और जीवन की मौलिक तंत्रों में विस्तार करते हुए एक तस्वीर पेश करती हैं। ज्ञान की सीमाएं पहले से कहीं अधिक तेजी से फैल रही हैं, जिससे आने वाले दशक में और भी अधिक परिवर्तनकारी खोजों का मंच तैयार हो रहा है।

रिटायर्ड प्रिंसिपल एजुकेशनल स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

ब्लैक होल सितारे वास्तव में प्रारंभिक ब्रह्मांड में मौजूद हैं

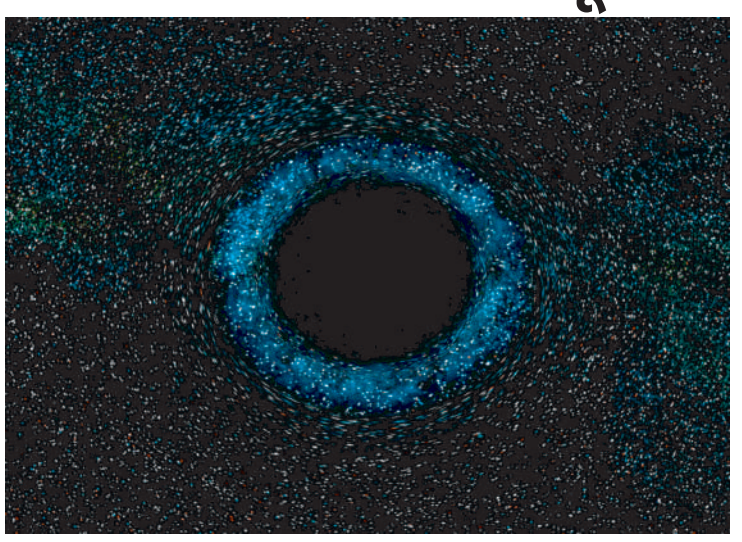

डॉ विजय गर्ग

खगोलशास्त्री और ब्रह्मांडविज्ञानी ब्रह्मांडीय इतिहास के सबसे आकर्षक प्रश्नों में से एक पर पुनः विचार कर रहे हैंः क्या ब्लैक होल द्वारा संचालित तारे - तथाकथित ब्लैक होल स्टार्सब वास्तव में प्रारंभिक ब्रह्मांड में मौजूद थे? जेम्स वेब और हबल जैसे अंतरिक्ष दूरबीनों से प्राप्त नए अवलोकन, सैद्धांतिक मॉडलों के साथ मिलकर यह सुझाव देते हैं कि साधारण तारों के विपरीत विशेषताओं वाली वस्तुएं वास्तव में बिग बैंग के कुछ समय बाद अस्तित्व में आ सकती हैं, जिससे हमारी समझ को नया आकार मिल सकता है कि पहली ब्रह्मांडीय संरचनाएं कैसे बनीं।

ब्लैक होल स्टार्स क्या हैं?

ब्लैक होल स्टार — को अर्ध-स्टार भी कहा जाता है का विचार सैद्धांतिक खगोलभौतिकी से आता है। ये काल्पनिक वस्तुएं बाहर से तारों के समान होंगी, लेकिन उनके केन्द्र में एक ब्लैक होल होगा। सामान्य तारों की तरह मुख्य रूप से परमाणु संलयन द्वारा संचालित होने के बजाय, उनकी चमक (चमक) मुख्यतः केंद्रीय ब्लैक होल में गिरने वाली सामग्री से आती है। गैस के इस संचय से अपार ऊर्जा निकलती है जिससे वस्तु चमकने लगती है।

इस मॉडल के अनुसार, ऐसी वस्तुएं केवल प्रारंभिक ब्रह्मांड की घनी, आदिम परिस्थितियों में ही मौजूद हो सकती थीं — जब गैस प्रचुर मात्रा में थी और धातु-गरीब थी, और गुरुत्वाकर्षण बड़े पैमाने पर, अस्थिर वस्तुओं का उत्पादन कर सकता था जो सुपरनोवा के रूप में खुद को अलग किए बिना सीधे ब्लैक होल कोर में ढह जाती थीं।

प्रारंभिक ब्रह्मांड से अवलोकन संबंधी संकेत

आधुनिक दूरबीनें अब शिशु ब्रह्मांड में हम जो देख सकते हैं उसकी सीमाओं को आगे बढ़ा रही हैं, तथा आश्चर्यजनक सुराग उजागर कर रही हैं

- अप्रत्याशित रूप से प्रारंभिक ब्लैक होलः जेम्स वेब स्पेस टेलीस्कोप ने बिग बैंग के एक अरब साल से भी कम समय बाद सुपरमैसिव ब्लैक होल का पता लगाया है — मानक तारकीय विकास मॉडल की भविष्यवाणी से कहीं पहले। इनमें से कुछ ब्लैक होल, जैसे कि दूर की आकाशगंगा CAPERS-LRD-z9 में स्थित ब्लैक होल, बिग बैंग के मात्र 500 मिलियन वर्ष बाद ही लाखों सौर द्रव्यमानों पर भारी हो गए थे।
- पहले तारों के बीच अधिक ब्लैक होलः नासा के चंद्रा एक्स-रे वेधशाला और स्पिट्जर स्पेस टेलीस्कोप से प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि ब्लैक होल प्रारंभिक तारों में प्रचुर मात्रा में थे, जिससे ब्रह्मांडीय पृष्ठभूमि विकिरण में महत्वपूर्ण योगदान हुआ। इससे पता चलता है कि ब्लैक होल बाद में बड़े पैमाने पर मरने वाले तारों से नहीं बने थे - वे उस युग के दौरान पहले से ही आम थे जब प्रथम तारे ब्रह्मांड को प्रकाशित करते थे।
- -मॉन्स्टर स्टार्स पूर्ववर्ती के रूप में हैंः जेम्स वेब का उपयोग करने वाले खगोलविदों ने सूर्य के द्रव्यमान से हजारों गुना अधिक विशाल प्रारंभिक तारों के साक्ष्य की सूचना दी है, जिनके असामान्य रासायनिक हस्ताक्षर यह दर्शाते हैं कि वे गर्म जल गए थे और जल्दी ही ढह गए थे। ऐसे तारे प्रारंभिक ब्लैक होल के पूर्वज के रूप में कार्य कर सकते थे।

एक साथ, इन अवलोकनों से यह संकेत मिलता है कि ब्लैक होल-संबंधी वस्तुएं और प्रक्रियाएं ब्रह्मांडीय भोर में व्यापक रूप से फैली हुई थीं, भले ही सच्चे ब्लैक होल तारों के प्रत्यक्ष प्रमाण दुर्लभ हों।

यह क्यों मायने रखता है

यह समझना कि क्या ब्लैक होल सितारे वास्तव में मौजूद हैं, ब्रह्माण्ड विज्ञान की कुछ सबसे गहरी पहेलियों का उत्तर देने में मदद करता हैः

- सुपरमैसिव ब्लैक होल इतनी जल्दी कैसे बने? पारंपरिक मॉडल — जहां सामान्य तारे छोटे ब्लैक होल में ढह जाते हैं जो गैस जमा करके धीरे-धीरे बढ़ते हैं — बिग बैंग के एक अरब साल से भी कम समय बाद देखे गए सुपरमैसिव ब्लैक होल को समझाने के लिए संघर्ष करते हैं। यदि अर्ध-तारे या इसी प्रकार की विशाल प्रारंभिक वस्तुएं मौजूद होतीं, तो वे इन दिग्गजों को अधिक कुशलता से विकसित कर सकते थे।
- सबसे प्रारंभिक ब्रह्मांडीय प्रकाश को किस चीज ने शक्ति प्रदान की? गैस पर निर्भर ब्लैक होल एक्स-रे और इन्फ्रारेड उत्सर्जन उत्पन्न करते हैं। यदि ऐसी गतिविधि शुरू में ही आम होती, तो यह आज हम जो पृष्ठभूमि विकिरण देखते हैं, उसमें योगदान देती — तथा इस बारे में सुराग प्रदान करती कि पहली चमकदार संरचनाएं कैसे बनीं।
- आकाशगंगाएं और ब्लैक होल किस प्रकार सह-विकसित होते हैं? प्रारंभिक आकाशगंगाओं के भीतर छिपे हुए ब्लैक होल की खोज, जैसे कि जेम्स वेब द्वारा स्लिटिल रेड डॉटेड गैलेक्सीज़ में प्रकट किया गया है, से पता चलता है कि ब्लैक होल का विकास और आकाशगंगा विकास शुरू से ही गहराई से जुड़े हुए हैं।

शेष प्रश्न और भविष्य का अनुसंधान

प्रचुर मात्रा में प्रारंभिक ब्लैक होल गतिविधि के बढ़ते साक्ष्य के बावजूद, वास्तविक अर्ध-तारे — वस्तुओं की सीधे पुष्टि करना जो तारों की तरह व्यवहार करते हैं लेकिन ब्लैक होल कोर द्वारा संचालित होते हैं — एक चुनौती बनी हुई है। अब तक, वे मुख्यतः सैद्धांतिक संरचनाओं के रूप में मौजूद हैं, जिनका समर्थन अप्रत्यक्ष अवलोकन संबंधी संकेतों द्वारा किया जाता है।

भविष्य के दूरबीनों और सर्वेक्षणों — जिसमें गहरे अवरक्त अध्ययन, अगली पीढ़ी के एक्स-रे वेधशालाएं, और गुरुत्वाकर्षण तरंग डिटेक्टर शामिल हैं — से यह स्पष्ट होने की उम्मीद है कि क्या ये विदेशी वस्तुएं वास्तव में मौजूद थीं या वैकल्पिक मार्ग (जैसे प्रत्यक्ष पतन ब्लैक होल या तेजी से ब्लैक होल वृद्धि तंत्र) प्रारंभिक ब्रह्मांडीय रिकॉर्ड को बेहतर ढंग से समझाते हैं।

रिटायर्ड प्रिंसिपल एजुकेशनल कॉलमिस्ट एमिनेंट एजुकेशियन स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

विवाह, शगन के लिफाफे में बदलता रूप - एक समग्र विश्लेषण

डॉ. विजय गर्ग

विवाहः केवल एक समारोह नहीं है - यह रिवाज, आदब और खुशियों का मिश्रण है। लेकिन जैसे ही समाज में संसदीय बदलते हैं, वैसे ही शादी की रीतिएं, खास तौर पर शगन (महिमा और आशीषवाद के रूप में दी जाने वाली उपाधियाँ) और लिफाफों की प्रोथाओं में भी नए रूकावट देखने को मिल रहे हैं।

विवाह में शगन की परंपरा — एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि

पंजाब और भारत की कई परंपराओं में शगन मुख्य रूप से नकद/रुपये के रूप में दिया जाता है। यह एक व्यक्ति या व्यक्तिगत तौर पर मुहब्बत, आशीर्वाद और नए जीवन की शुरुआत के लिए शुभकामनाओं का प्रतीक होता है। शगन संस्कार विवाह समारोहों के महापुरुषों और रिश्तेदारों को दिया जाता है ताकि दो युवकों का जीवन सुखमय हो सके।

परिवर्तनकारी उलझनें: परिवर्तन कहां और कैसे हो रहा है?

डिजाइन और प्रस्तुति में नवीनता

पुराने समय में इसे केवल एक सामान्य लिफाफे के रूप में प्रस्तुत किया जाता था, लेकिन अब लिफाफे सादगी, डिजाइन और व्यक्तिगत व्यक्तित्व का हिस्सा बन गए हैं। आधुनिक शगन लिफाफे म्यूटेड शेड्स, मिन्ट ग्रीन, रोज़ गोल्ड जैसे रंगों, सिक्विनेस, फॉयल छपाई और उभरा हुआ विशेषताओं के साथ बनते हैं।

कई बार इन अनुसूचियों में दुल्हा-दुलहन का नाम,

विवाह की तारीख या व्यक्तिगत सपने भी छिपे होते हैं — यह रिवाज और भी अधिक व्यक्तिगत और यादगार बनाता है।

यह सिर्फ एक लिफाफा नहीं रहता है - यह अभिव्यक्तिपूर्ण सुनेहा, रिवाज और आनंददायी सुनेहे का संदेश है।

डिजिटल और सामाजिक मीडिया प्रभाव

आज की पीढ़ी सोशल मीडिया से जुड़ी हुई है, इसलिए शादी और शगन के रीति-रिवाजों में भी रचनात्मक उपयोग, फिल्टर, वीडियो और नई प्रस्तुति विधियां आ रही हैं। एक वायरल वीडियो के अनुसार, केरल में एक पिता ने शगन को डिजिटल रूप से लेने का नया तरीका अपनाया है, जिससे सोशल मीडिया पर उनकी रुचि बढ़ गई है।

सामाजिक भावना और आर्थिक स्थिति

आर्थिक स्थिति और सामाजिक जागरूकता के कारण भी शगेन रूझान बदल रहे हैं:

कुछ संगठनों ने मनुष्यों को सहायता प्रदान करने के लिए निर्धारित राशि देने वालों की ओर जाने का प्रस्ताव रखा है - उदाहरण के तौर पर जरूरतमंद परिवारों की लड़कियों की शादी के अवसर ₹5,100 शगन का फ़ैसला किया गया।

कई शादियों में विलासितापूर्ण व्यवहार और प्रदर्शनकारी तरीके अपनाए जा रहे हैं, जिसके साथ शगन लिफाफे केवल रकमान के विचार से एक कलात्मक और संरेखण के लिए एक आकर्षक तत्व बन गया है। शादी के रुझानः यह सिर्फ लिफाफे नहीं है, बल्कि एक अनुभव भी है

समय के साथ, समारोहों में दी जाने वाली भोज-भोज भी केवल पैसे से अधिक रही हैं।

कई बार मेहमानों को डिजिटल रजिस्टर, कूपन, एक्सपीरियंस वाउचर या महंगे यादगार उपहार दिए जाते हैं जो जीवन की यादों में लंबे समय तक बने रहते हैं।

यह सोच पुरानी अनुमति को एक नई व्याख्या दे रही है, जहां अतिथि और जोड़े के लिए शगन का अर्थ और भी अधिक मायने रखता है। नसिकर्ष

विवाह और शगुन के रीति-रिवाज बदलते समाज और आधुनिक पीढ़ी की सोच का प्रतिबिंब हैं:

पैसे देने का रिवाज अभी भी कायम है, लेकिन अब यह एक संगत कला और सुनेहा भी बन गया है। लिफाफे के निर्माण और डिजाइन नई पीढ़ी की पसंद और रुचि को दर्शाते हैं। डिजिटल रुझान और सामाजिक साझाकरण ने इस रिवाज को अधिक रचनात्मक और व्यक्तिगत बना दिया है।

इस प्रकार, परंपराओं में सम्मान और भावना मौजूद है — लेकिन वे समय के साथ क्षमता, कौशल और मानवीय अनुभव को भी अपना लेते हैं।

सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य शैक्षिक स्तंभकार मलोट पंजाब

हम कैसे सोचते हैं: मानव मन के अदृश्य इंजन के अंदर

डॉ विजय गर्ग

सोचना सबसे साधारण काम है जो हम करते हैं - और सबसे रहस्यमय। गणित की समस्या को हल करने से लेकर सहानुभूति महसूस करने तक, त्वरित निर्णय लेने से लेकर भविष्य की कल्पना करने तक जो अभी तक मौजूद नहीं हैं, हमारी सोच चुपचाप हमारे जीवन के हर पल को आकार देती है। फिर भी हम शायद ही कभी यह जानने के लिए रुकते हैं कि हम कैसे सोचते हैं।

आधुनिक विज्ञान, मनोविज्ञान और दर्शन अब एक सत्य पर सहमत हैं: मानव सोच एक एकल प्रक्रिया नहीं है, बल्कि एक साथ काम करने वाली परतों की एक जटिल प्रणाली है।

विचार की दो गति

मनोवैज्ञानिक अक्सर सोच को दो गति से संचालित करने के रूप में वर्णित करते हैं।

तीव्र सोच स्वचालित और सहज है। यह हमें चेहरों को पहचानने, भावनाओं को पढ़ने या खतरे पर तुरंत प्रतिक्रिया करने में मदद करता है। इस प्रकार की सोच हमें जीवित रखने के लिए विकसित हुई। यह पैटर्न, आदतों और पिछले अनुभवों पर निर्भर करता है।

धीमी सोच जानबूझकर और विश्लेषणात्मक होती है। यह तब लागू होता है जब हम अपनी धारणाओं की गणना करते हैं, योजना बनाते हैं या उन पर सवाल उठाते हैं। सोचने का यह रूप श्रमसाध्य और ऊर्जा-उपभोग करने वाला है, यही कारण है कि जब तक आवश्यक न हो, हमारा मस्तिष्क इसका उपयोग करने से बचने की कोशिश करता है।

दोनों सिस्टम आवश्यक हैं। लेकिन समस्याएं तब उत्पन्न होती हैं जब तीव्र सोच उन स्थितियों पर हावी हो जाती है जिनमें सावधानीपूर्वक तर्क की आवश्यकता होती है, जिससे पूर्वाग्रह, रूढ़िवादिता और खराब निर्णय सामने आते हैं।

मस्तिष्क: कंप्यूटर नहीं, बल्कि कहानीकार

कंप्यूटर के विपरीत, मानव मस्तिष्क केवल डेटा को संसाधित नहीं करता है। यह इसकी व्याख्या करता है। हम कहानियों, रूपकों और भावनाओं में सोचते हैं। जब अधूरी जानकारी का सामना करना पड़ता है, तो मस्तिष्क अक्सर अनजाने में अंतराल को भर देता है।

यही कारण है कि दो लोग एक ही घटना को देख सकते हैं और उसे अलग-अलग तरीके से याद कर सकते हैं। स्मृति कोई रिकॉर्डिंग नहीं है; यह एक पुनर्निर्माण है। हर बार जब हम कुछ याद करते हैं, तो हम भावनाओं और विश्वासों से प्रभावित होकर उसे फिर से लिख देते हैं।

भावना और विचार अविभाज्य हैं

सदियों से, कारण और भावना को विपरीत माना जाता था। आज, तंत्रिका विज्ञान दिखाता है कि वे गहराई से जुड़े हुए हैं। भावना के बिना, सोच बाधित हो जाती है।

मस्तिष्क के भावनात्मक केंद्रों को नुकसान पहुंचाने वाले मरीज़ सरल निर्णय लेने में भी संघर्ष करते हैं - इसलिए नहीं कि उनमें बुद्धि की कमी है, बल्कि इसलिए क्योंकि भावनाएं मूल्य और दिशा

प्रदान करती हैं। भावना हमें चुनने में मदद करती है।

रोजमर्रा की जिंदगी में, इसका मतलब यह है कि हमारी राय, नैतिक निर्णय और यहां तक कि तार्किक तर्क अक्सर पहले भावनाओं द्वारा निर्देशित होते हैं, और बाद में तर्क द्वारा उचित ठहराया जाता है।

डिजिटल युग में सोच

प्रौद्योगिकी हमारी सोच को नया रूप दे रही है। निरंतर सूचनाएं, लघु वीडियो और अंतहीन स्क्रॉलिंग गहरी चिंतन के बजाय त्वरित प्रतिक्रियाओं को प्रोत्साहित करती हैं। ध्यान खंडित हो गया है, और जटिल विचारों के लिए धैर्य कम होता जा रहा है।

साथ ही, डिजिटल उपकरण हमारी संज्ञानात्मक पहुंच का विस्तार करते हैं - जिससे हमें जानकारी तक पहुंचने, वैश्विक स्तर पर सहयोग करने और समस्याओं को पहले से कहीं अधिक तेजी से हल करने की अनुमति मिलती है।

चुनौती संतुलन की है: सोच को समर्थन देने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना, न कि उसे प्रतिस्थापित करना।

बेहतर सोचना सीखना

अच्छी सोच स्वचालित नहीं है - यह एक कौशल है।

जो शिक्षा प्रणालियां केवल सही उत्तरों पर ही ध्यान केंद्रित करती हैं, वे गहरे लक्ष्य से चूक जाती हैं: यह सिखाना कि कैसे सोचना है, न कि क्या सोचना है।

मानव विचार का भविष्य

जैसे-जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता अधिक सक्षम होती जाएगी, मानव सोच का मूल्य गणना में कम और रचनात्मकता, सहानुभूति, नैतिकता और ज्ञान में अधिक निहित होगा।

मशीनें सूचना को संसाधित कर सकती हैं। मनुष्य इसे अर्थ देते हैं।

यह समझना कि हम कैसे सोचते हैं, बेहतर सोचने की दिशा में पहला कदम है - न केवल व्यक्तिगत रूप से, बल्कि एक समाज के रूप में।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

आस्था बनाम साँसें: कबूतर, कानून और हमारी सामूहिक गैर-जिम्मेदारी

— डॉ. सत्यवान सौरभ

भारत में आस्था अक्सर तर्क से बड़ी हो जाती है। यही कारण है कि यहाँ मंदिर के बाहर घंटियों की आवाज़ से ज़्यादा तेज़ कभी-कभी साँसों की घुटन होती है, लेकिन हम सुनना नहीं चाहते। मुंबई की एक अदालत का हालिया फैसला—जिसमें सार्वजनिक स्थान पर कबूतरों को दाना डालने पर ₹5000 का जुर्माना लगाया गया—इसी टकराव की एक स्पष्ट और साहसी मिसाल है। यह फैसला कबूतरों के खिलाफ नहीं, बल्कि उस मानसिकता के खिलाफ है जो भावुकता के नाम पर विज्ञान, कानून और सार्वजनिक स्वास्थ्य को कुचल देती है।

हमारे समाज में कबूतरों को दाना डालना "पुण्य" माना जाता है। सुबह-सुबह बालकनी, छत या पार्क में मुट्ठी भर दाना डालकर आत्मसंतोष पा लिया जाता है—मानो किसी बड़ी मानवता की सेवा हो गई हो। लेकिन सवाल यह है कि क्या बिना परिणाम समझे किया गया कर्म सच में दया कहलाता है? चिकित्सा विज्ञान लगातार चेतावनी देता रहा है कि कबूतरों की सूखी बीट हवा में घुलकर क्रिप्टोकोकोसिस, हिस्टोप्लास्मोसिस, हाइपरसेंसिटिविटी न्यूमोनाइटिस और साल्मोनेला जैसी जानलेवा बीमारियाँ फैला सकती है। ये बीमारियाँ कोई काल्पनिक डर नहीं हैं, बल्कि अस्पतालों में भर्ती असली मरीज़ों की सच्ची कहानियाँ हैं। दमा, फेफड़ों के रोगी, बुज़ुर्ग और बच्चे—सबसे पहले इन्हीं की साँसें दांव पर लगती हैं।

मुंबई की अदालत ने इस मामले को केवल नगर निगम के आदेश के उल्लंघन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे सीधे-सीधे जनस्वास्थ्य के लिए खतरा माना। IPC की धाराओं के तहत सज़ा यह संकेत देती है कि अब राज्य सिर्फ बीमारियों का इलाज नहीं करना चाहता, बल्कि बीमारी पैदा करने वाली सामाजिक आदतों को भी रोकना चाहता है। यह देश में पहली बार हुआ है कि कबूतरों को दाना डालने जैसे सामाजिक रूप से स्वीकृत कृत्य को अपराध की श्रेणी में रखा गया है। यह फैसला बताता है कि कानून अब भावनाओं से नहीं, उनके प्रभावों से संवाद करेगा।

इस पूरे विवाद में सबसे असहज सवाल धर्म और परंपरा से जुड़ा है। कुछ लोग इसे आस्था पर हमला बता रहे हैं, लेकिन क्या धर्म कभी बीमारी फैलाने की अनुमति देता है? क्या किसी भी धार्मिक ग्रंथ में यह लिखा है कि पुण्य कमाने के लिए दूसरों की जान जोखिम में डाल दी जाए? खुद सरकार और स्वास्थ्य एजेंसियाँ साफ़ कह चुकी हैं कि कबूतरों को दाना खिलाना कोई धार्मिक अनिवार्यता नहीं है, फिर भी विरोध जारी है। दरअसल यह विरोध आस्था का नहीं, ज़िद का है—अपनी आदतें न बदलने की ज़िद।

शहर अब गाँव नहीं रहे। घनी आबादी, ऊँची इमारतें, सीमित हवा और साझा स्थानों के बीच एक छोटी सी लापरवाही बड़े संकट में बदल जाती है। बालकनी में डाला गया दाना सिर्फ कबूतरों को नहीं बुलाता, बल्कि उनके साथ बीमारी, गंदगी और संक्रमण की पूरी श्रृंखला भी खड़ी कर देता है। विडंबना यह है कि वही लोग जो मास्क, वैक्सीन और वैज्ञानिक चेतावनियों पर सवाल उठाते हैं, वे पुण्य के नाम पर शहरों को जैविक कचरे का अड्डा बना देते हैं।

इस बहस में यह स्पष्ट कर देना ज़रूरी है कि कबूतर दोषी नहीं हैं। वे तो अपने स्वभाव के अनुसार जी रहे हैं। दोषी हम हैं—हमारी अवैज्ञानिक भावुकता, हमारी सुविधा की आस्था और हमारी सामूहिक गैर-जिम्मेदारी। अगर सच में दया करनी है तो नियंत्रित, सुरक्षित और वैज्ञानिक तरीकों से कीजिए—पशु कल्याण संगठनों के माध्यम से, खुले सार्वजनिक स्थलों पर नहीं।

मुंबई अदालत का यह फैसला हमें साफ़ संदेश देता है कि आस्था निजी हो सकती है, लेकिन उसका असर सार्वजनिक जीवन को बीमार नहीं कर सकता। दया का मतलब नुकसान पहुँचाना नहीं होता और कानून अब इस फर्क को समझने लगा है। यह फैसला सिर्फ एक शहर या एक मामले तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरे देश के लिए चेतावनी है कि अगर हमने समय रहते अपनी आदतें नहीं बदलीं, तो आने वाले समय में "आस्था" भी अदालत के कटघरे में खड़ी होगी।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम पुण्य को नए सिरे से परिभाषित करें। वह कर्म पुण्य नहीं हो सकता जो किसी बच्चे की साँस छीन ले। वह आस्था पवित्र नहीं हो सकती जो अस्पतालों की कतारें बढ़ा दे। मुंबई अदालत का यह फैसला कबूतरों के खिलाफ नहीं, बल्कि बेहिसाब भावुकता के खिलाफ है। यह याद दिलाने के लिए कि इंसान होने की पहली शर्त है—दूसरे इंसान की ज़िंदगी का ख़याल। अगर आस्था सच में सच्ची है, तो उसे विज्ञान से डर नहीं लगेगा।

राष्ट्रीय स्मारक: विरासत का सम्मान या वैचारिक वर्चस्व की जंग?

ओंकारेश्वर पांडेय

दो दिन पहले लखनऊ में २५ दिसंबर २०२५ को जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 'राष्ट्र प्रेरणा स्थल' का लोकार्पण किया तो यह केवल एक भव्य इमारत का उद्घाटन नहीं था। यह उस निरंतर चल रहे 'स्मृति-युद्ध' (Memory War) का एक और अध्याय था, जो पिछले एक दशक से भारतीय राजनीति के केंद्र में है। ६5 एकड़ में फैला और लगभग ३२0 करोड़ रुपये की लागत से बना यह स्मारक परिसर सत्ताधारी दल के लिए अपनी वैचारिक जड़ों को सींचने का स्थान हो सकता है, लेकिन यह लोकतंत्र के सामने कुछ गंभीर और मौलिक प्रश्न भी छोड़ता है। क्या हमारे राष्ट्रनायकों का सम्मान अब केवल उनके 'कद' पर नहीं बल्कि मौजूदा सत्ता के साथ उनकी 'वैचारिक ट्यूनिंग' पर निर्भर करेगा?

भव्यता का अर्थशास्त्र और सादगी का अंत

इस स्मारक ने वित्तीय पैमानों पर भी एक नई बहस छेड़ी है। सबसे पहला और सीधा सवाल इसके आर्थिक पैमाने को लेकर है। भाजपा अक्सर पूर्ववर्ती सरकारों, खासकर मायावती और कांग्रेस पर 'मूर्तियों और स्मारकों' के नाम पर जनता की कमाई लुटाने का आरोप लगाती रही है लेकिन लखनऊ का यह 'प्रेरणा स्थल' उसी राह पर बहुत तेजी से आगे बढ़ता दिख रहा है।

यदि हम आंकड़ों की गहराई में जाएं तो एक चौंकाने वाला अंतर नजर आता है। दिल्ली के राजघाट पर महात्मा गांधी की समाधि 1948-1951 के बीच मात्र 10 लाख रुपये में बनी थी जिसकी आज की मुद्रास्फीति के हिसाब से कीमत लगभग 10-1२ करोड़ रुपये बैठती है। इसी तरह जवाहरलाल नेहरू का 'शांतिवन' और इंदिरा गांधी का 'शक्तिस्थल' भी तत्कालीन समय में बेहद सीमित खर्च और अत्यधिक सादगी के साथ बनाए गए थे। ये स्मारक केवल पत्थर के ढेर नहीं थे बल्कि उस कालखंड की सादगी और राष्ट्र निर्माण के प्रति गंभीरता के प्रतीक थे। इसके विपरीत अकेले करीब ६5 एकड़ में फैले लखनऊ के इस परिसर पर ३२0 करोड़ रुपये खर्च करना क्या वाकई न्यायोचित है? जब देश महंगाई और बेरोजगारी जैसे गंभीर संकटों से जूझ रहा हो, तब क्या अटल जी जैसे सादगी पसंद नेता के लिए कंक्रीट का यह भव्य महल बनाना उनके ही सिद्धांतों के साथ न्याय है? स्पष्ट है कि स्मारक निर्माण के बजट और भव्यता के पैमाने बदल गए हैं।

'प्रधानमंत्री संग्रहालय' और नेहरू की विरासत का प्रश्न

यही प्रवृत्ति हमें दिल्ली के तीन मूर्ति भवन में भी दिखाई देती है। 'नेहरू मेमोरियल म्यूज़ियम एंड लाइब्रेरी' (NMML) को बदलकर 'प्रधानमंत्री संग्रहालय' (PMML) करने का फैसला केवल नाम बदलने तक सीमित नहीं था। नेहरू, जो इस देश के पहले प्रधानमंत्री और स्वतंत्रता संग्राम के सबसे बड़े नायकों में से एक थे, उनके ऐतिहासिक निवास को एक सामान्य गैलरी में बदल देना उनकी विशिष्ट विरासत को धुंधला करने के प्रयास के रूप में देखा जा रहा है।

विडंबना देखिए कि प्रधानमंत्री मोदी ने इस संग्रहालय में अपनी भी एक गैलरी सुरक्षित कर ली है। इतिहास हमेशा किसी व्यक्तित्व के विदा होने के बाद उसकी समीक्षा करता है और फिर उसे स्मारक में स्थान मिलता है लेकिन जीवित रहते हुए ही खुद का स्मारक बनवाना एक ऐसी परिपाटी है जो लोकतंत्र से ज्यादा व्यक्ति-पूजा की ओर संकेत करती है। क्या सत्ता को यह डर है कि भविष्य में आने वाली सरकारें उनकी स्मृतियों को वह स्थान नहीं देंगी जो वे आज खुद तय कर रहे हैं?

चयनात्मक स्मृति: कौन अपना, कौन पराया?

प्रधानमंत्री ने उद्घाटन भाषण में 'सबका सम्मान' करने का दावा किया और कांग्रेस पर 'परिवारवाद' का आरोप लगाया लेकिन जब हम 'राष्ट्र प्रेरणा स्थल' को देखते हैं, तो वहां केवल भाजपा की वैचारिक त्रिमूर्ति—वाजपेयी, मुखर्जी और उपाध्याय—नजर आते हैं। यदि यह वाकई 'राष्ट्र' का प्रेरणा स्थल है तो इसमें उत्तर प्रदेश की धरती से निकले अन्य महापुरुषों जैसे राम मनोहर लोहिया, चौधरी चरण सिंह, चंद्रशेखर या वीपी सिंह, कांशी राम, मुलायम सिंह आदि को स्थान क्यों नहीं मिला? क्या नेहरू-गांधी परिवार को कोसते हुए हम खुद भी उसी 'चयनात्मक राजनीति' का शिकार नहीं हो रहे हैं? फिर तो इसे राष्ट्र का प्रेरणा स्थल नहीं, भाजपा का प्रेरणा स्थल कहा जाना चाहिए।

भाजपा के मार्गदर्शक मंडल में शामिल मुरली मनोहर जोशी का योगदान भी कम नहीं है लेकिन उनकी उपस्थिति इन प्रतीकों में कहीं नहीं दिखती। यह स्पष्ट करता है कि इन स्मारकों का उद्देश्य श्रद्धा कम और राजनीतिक संदेश देना ज्यादा है।

डॉ. मनमोहन सिंह और स्मारक का नया 'ट्रस्ट मॉडल'

दोहरा मापदंड तब और स्पष्ट हो जाता है जब हम पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के प्रति दिखाए गए व्यवहार की तुलना करते हैं।

रामानंद सागर : भारतीय दूरदर्शन के स्वर्णिम युग के शिल्पकार

-सुनील कुमार महला

भारतीय टेलीविजन के सांस्कृतिक शिल्पकार, निर्माता-निर्देशक रामानंद सागर को आखिर कौन नहीं जानता? उनका जन्म लाहौर के नजदीक असल गुरु नामक स्थान पर २९ दिसम्बर 1917 को एक धनाढ्य परिवार में हुआ था। उनका मूल नाम चंद्रधर शर्मा था।वे भारतीय टेलीविजन और सिनेमा जगत की ऐसी शख्सियत/नाम व जीवंत किंवदंती हैं, जिन्होंने अपनी रचनात्मकता से भारतीय संस्कृति और धार्मिक चेतना को जन-जन तक पहुँचाया। विकीपीडिया पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार उन्हें उनकी नानी ने गोद ले लिया था तथा पहले उनका नाम चंद्रमौली था, लेकिन नानी ने उनका नाम बदलकर रामानंद रख दिया। जानकारी के अनुसार दहेज लेने का विरोध करने के कारण उन्हें घर से बाहर कर दिया गया था और इसके साथ ही उनका जीवन संघर्ष आरंभ हो गया। उन्होंने पढ़ाई जारी रखने के लिए ट्रक क्लीनर और चपरासी की नौकरी की। वे दिन में काम करते और रात को पढ़ाई। मेधावी होने के कारण उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय [पाकिस्तान] से स्वर्ण पदक मिला और फारसी भाषा में निपुणता के लिए उन्हें मुंशी फज़ल के खिताब से नवाजा गया।करियर की शुरुआत उन्होंने लेखक और पत्रकार के रूप में की, लेकिन बाद में फिल्म और टेलीविजन के माध्यम से उन्होंने अपनी अलग पहचान बनाई। बंटवारे के समय 1947 में वे भारत आ गए थे तथा मुंबई को अपनी कर्मभूमि बनाया।

पारिवारिक जीवन और रामायण की लोकप्रियता:-

रामानंद सागर का पारिवारिक जीवन सादगी और संस्कारों से भरा हुआ था। उनके परिवार में साहित्य, संस्कृति और कला के प्रति गहरी रुचि रही। उनके पुत्र प्रेम सागर ने पिता की विरासत को आगे बढ़ाते हुए फिल्म और टेलीविजन के क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाई और सागर आर्ट्स के माध्यम से कई धार्मिक व पौराणिक धारावाहिकों का निर्माण किया। रामानंद सागर का परिवार आज भी भारतीय संस्कृति, परंपरा और आध्यात्मिक मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने के कार्य में योगदान देता आ रहा है।जब वे भारत आए, उस समय उनके पास संपत्ति के रूप में महज पांच आने थे। भारत में वह फिल्म क्षेत्र से जुड़े और 1950 में खुद की प्रोडक्शन कंपनी 'सागर आर्ट्स' बनाई, जिसकी पहली फिल्म मेहमान थी। वर्ष 1985 में वह छोटे परदे की दुनिया में उतर गए तथा वर्ष 1987 में प्रसारित धारावाहिक 'रामायण' ने उन्हें अपार लोकप्रियता दिलाई और यह भारतीय टीवी इतिहास का सबसे यादगार कार्यक्रम बन गया। रामायण के प्रसारण के समय पूरा देश मानो थम सा जाता था और लोग इसे श्रद्धा के साथ देखते थे। गौरतलब है कि धारावाहिक रामायण की लोकप्रियता भारतीय टेलीविजन के इतिहास में अभूतपूर्व मानी जाती है। रामानंद सागर द्वारा निर्मित यह धारावाहिक जब पहली बार २५ जनवरी 1987 से 31 जुलाई 1988 के बीच दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ, तब हर रविवार देश मानो थम-सा जाता था। बुज़ुर्ग बताते हैं कि उस समय 80-90 प्रतिशत तक टीवी दर्शक रामायण देखते थे। कई स्थानों पर लोग टीवी के सामने दीप तक जलाते थे, प्रसारण के समय सड़कें सूनी हो जातीं थीं और गाँव-शहरों में सामूहिक रूप से इसे देखा जाता था। इसे केवल एक धारावाहिक नहीं, बल्कि आस्था और संस्कृति का उत्सव माना गया। दूसरे शब्दों में कहें तो वर्ष 1987-88 में दूरदर्शन पर प्रसारित धारावाहिक 'रामायण' ने भारतीय टीवी इतिहास में क्रांति ला दी थी। उस समय यह धारावाहिक केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि एक सांस्कृतिक आंदोलन बन गया। रामायण के प्रसारण के समय लोग टीवी के सामने दीप जलाकर बैठते थे, दुकानों और सड़कों पर सन्नाटा छा जाता था और पूरा देश एक साथ इस महाकाव्य को देखता था। इससे न केवल रामकथा घर-घर पहुँची, बल्कि समाज में नैतिकता, मर्यादा और आदर्शों पर नई चर्चा शुरू हुई।

लॉकडाउन के समय रामायण का टेलीविजन पर पुन: प्रसारण:-

रामायण की भारी व बड़ी लोकप्रियता के चलते इसे टेलीविजन पर २८ मार्च २०२० को फिर से शुरू किया गया। यह प्रसारण कोरोना महामारी के दौरान देशव्यापी लॉकडाउन के समय दूरदर्शन के राष्ट्रीय चैनल डीडी नेशनल पर किया गया। आश्चर्यजनक रूप से, तीन दशक बाद भी इस धारावाहिक ने रिकॉर्ड तोड़ लोकप्रियता हासिल की और यह दुनिया के सबसे ज्यादा देखे जाने वाले धारावाहिकों में शामिल हो गया।इस प्रकार, रामायण की लोकप्रियता समय, पीढ़ी और माध्यम की सीमाओं को पार करते हुए आज भी उतनी ही जीवंत बनी हुई है। यहां पाठकों को यह भी बताता चलूं कि रामानंद जी को लोग तुलसी जी का अवतार मानने लगे थे।सीमित संसाधनों और साधारण तकनीक के बावजूद रामानंद सागर ने कथा, संवाद और भावनाओं के बल पर दर्शकों के मन में गहरी छाप छोड़ी। इसके अलावा 'कृष्णा', 'विक्रम और बेताल' तथा 'अलिफ़ लैला', 'दादा-दादी की कहानियां', 'जय गंगा मैया' जैसे धारावाहिकों के माध्यम से भी उन्होंने पौराणिक और लोककथाओं को आमजन के बीच लोकप्रिय बनाया। उन्होंने २२ छोटी कहानियां, तीन वृहत लघु कहानी, दो क्रमिक कहानियां और दो नाटक लिखे। उन्होंने इन्हें अपने तखल्लुस चोपड़ा, बेदी और कश्मीरी के नाम से लिखा लेकिन बाद में वह सागर तखल्लुस के साथ हमेशा के लिए रामानंद सागर बन गए। बाद में उन्होंने अनेक फिल्मों और टेलिविजन धारावाहिकों के लिए भी पटकथाएँ लिखी। उन्हें 1960 (फिल्म फेयर पुरस्कार) (सर्वश्रेष्ठ डायलोग), फिल्म (पैगाम), -(1968)-(फिल्म फेयर पुरस्कार)-(सर्वश्रेष्ठ निर्देशक), फिल्म (आंखें) के लिए पुरस्कार/सम्मान भी प्राप्त हुए।

रामानंद सागर ने मनोरंजन को भारतीय संस्कृति, आस्था और मूल्यों से जोड़ा:-

अंत में यही कहूंगा कि रामानंद सागर जी भारतीय सिनेमा और टेलीविजन के इतिहास में एक ऐसे युगद्रष्टा रचनाकार के रूप में स्मरण किए जाते हैं, जिन्होंने मनोरंजन को भारतीय संस्कृति, आस्था और मूल्यों से जोड़कर प्रस्तुत किया।देश विभाजन की पीड़ा और विस्थापन का प्रभाव उनके लेखन और सोच में आजीवन दिखाई देता है। वास्तव में, उनके उपन्यासों और कहानियों में सामाजिक यथार्थ, मानवीय संवेदनाएँ और नैतिक मूल्य प्रमुख रूप से उभरते हैं।हालांकि, सिनेमा में उन्हें सम्मान मिला, लेकिन उनका असली योगदान टेलीविजन के माध्यम से सामने आया।रामानंद सागर जी की विशेषता यह थी कि उन्होंने सीमित तकनीक, साधारण सेट और कम संसाधनों के बावजूद कथा, संवाद और भावनाओं के बल पर दर्शकों को बाँधे रखा। वे भव्यता से अधिक आत्मा और श्रद्धा पर विश्वास करते थे। रामायण' की अपार सफलता के बाद उन्होंने 'कृष्णा' धारावाहिक के माध्यम से भगवान कृष्ण के जीवन और दर्शन को सरल भाषा में प्रस्तुत किया। १२ दिसंबर २००5 को उनके निधन के बाद भी उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और नई पीढ़ी को भारतीय परंपरा, इतिहास और आध्यात्मिक मूल्यों से जोड़ने का कार्य कर रही हैं। उनके द्वारा रचित और निर्देशित धारावाहिक आज भी यह सिद्ध करते हैं कि सच्ची कथा और सशक्त भावनाएँ समय की सीमाओं से परे होती हैं।निष्कर्ष के तौर पर हम यहां यह कह सकते हैं कि रामानंद सागर भारतीय टेलीविजन और सिनेमा के ऐसे युगपुरुष थे, जिन्होंने मनोरंजन को केवल समय काटने का साधन नहीं रहने दिया, बल्कि उसे सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक प्रेरणा से जोड़ा।उनको इतिहास और धर्मग्रंथों का गहरा अध्ययन था। उन्होंने रामायण धारावाहिक बनाने से पहले वर्षों तक वाल्मीकि रामायण, तुलसीदास की रामचरितमानस और अन्य ग्रंथों का तुलनात्मक अध्ययन किया। यही कारण है कि उनकी रामायण को आज भी 'सबसे प्रामाणिक' माना जाता है। वे सेट पर कलाकारों को सिर्फ संवाद नहीं, बल्कि पात्रों का आचार, व्यवहार और जीवन-दृष्टि भी समझाते थे। रोचक तथ्य यह भी है कि रामानंद सागर ने रामायण में तकनीक से ज्यादा भाव और मर्यादा को महत्व दिया।वे स्वयं को कभी स्टार निर्माता नहीं मानते थे, बल्कि 'कथावाचक' कहलाना पसंद करते थे।रामायण जैसे महाकाव्य धारावाहिक के माध्यम से उन्होंने घर-घर में भारतीय परंपरा, आदर्श जीवन मूल्यों और मर्यादा की भावना को पुन: स्थापित किया। एक और खास बात यह थी कि वे अपने काम को ईश्वर की सेवा मानते थे। रामायण की सफलता के बाद भी उन्होंने किसी तरह का अहंकार नहीं अपनाया और हमेशा यह कहा कि 'यह सब प्रभु राम की कृपा है, मेरी नहीं।' यही विनम्रता और साधना-भाव उन्हें एक साधारण फिल्मकार से कहीं अधिक, एक सांस्कृतिक युगपुरुष बनाती है।उनका रचनात्मक दृष्टिकोण, गहन शोध, सरल प्रस्तुति और श्रद्धा से भरा निर्देशन आज भी अप्रतिम है। रामानंद सागर ने यह सिद्ध कर दिया कि टेलीविजन केवल दृश्य माध्यम नहीं, बल्कि समाज को दिशा देने की शक्ति भी रखता है। भारतीय जनमानस में उनका योगदान अमिट है और आने वाली पीढ़ियों के लिए वे सदैव प्रेरणास्रोत बने रहेंगे।

बीजेडी सुप्रीमो पार्टी कार्यकर्ताओं की लिस्ट का ऐलान

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : BJD सुप्रीमो नवीन पटनायक ने बीजू युवा जनता दल और बीजू जनता दल के कार्यकर्ताओं के नामों की घोषणा की है। युवा संगठन के लिए 160 और छात्र संगठन के लिए 145 कार्यकर्ताओं की लिस्ट जारी की गई है। नवीन ने स्थापना दिवस के बाद लिस्ट की घोषणा की।इसी तरह, सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को 11 ऑर्गेनाइज़ेशनल डिस्ट्रिक्ट की लिस्ट जारी की।इन जिलों में सुंदरगढ़, क्योंझर, कालाहांडी, कंधमाल, बौध, गजपति, अंगुल, मलकानगिरी, सोनपुर, झारसुगुड़ा और देवगढ़ शामिल हैं। बौध जिले के लिए 8 वाइस-प्रेसिडेंट, 9 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 17 सेक्रेटरी अपॉइंट किए गए हैं। कंधमाल के लिए 8 वाइस-प्रेसिडेंट, 21 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 20 सेक्रेटरी अपॉइंट किए गए हैं, देवगढ़ जिले के लिए 4 वाइस-प्रेसिडेंट, 4 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 8 सेक्रेटरी अपॉइंट किए गए हैं। गजपति जिले के लिए 13 वाइस-प्रेसिडेंट, 12 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 14 सेक्रेटरी अपॉइंट किए गए हैं। क्योंझर जिले के लिए 14 वाइस-प्रेसिडेंट, 29 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 5 सेक्रेटरी अपॉइंट किए गए हैं। अंगुल जिले में 10 वाइस-प्रेसिडेंट, 12 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 16 लोगों को सेक्रेटरी बनाया गया है। मलकानगिरी में 2 वाइस-प्रेसिडेंट, 9 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 19 लोगों को सेक्रेटरी बनाया गया है। सुंदरगढ़ जिले में 12 वाइस-प्रेसिडेंट, 11 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 22 लोगों ने सेक्रेटरी का चार्ज लिया है। झारसुगुड़ा जिले में 7 वाइस-प्रेसिडेंट, 4 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 14 लोगों ने सेक्रेटरी का चार्ज लिया है। कालाहांडी के लिए 9 वाइस-प्रेसिडेंट, 9 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 31 लोगों को सेक्रेटरी बनाया गया है। सोनपुर के लिए 11 वाइस-प्रेसिडेंट, 12 जनरल सेक्रेटरी, एक ट्रेजरर और 25 लोगों को सेक्रेटरी बनाया गया है।

पुरी और भुवनेश्वर में ट्रेन यातायात दोगुना होगा

मनोरंजन सासमल, स्टेट हेड
ओड़िशा

भूबनेश्वर : अगले पांच सालों में, यानी 2030 तक भुवनेश्वर, पुरी और विशाखापत्तनम में रेलवे की कैपेसिटी दोगुनी कर दी जाएगी। इसके लिए, ज़रूरी इंफ्रास्ट्रक्चर को अपग्रेड करने का काम चल रहा है, रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने बताया। उन्होंने कहा कि पुरी में मौजूदा 6 लाइनों के साथ 2 और पूरी लंबाई वाली इंटीग्रेटेड पिट लाइनें बन रही हैं।पूरी कोचिंग मेंटेनेंस फैसिलिटी को मंज़ूर पुरी-कोणार्क नई लाइन पर एक नए दूसरे कोचिंग टर्मिनल डिपो में शिफ्ट करने का प्रस्ताव है। इसके अलावा, इस लाइन पर एक बड़े लेवल का कोचिंग कॉम्प्लेक्स बनाने का प्लान है। नए भुवनेश्वर स्टेशन को एक सैटेलाइट कोचिंग टर्मिनल के तौर पर डेवलप किया जा रहा है, जिसमें 2 पिट लाइनों के लिए मेंटेनेंस फैसिलिटी और मंचेश्वर में डेडिकेटेड कनेक्टिविटी शामिल है। जगह की कमी के कारण, नया डिपो पास के इलाके में बनाने का प्रस्ताव है।

विशाखापत्तनम में 5 और लाइनों, 6 और पैसेंजर प्लेटफॉर्म, 10 स्टेबलिंग लाइनों और इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग देने वाले यार्ड को बदलने के लिए रेलवे बोर्ड को एक DPR सबमिट किया गया है। प्रस्तावित कोट्टावलसा-अंकापल्ली बाईपास लाइन पर जगन्नाथपुरम स्टेशन को एक बड़े कॉम्प्लेक्स के तौर पर प्लान किया गया है जो एक मेगा कोचिंग मेंटेनेंस डिपो और सैटेलाइट स्टेशन के तौर पर काम करेगा। ट्रेनों की आवाजाही बढ़ाने के लिए, पुरी इलाके में ऑटोमैटिक ब्लॉक सिग्नलिंग और फ्लाईओवर, भुवनेश्वर इलाके में पिट लाइन का इलेक्ट्रिफिकेशन, सिक्योरिटी फेंसिंग, चौथी लाइन के साथ बाईपास का सर्वे और विशाखापत्तनम इलाके में कई तीसरी, चौथी, पांचवीं, छठी लाइन, फ्लाईओवर और बाईपास प्रोजेक्ट्स समेत कई कैपेसिटी बढ़ाने के प्रोजेक्ट्स पर काम चल रहा है। मंत्री ने बताया कि इंडियन रेलवे द्वारा पहचाने गए 48 बड़े शहरों में से भुवनेश्वर, पुरी और विशाखापत्तनम के लिए एक बड़ा प्लान लागू किया जा रहा है।

आर्कटिक अलार्म: बढ़ती गर्मी, पिघलता भविष्य

[डूबते गांव, पिघलती जमीन और खामोश होती संस्कृतियां]

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

आर्कटिक क्षेत्र, जिसे कभी पृथ्वी का प्राकृतिक रेफ्रिजरेटर कहा जाता था, आज जलवायु परिवर्तन की सबसे तीव्र और स्पष्ट चेतावनी बनकर उभर रहा है। अमेरिकी नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन (एनओएए) की आर्कटिक रिपोर्ट कार्ड 2025 के अनुसार, अक्टूबर 2024 से सितंबर 2025 तक का जल वर्ष 1900 के बाद सबसे अधिक गर्म दर्ज किया गया। इस अवधि में सतही वायु तापमान 1991–2020 के औसत से 1.6 डिग्री सेल्सियस अधिक रहा। शरद ऋतु 2024 अब तक की सबसे गर्म रही, जबकि सर्दी 2025 दूसरी सबसे गर्म। यह स्थिति "आर्कटिक एम्प्लीफिकेशन" की पुष्टि करती है, जिसमें यह क्षेत्र 2006 से वैश्विक औसत से दो गुना से अधिक तेजी से गर्म हो रहा है। यह केवल तापमान वृद्धि नहीं, बल्कि पूरे आर्कटिक पारिस्थितिकी तंत्र के गहरे और स्थायी बदलाव का संकेत है, जिसका असर पूरी दुनिया के मौसम तंत्र पर पड़ रहा है।

इस रिकॉर्ड तोड़ गर्मी का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव आर्कटिक की समुद्री बर्फ पर दिखाई दे रहा है। मार्च 2025 ने समुद्री बर्फ के अधिकतम विस्तार का ऐतिहासिक निचला रिकॉर्ड बनाया, और सितंबर का न्यूनतम स्तर भी अब तक के दस सबसे कम स्तरों में शामिल रहा। 1980 के दशक की तुलना में पुरानी और मोटी बहुवर्षीय बर्फ लगभग 95 प्रतिशत तक घट चुकी है। बर्फ के पिघलने से "अल्बेडो प्रभाव" कमजोर हो रहा है, क्योंकि सफेद सतह की जगह गहरा समुद्र सूर्य की अधिक ऊष्मा सोख लेता है। इसके कारण समुद्री सतह का तापमान असामान्य रूप से बढ़ रहा है, विशेषकर उत्तरी अटलांटिक क्षेत्र में। ग्रीनलैंड आइस शीट ने अकेले 2025 में लगभग 129 अरब टन बर्फ खोई, जो समुद्र स्तर वृद्धि को तेज कर रही है और आर्कटिक को कम-बर्फ वाले नए युग की ओर धकेल रही है।

परमाफ्रॉस्ट का पिघलना इस गर्मी का सबसे खतरनाक और दीर्घकालिक परिणाम बनता जा रहा है। 2024 में उत्तरी अमेरिका और स्वालबार्ड जैसे क्षेत्रों में परमाफ्रॉस्ट का तापमान अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया। इसके पिघलने से जमीन में दबे खनिज और धातुएं नदियों में घुलने लगी हैं, जिसके कारण अलास्का की 200 से अधिक नदियां नारंगी रंग की दिखाई देने लगी हैं। इन्हें "रस्टिंग रिवर्स" कहा जा रहा है। ये नदियां अधिक अम्लीय और विषैली होती जा रही हैं, जिससे पेयजल स्रोत प्रदूषित हो रहे हैं और मछलियों का जीवन संकट में है। यह परिवर्तन जल गुणवत्ता और पारिस्थितिकी को गंभीर रूप से प्रभावित कर रहा है, जो वैश्विक स्तर पर चिंता का विषय है।

आर्कटिक की टुंड्रा का हरा होना पहली नजर में सकारात्मक लग सकता है, लेकिन वास्तव में यह एक गहरे संकट का संकेत है। वर्ष 2025 में टुंड्रा की हरियाली 26 वर्षों के सैटेलाइट रिकॉर्ड में तीसरे सबसे ऊंचे स्तर पर रही और पिछले छह वर्षों से लगातार रिकॉर्ड या उसके करीब बनी हुई है। लंबे और गर्म बढ़ते मौसम के कारण झाड़ियां और छोटे पेड़ तेजी से फैल रहे हैं, जिसे "बोरियलाइजेशन" कहा जाता है। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक आर्कटिक वनस्पतियां और जीव पीछे हट रहे हैं। ध्रुवीय भालू, सील और अन्य बर्फ-निर्भर प्रजातियों का आवास लगातार सिकुड़ रहा है। यह परिवर्तन पारिस्थितिक संतुलन को तोड़ रहा है और स्वदेशी समुदायों की जीवनशैली को गहरे संकट में डाल रहा है।

वर्षा पैटर्न में आए बदलाव भी उतने ही चिंताजनक हैं। अक्टूबर 2024 से सितंबर 2025 के बीच आर्कटिक में वर्षा रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गई, जबकि वसंत ऋतु अब तक की सबसे अधिक वर्षा वाली रही और अन्य मौसम भी शीर्ष पांच में शामिल रहे। गर्म वातावरण अधिक नमी धारण करता है, जिससे भारी बारिश और अचानक बाढ़ की घटनाएं बढ़ रही हैं। इससे हाइड्रोलॉजिकल चक्र तेज हो गया है, नदियों के बहाव का स्वरूप बदल रहा है और तटीय कटाव में तेजी आ रही है। कई स्वदेशी गांव डूबने या स्थानांतरण के खतरे का सामना कर रहे हैं, जबकि सड़कें, घर और बुनियादी ढांचा अस्थिर हो रहे हैं। यह बढ़ती नमी और अनिश्चितता आर्कटिक को पहले से कहीं अधिक अस्थिर और अप्रत्याशित क्षेत्र बना रही है, जिसका प्रभाव वैश्विक मौसम प्रणालियों पर भी पड़ता है।

आर्कटिक महासागर में 'एटलांटिफिकेशन' की प्रक्रिया तेज हो रही है, जहां अटलांटिक से गर्म और नमकीन पानी उत्तर की ओर बढ़ रहा है, जो समुद्री बर्फ को पिघला रहा है और महासागरीय परतों को कमजोर कर रहा है। इससे समुद्री सतह का तापमान रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच गया है, विशेषकर अगस्त 2025 में बर्फ-मुक्त क्षेत्रों में। यह परिवर्तन बोरियल प्रजातियों को उत्तर की ओर धकेल रहा है, जबकि आर्कटिक मछलियों और जीवों के आवास बदल रहे हैं। चुकची और उत्तरी बेरिंग सागर में क्लोरोफिल वृद्धि से मत्स्य पालन प्रभावित हो रहा है, जो स्वदेशी समुदायों की खाद्य सुरक्षा को खतरे में डाल रहा है। जून में बर्फ कवर आधा रह गया है, जो अल्बेडो को और कम कर रहा है। ये जुड़े बदलाव आर्कटिक को एक नए, अस्थिर पारिस्थितिकी तंत्र में बदल रहे हैं, जिसका वैश्विक कार्बन चक्र और मौसम पर गहरा असर पड़ रहा है।

इन सभी परिवर्तनों का असर केवल आर्कटिक तक सीमित नहीं है, बल्कि पूरी दुनिया तक फैल रहा है। आर्कटिक एम्प्लीफिकेशन जेट स्ट्रीम को कमजोर और लहरदार बना रहा है, जिससे उत्तरी गोलार्ध में चरम मौसम की घटनाएं बढ़ रही हैं। कहीं भीषण गर्मी पड़ रही है तो कहीं असामान्य ठंड और लंबे समय तक टिकने वाली मौसमी गड़बड़ियां देखने को मिल रही हैं। समुद्र स्तर में वृद्धि तटीय शहरों और द्वीपीय देशों के लिए गंभीर खतरा बन चुकी है। एनओएए की रिपोर्ट में शामिल 112 वैज्ञानिकों ने चेताया है कि आर्कटिक अब तेजी से एक गर्म, अधिक गीले और अप्रत्याशित क्षेत्र में बदल रहा है। यह बदलाव न केवल स्थानीय संस्कृतियों और जैव विविधता के लिए, बल्कि पूरे ग्रह की स्थिरता के लिए खतरा है।

आर्कटिक में दर्ज यह रिकॉर्ड गर्मी सीधे तौर पर मानव गतिविधियों, विशेषकर जीवाश्म ईंधनों के अत्यधिक उपयोग, का परिणाम है। फिर भी यह संकट केवल चेतावनी नहीं, बल्कि कार्रवाई का अवसर भी देता है। यदि समय रहते ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कटौती की जाए, नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा दिया जाए और संरक्षण नीतियों को मजबूती मिले, तो सबसे विनाशकारी परिणामों को टाला जा सकता है। स्वदेशी समुदायों की भागीदारी और उनका पारंपरिक ज्ञान, जैसे सेंट पॉल आइलैंड की निगरानी प्रणालियां, वैज्ञानिक प्रयासों को अधिक प्रभावी बना सकती हैं। आर्कटिक की बदलती स्थिति हमें याद दिलाती है कि पृथ्वी एक साझा प्रणाली है। इसकी पुकार को अनसुना करना भविष्य से मुंह मोड़ने जैसा होगा; इसे सुनना और उस पर कार्य करना हमारी सामूहिक जिम्मेदारी है।

एआई बनाम अंडरवर्ल्ड: नया भारत, नई लड़ाई

[भारत की सुरक्षा का डिजिटल महाभारत शुरू]

प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

भारत की आंतरिक सुरक्षा को अभेद्य कवच प्रदान करने की दिशा में मोदी सरकार ने एक ऐतिहासिक और दूरगामी पहल करते हुए 26 दिसंबर 2025 को राष्ट्रीय ऑर्गेनाइज्ड क्राइम नेटवर्क डेटाबेस (ओसीएनडी) का शुभारंभ किया। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह द्वारा एंटी-टेरर कॉन्फ्रेंस-2025 में लॉन्च किया गया यह प्लेटफॉर्म केवल एक तकनीकी नवाचार नहीं, बल्कि संगठित अपराध और आतंकवाद के खिलाफ निर्णायक युद्ध की घोषणा है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से संचालित यह प्रणाली अपराधियों के नेटवर्क, उनके फंडिंग चैनल और अंतरराज्यीय गठजोड़ को जड़ से खत्म करने की क्षमता रखती है। एनआईए, राज्य पुलिस और नेटग्रिड (नेशनल इंटेलिजेंस ग्रिड) के संयुक्त प्रयास से विकसित ओसीएनडी, मोदी सरकार की 'जीरो टॉलरेंस' नीति का सशक्त प्रमाण है, जो अपराधियों को यह स्पष्ट संदेश देता है कि अब भारत में छिपने की कोई जगह नहीं बची है।

संगठित अपराध की जटिल और बहुस्तरीय संरचना को समझते हुए सरकार ने यह स्वीकार किया कि केवल पारंपरिक पुलिसिंग से इस चुनौती का समाधान संभव नहीं। वर्षों से माफिया गिरोह, ड्रग नेटवर्क, साइबर अपराधी और अंतरराज्यीय सिंडिकेट सूचनाओं के बिखराव का लाभ उठाते रहे हैं। एक राज्य के पास अपराधी का अधूरा डेटा होता था, जबकि दूसरे राज्य में उसकी पूरी आपराधिक पृष्ठभूमि छिपी रह जाती थी। ओसीएनडी इस खामी को समाप्त करता है। यह सभी राज्यों की एफआईआर, चार्जशीट, खुफिया रिपोर्ट, डोसियर और बायोमेट्रिक जानकारियों को एकीकृत मंच पर लाकर रीयल-टाइम एक्सेस देता है। अधिकारियों का कहना है कि यह प्लेटफ़ॉर्म 'प्राकृतिक भाषा में खोज और तुरंत उत्तर' देने वाले एआई मॉडल जैसी कार्यप्रणाली अपनाता है, जिससे अपराध नेटवर्क को पूरी तरह उजागर किया जा सकता है।

ओसीएनडी की सबसे बड़ी ताकत इसकी उन्नत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस क्षमताएं हैं, जो इसे वैश्विक स्तर का सुरक्षा टूल बनाती हैं। वॉयस सैंपल मैचिंग, फिंगरप्रिंट पहचान और अन्य बायोमेट्रिक तकनीकों के जरिए संदिग्धों की पहचान अब सेकंडों में संभव होगी। नेटग्रिड से इसका समन्वय आतंक फंडिंग, ओवरग्राउंड वर्कर्स और हवाला नेटवर्क को बेनकाब करने में निर्णायक भूमिका निभाएगा। अमित शाह ने सही कहा कि कई अपराधी नेता विदेश भागकर आतंकी संगठनों से हाथ मिला लेते हैं और अपराध की कमाई से देश के खिलाफ साजिशें रचते हैं। ओसीएनडी इसी खतरनाक नेक्सस को तोड़ने का औजार है। इसके साथ लॉन्च किया गया वेपंस डेटाबेस खोए, लूटे और बरामद हथियारों की ट्रैकिंग कर अपराध की सप्लाई चेन को ध्वस्त करेगा।

एंटी-टेरर कॉन्फ्रेंस में अमित शाह द्वारा घोषित "360 डिग्री असॉल्ट" रणनीति भारत की सुरक्षा सोच में गुणात्मक बदलाव को दर्शाती है। इसमें इंटेलिजेंस शेयरिंग, अत्याधुनिक तकनीक, अंतर-एजेंसी समन्वय और सहकारी संघवाद को एकीकृत किया गया है। यह नीति अपराध को केवल नियंत्रित करने की नहीं, बल्कि उसे जड़ से समाप्त करने की मंशा को दर्शाती है। इसी क्रम में अपडेटेड एनआईए क्राइम मैनुअल भी जारी किया गया, जिससे जांच प्रक्रियाएं अधिक वैज्ञानिक, तेज और कानूनी रूप से मजबूत बनेंगी। अमित शाह ने स्पष्ट किया कि संगठित अपराध आतंकवाद की नर्सरी है, और जब तक इसे समाप्त नहीं किया जाएगा, राष्ट्रीय सुरक्षा पूर्ण नहीं हो सकती। ओसीएनडी इस समग्र रणनीति का डिजिटल फंदा है, जो अपराधियों के हर कदम को ट्रैक करेगा।

ओसीएनडी का प्रभाव केवल कानून-व्यवस्था तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि यह राष्ट्रीय सुरक्षा के पूरे इकोसिस्टम को नई धार देगा। ड्रग ट्रैफिकिंग, टेरर फाइनेंसिंग, साइबर गैंग और अंतरराष्ट्रीय माफिया नेटवर्क अब इस डिजिटल निगरानी से बच नहीं पाएंगे। जहां पहले किसी नेटवर्क को समझने में महीनों लग जाते थे, वहीं अब सेकंडों में एक्शन योग्य इंटेलिजेंस उपलब्ध होगी। मोदी सरकार ने इस पहल में राज्यों को भागीदार बनाकर सहकारी संघवाद को नई मजबूती दी है। विशेषज्ञ इसे "डिजिटल ड्रैगनेट" की संज्ञा दे रहे हैं, जो न केवल मौजूदा अपराधियों को पकड़ेगा बल्कि भविष्य के खतरों का पूर्वानुमान भी लगाएगा। यह भारत को दुनिया की सबसे सशक्त और आधुनिक सुरक्षा प्रणालियों वाले देशों की कतार में खड़ा करता है।

मोदी सरकार की यह पहल स्पष्ट करती है कि भारत अब अपराध और आतंकवाद के खिलाफ रक्षात्मक नहीं, बल्कि आक्रामक रणनीति अपना चुका है। ओसीएनडी न केवल मौजूदा सिंडिकेट्स को ध्वस्त करेगा, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित राष्ट्र की नींव रखेगा। अमित शाह की प्रशासनिक दूरदृष्टि और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व में एनआईए ने इस महत्वाकांक्षी परियोजना को साकार किया है। आने वाले समय में "360 डिग्री असॉल्ट" रणनीति इसे और अधिक प्रभावी बनाएगी। राज्य पुलिस बलों का इसे पूरी निष्ठा से अपनाना विकसित भारत के लक्ष्य को गति देगा। ओसीएनडी अपराधियों के लिए चेतावनी नहीं, बल्कि उनके पूरे नेटवर्क के अंत की घोषणा है।

इसके साथ ही मोदी सरकार ने एंटी-टेरर इंफ्रास्ट्रक्चर को आधुनिक बनाने पर विशेष जोर दिया है, जिसमें कॉमन एटीएस स्ट्रक्चर और अभेद्य सुरक्षा ग्रिड की परिकल्पना शामिल है। पहलगाम जैसे हमलों के बाद ऑपरेशन सिंदूर और महादेव जैसी कार्रवाइयों ने यह सिद्ध किया है कि भारत की जवाबी क्षमता पहले से कहीं अधिक सशक्त हुई है। ओसीएनडी इन अभियानों को डेटा और विश्लेषण का मजबूत आधार प्रदान करेगा, जिससे आतंक की योजना बनाने वालों से लेकर उसे अंजाम देने वालों तक सभी पर शिकंजा कसेगा। यह व्यवस्था न केवल अपराध पर ब्रेक लगाएगी, बल्कि भारत को आतंकमुक्त और समृद्ध राष्ट्र बनाने की दिशा में निर्णायक भूमिका निभाएगी। वैश्विक स्तर पर भी इस मॉडल की सराहना हो रही है।

ओसीएनडी मोदी सरकार की आंतरिक सुरक्षा नीति का एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है, जो यह दर्शाता है कि भारत अब प्रतिक्रियात्मक नहीं, बल्कि पूर्णतः प्रोएक्टिव राष्ट्र बन चुका है। अमित शाह का यह एआई आधारित हथियार अपराधियों की जड़ों पर प्रहार करेगा और सहकारी संघवाद के माध्यम से सभी राज्यों को एक साझा सुरक्षा मंच पर लाएगा। यह विकसित भारत की मजबूत नींव है, जहां कोई अपराधी या आतंकी सुरक्षित महसूस नहीं कर सकेगा। प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में स्थापित ये सुरक्षा मानक आने वाले दशकों तक देश को दिशा देंगे। ओसीएनडी केवल एक डेटाबेस नहीं, बल्कि राष्ट्र की अटूट सुरक्षा, संप्रभुता और संकल्प का सशक्त प्रतीक है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

डॉ. मनीष दवे के काव्य संग्रह 'सुप्रज्ञ कृति' का लोकार्पण

हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

पूर्व प्रधान मंत्री भारत रत्न अटल बिहारी वाजपेयी की जन्म शताब्दी जयंती एवं भारत रत्न महामना पं मदन मोहन मालवीय जी के 164 वें जन्म दिन पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन महाकाल की नगरी उज्जैन (म.प्र.) में किया गया। राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना की 43वीं संगोष्ठी में देश के विभिन्न प्रांतों के शिक्षाविद सम्मिलित हुए। इसी अवसर पर डॉ.मनीष दवे के नवीनतम काव्य संग्रह 'सुप्रज्ञ कृति' का विमोचन विशिष्ट अतिथियों, उ. प्र. हिंदी संस्थान, लखनऊ की प्रधान संपादक डॉ. अनीता दुबे, रवीन्द्रनाथ टैगोर वि. वि. भोपाल के निदेशक डॉ जवाहर कर्नावट, पूर्व आईएएस और साहित्यकार डॉ. अशोक कुमार भार्गव, डॉ. प्रभु चौधरी एवं हरेराम वाजपेयी के कर कमलों से सानंद संपन्न हुआ। इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी के अंतर्गत दो महामानवों अटल जी और पंडित मालवीय के व्यक्तित्व और कृतित्व पर सभी अतिथियों ने प्रकाश डाला। डॉ. जवाहर कर्नावट ने बताया कि अटल जी वैश्विक हिन्दी के सबसे बड़े दूत रहे हैं। हमें भी आत्मनिरीक्षण कर भाषा की समृद्धि के लिए आगे आना होगा, तभी अटल जी का स्मरण सार्थक होगा। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ की प्रधान संपादक डॉ. अनिता दुबे ने मुख्य अतिथि के रूप में कहा कि ज्ञान ही नहीं परिवेश भी महत्वपूर्ण होता है और आज हमें परिवेश के अंतर्गत हिन्दी के प्रति बच्चों को आकृष्ट करना और चुनौतियों से लड़ना सिखाना होगा। मुख्य वक्ता पूर्व आईएएस और साहित्यकार डॉ. अशोक कुमार भार्गव ने अटल जी के सुशासन की तारीफ़ करते हुए कहा कि राजा को प्रजा के हित को सर्वोच्च प्राथमिकता देनी चाहिए। संगोष्ठी में साहित्यकार श्री हरेराम वाजपेयी ने कहा कि महामना मदन मोहन जी मालवा के थे और इसीलिए उनका नाम मदनमोहन मालवीय हुआ। डॉ मनीष दवे ने अपने संबोधन में राष्ट्रीय शिक्षक संचेतना द्वारा पुस्तक विमोचन के लिए धन्यवाद एवं आभार ज्ञापित करते हुए कहा कि अटल जी के सपनों को साकार करता हुआ उनका विजन आज देश को विकासशील से विकसित भारत की ओर ले जा रहा है। हिंदी और हिंदुस्तानी यह नए भारत की पहचान है। संगोष्ठी को शिक्षाविद वरुण गुप्ता, डॉ. राजेन्द्र पाल इंदौर, निर्मल कुमार मेहता, मुंबई, पदमचंद गांधी भोपाल ने भी संबोधित किया। अध्यक्षीय उद्बोधन देते हुए डॉ. ब्रजकिशोर शर्मा ने कहा कि अटल जी वस्तुतः संवेदनशील साहित्यकार थे।

आरम्भ में अटल जी और महामना के चित्र पर माल्यार्पण कर संगोष्ठी का शुभारम्भ हुआ। डॉ. मनीष दवे को अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया गया। अतिथि स्वागत शिक्षक संचेतना के संयोजक डॉ. प्रभु चौधरी, डॉ. शिवा लोहारिया व अंजना जैन ने किया। कार्यक्रम के दौरान संचेतना समाचार पत्र का लोकार्पण भी किया गया। स्वागत भाषण आयोजन समिति अध्यक्ष डॉ. प्रभु चौधरी ने दिया। संचालन डॉ. हरीशकुमार सिंह ने किया और आभार श्री सुन्दरलाल मालवीय ने माना।

आत्मचिंतन की पारदर्शी राह,

नया वर्ष सिर्फ़ तारीख़ नहीं बल्कि नई सोच का अवसर है

डॉ.मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़ हरदा मध्य प्रदेश

दोस्त, कैलेंडर के पन्ने पलटेंगे, बाजारों में चमक-धमक बढ़ेगी, रंग-बिरंगे गुब्बारे उड़ेंगे, संकल्प लिए जाएंगे, जिम जॉइन करना, वजन घटाना, नई वस्त्र खरीदना, नया फ़ोन लाना, लेकिन क्या सोच रहे हो कि नया साल आयेगा तो सब नया हो जाएगा? क्या तुम अपने बारे में नहीं सोच रहे? तुम्हे भी तो बदलना चाहिए, लेकिन कैसे? क्यों? क्या नए वर्ष में सब नया होगा? नहीं दोस्त, दोस्त भी पुराने होंगे, हम भी पुराने रहेंगे, लेकिन क्या सोचा है कि हमारी सोच भी पारदर्शी होगी, दिलों में कोई मेल नहीं होगा, कोई छल-कपट नहीं बचेगा? यह सवाल हर आम आदमी से है, हर गली-मोहल्ले के उस भाई-बहन से जो सुबह चाय की चुस्की लेते हुए अख़बार पढ़ता है और सोचता है कि कब बदलेगा ये देश, कब आएगा स्वर्णिम युग? लेकिन सच तो यह है कि बाहर की दुनिया तब तक नहीं बदलेगी जब तक हम अंदर से न बदलें, जब तक हमारी सोच के बादल न साफ़ हों, जब तक दिल की नदियां पारदर्शी न हो जाएं। चलो इस नए वर्ष में कुछ नई सीख लें जो जिंदगी को सचमुच बदल दें, जो हमें नई राह दिखाएं, जो हमें सिखाएं कि बदलाव का पहला क़दम ख़ुद से उठाना पड़ता है। सबसे पहली सीख है आत्मचिंतन करो, रोज रात को 10 मिनट अकेले बैठो, आंखें बंद करो, गहरी सांस लो और पूछो ख़ुद से, आज क्या ग़लत सोचा? किससे मन में कड़वाहट रखी? क्यों वो पुरानी बात आज भी साल रही है? जैसे नदी का पानी साफ़ हो तो ही उसका बहाव सुंदर लगता है, वैसे ही पारदर्शी सोच से रिश्ते मज़बूत होंगे, ऑफ़िस में बॉस से झगड़ा हो गया तो कल फ़िर वही नाराज़गी मत ले जाना, माफ़ कर दो, बोल दो दिल की बात, कह दो भाई मैं ग़लत था, चलो नई शुरुआत करें, देखना नया वर्ष नई दोस्ती बनेगी। दूसरी सीख है कार्य में परिवर्तन लाओ, नए साल के संकल्प बड़े मत बनाओ क्योंकि वे टूट जाते हैं और निराशा होती है, छोटे क़दम उठाओ जो रोज़ निभा सको सुबह 5 मिनट अनुलोम-विलोम प्राणायाम करो, आयुर्वेद कहता है कि यह मन की अशुद्धियां दूर करता है, शरीर की विषाक्तता निकालता है, फिर एक गिलास गुनगुने पानी में नींबू और शहद मिलाकर पियो, यह नई ऊर्जा देगा, फिर एक पुराने दोस्त को फ़ोन करो जिससे सालों से बोलचाल बंद है, कहो भाई याद आ गया, माफ़ी मांगो या सिर्फ पूछो हाल-चाल, दिलों का मेल जोड़ेगा। तीसरी सीख है पारदर्शिता का जादू अपनाओ, झूठ मत बोलो चाहे छोटा ही क्यों न हो, भावनाएं खुलकर व्यक्त करो, घर में पत्नी से झगड़ा हो तो चिल्लाओ मत, बैठो कहो दिल की बात सुनो, बच्चे देखेंगे सीखेंगे, मोहल्ले में पड़ोसी से विवाद हो तो अदालत मत जाओ पहले बात करो, समझो उनकी मज़बूरी, यही तो पारदर्शिता है जो समाज को जोड़ेगी। चौथी सीख है प्रकृति से सीखो, नए वर्ष में पार्क जाओ, पेड़ों को देखो कैसे पुराने पत्ते झड़ते हैं नए आते हैं, तुम भी पुरानी नकारात्मक आदतें झाड़ दो सोशल मीडिया पर नकारात्मक पोस्ट मत शेयर करो, सकारात्मक सोच फ़ैलाओ, कोई भजन सुनो जैसे मोहम्मद रफ़ी साहब का रूसुकून मिला तुझे जहां में आकर, यह दिल को शांति देगा। पांचवीं सीख है संतों की बात याद रखो, स्वामी विवेकानंद ने कहा था उठो जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो, लेकिन लक्ष्य क्या? पहले ख़ुद का सुधार, गांधीजी ने कहा हमें वो बदलाव बनना चाहिए जो हम दुनिया में देखना चाहते हैं, तो पहले ख़ुद बनो वो बदलाव। छठी सीख है परिवार से शुरू करो, नए वर्ष की पहली सुबह पूरे परिवार को बिठाओ, संकल्प लो साथ में कोई मीठा न खाएं बिना व्यायाम के, कोई टीवी ज्यादा न देखें बिना किताब पढ़े, बच्चे कहानी सुनें महाभारत की या रामायण की जो नैतिकता सिखाए। सातवीं सीख है योग और आयुर्वेद को अपनाओ, सरस्वती वंदना करो सुबह, सूर्य नमस्कार करो 5 चक्र, यह न केवल शरीर को मजबूत बनाएगा बल्कि मन को पारदर्शी करेगा, आयुर्वेदिक चाय पियो तुलसी-अदरक वाली जो रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाएगी। आठवीं सीख है माफ़ करना सीखो, पुरानी कटुता को क्षमा करो, जैसे भगवान राम ने रावण को माफ़ करने की सोच रखी थी, वैसे तुम भी दुश्मन को दुश्मन मत मानो, प्रार्थना करो उसके लिए। नौवीं सीख है लेखन करो डायरी में रोज़ तीन अच्छी बातें जो हुईं, तीन ऐसी जिन्हें सुधारना है, यह सोच को साफ़ करेगा। दसवीं और अंतिम सीख है विश्वास रखो खुद पर, नया वर्ष सिर्फ़ तारीख़ नहीं बल्कि नई सोच का अवसर है, पुराने हम को अलविदा कहो, नए ख़ुद को गढ़ो, पारदर्शी सोच साफ़ दिल यही असली बदलाव है, चलो इस नए वर्ष में वादा करें हम बदलेंगे तो दुनिया बदलेगी, राष्ट्र बदलेगा, खुशहाली आएगी, जय हिंद।

राष्ट्रपति के गृह जिला के मयूरभंज महाराज का अतुलनीय योगदान है टाटा को स्थापित कराने में

देश का प्रथम ऐतिहासिक लौह अयस्क लीज डीड मयूरभंज महाराजा एवं टाटा के बीच, पी एन बोस देश के प्रथम भूगर्भ शास्त्री

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्थम्भकार (झारखंड -ओडिशा)

महामहिम राष्ट्रपति द्रोपदी मूर्मू रायसिना हिल से रांची होते हुए जिस जमशेदपुर तथा सरायकेला जिले में कल दस बजे पहुंच रहीं हैं जहां उनके अपने इलाकों के राजाओं द्वारा टाटा कंपनी को विशेष सहयोग नहीं दिया गया होता तो शायद ही देश का प्रथम लौह इस्पात उद्योग बैठ पाता और अंग्रेज उनसे प्रभावित होकर नाम बदलकर जमशेदपुर या टाटा रखते। महामहिम का गृह जिला मयूरभंज महाराज का लौह अयस्क खदान देने में अतुलनीय योगदान है जब देश में एक सेफ्टीपिन तक नही बनता था। सच तो यह है कि टाटा का पुराना नाम साकची एवं काली माटी रहा इलाके का। मयूरभंज गोरूमहिषाणी से खनन व लौह अयस्क क्षेत्र, सरायकेला राज्य से मानव संसाधन व धालभूम की जमीन पर ही भारत के नक्शे में इस इलाके को औधोगिक स्वरूप में तब्दील किया गया। गोरुमहिषाणी का ओड़िया भाषा में मतलब बैल तथा भैंस के पीठ पर लाना होता है। पूर्व में बैल व भैंस के पीठ पर लोहा पत्थर लादकर झारखंड के पूर्वी सिंहभूम के खंडामौदा में पहुंचाया जाता था जहां उन दिनों तलवारें बनाई जाती थी जिसे ओड़िया भाषा मे खंडा कहते। जो इलाके के लड़ाकु सैनिकों निमित्त बनाये जाते थे। खंडा मौदा मुलत ओड़िया नाम है जो खंडा यानी संस्कृत खड्ग को बोध करता है। इसकी इतिहास की चर्चा अन्यत्र करेंगे।

आज से 120-22 वर्ष पूर्व 24 फरवरी 1904 को देश के प्रथम भूगर्भ शास्त्री पी एन बोस ने अगर गोरूमोहिषाणी लौह अयस्क खान की खोज नहीं करते और ब्रिटिश प्रयोगशाला में इसकी लौह तत्व (Fe contant 60-65) को सामने नहीं लाते तो शायद ही आज जमशेदपुर का अस्तित्व सिंहभूम के नक्शे में हो पाता। जिसके नींव रखवाने हेतु महाराज मयूरभंज द्वारा अपनी खनीज संपदा को 1904 से 1909 के लिए गोरूमहिषाणी नामक खदान की एक प्रोसपेक्टिगं लाईसेंस दी थी। इसके बाद पुनः दो और स्थल बादाम पहाड़ तथा सुलेईपाट नामक स्थल लौह माइन्स मिले। सबसे पहले महाराज मयूरभंज के प्रयास से बंगाल-नागपुर रेल से 1911 में टाटा नगर तब काली माटी जंक्शन निकट से रायरंगपुर आंवला जोड़ी होते हुए गोरूमहिषाणी तक लौहपथ गामिनी का पथ निर्माण आरंभ होता है, जो 1923 में जाकर समाप्त हुआ था। जमशेदजी की अकाल वियोग के बाद उनके सुपुत्र दोराबजी टाटा को मयूरभंज महाराज से 1जूलाई 1910 से 30 जूलाई 1940 तक कुल 30 वर्ष के लिए गोरूमहिषाणी लौह खदान से साकची तक लौह अयस्क लेजाने का लीज प्रदान की थी। और यही तत्कालीन ब्रीटिश इंडिया में लौह अयस्क का प्रथम ऐतिहासिक लीज डीड रहा। गोरूमहिषाणी स्थित ऐतिहासिक पी एन बोस मेमोरियल ऐतिहासिक स्मारकी इसका जीता जागता प्रमाण आज भी मौजूद है। तब तक टाटा या जमशेदपुर नाम प्रचलन मे नहीं था केवल साकची, काली माटी, विष्टूपुर के नाम से इलाका परिचित था।

1907 में टिस्को स्थापित होने के बाद इलाके में विशाल लौह उद्योग का साम्राज्य खड़ा होता है। ऐसे में सरायकेला, धालभूम राजा के लगातार सहयोग रहा। साथ ही प्रथम विश्वयुद्ध 1914-18 के कारण अंग्रेजों को देश विदेश में लोहा की जरूरत होती रही जो मिल पाना असंभव था। जहां 1911से 1940तक लम्बी अवधि में मिले लीज से लोहा बनाकर टाटा ने ब्रिटिश सरकार को काफी लाभ पहुंचाता रहा। जिसके फलस्वरूप लर्ड चेम्सफोर्ड ने इसका नाम जमशेदपुर/टाटा के नाम 1919 में नामित कर दी। यद्यपि ओडिया राजाओं का विशेष सहयोग से यहां पनपा था कंपनी उनका कहीं उल्लेख नहीं रहा।

इसके बाद दुसरे विश्वयुद्ध 1939-1945 में औधोगिकरण के पृष्ठ पोषक महाराज श्रीराम चंद्र भंज के कनिष्ठ पुत्र महाराज प्रताप चंद्र भंजदेव टिस्को लीज को 1जुलाई 1940से 30 जून 1970 तक बढ़ाते हुए 30 वर्षों का लीज स्वीकृत की थी।

तत्पश्चात देश आजादी के बाद नेहरू केबिनेट में प्रथम वाणिज्य मंत्री तथा देश के प्रथम मुख्य आर्थिक कमिशन -(1951) के अध्यक्ष के सी नियोगी जो पूर्व में मयूरभंज महाराजा प्रताप चंद्र भंजदेव के दिवान रहे उनका टिस्को खनन लीज नवीनीकरण करना एक महत्वपूर्ण विषय मयूरभंज माटी एवं टाटा कंपनी के लिये स्वर्णिम इतिहास रहा है। पर यह ओडिशा एवं ओड़िया जाति का दुर्भाग्य कहिए कि टाटा से इन्हें कुछ खास नहीं मिला आजतक जो ओडिया भाषी मूल वासी के रूप में ओडिशा या टाटानगर के नज़दीक इलाके में बसे हैं।

एन आई टी आदित्यपुर का नाम एनआई टी जमशेदपुर किये जाने पर रोष, ऐतिहासिक मर्यादा हनन पर राष्ट्रपति से शिकायत

ओड़िया भाषी पत्रकार व जनता की उपेक्षा पर शिकायत पत्र भेजा

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

आदित्यपुर, महामहिम राष्ट्रपति को सरायकेला की जनता तथा पत्रकारों की तरफ से एक पत्र भेजकर स्थानीय ओड़िया पत्रकार एवं ओड़िया जनता की उपेक्षा नहीं करने साथ ही एन आई टी नाम एन आई टी आदित्यपुर के जगह एन आई टी जमशेदपुर किये जाने पर तीव्र प्रतिक्रिया देते हुए ऐतिहासिक सरायकेला की वजूद को न मिटाने की मार्मिक अपील राष्ट्रपति से की गयी है।

अपने पत्र में भारी संख्या में लोगों ने कहा है कि सरायकेला खरसावां जिला आजाद भारत में भी ओडिशा का एक राजस्व जिला रहा है जहां आज भी ओड़िया जनता एवं ओड़िया पत्रकार उपेक्षित है। विदित हो कि समुचा सिंहभूम (पूर्वी तथा पश्चिमी) भी 1936 के पूर्व स्वतंत्र ओडिशा प्रदेश गठन के समय तक ओडिशा का अभिन्न अंग रहा। जिस रबिहार-ओडिशार विधान परिषद में तब भी 11 सदस्य कभी ओड़िया भाषी होते थे। उत्कल गौरव आदरणीय मधुसुदन दास 1923 में बिहार ओडिशा प्रान्त के मंत्री रहे। 1936 में गोदाबरीश मिश्र विधान परिषद के उन 11 सदस्यों में से रहे है जिन्हें ओडिशा प्रान्त बिहार से अलग होने पर भावभीनी विदाई थी पटना में। मौजूदा समय में न तो आज ओड़िया जनमानस के प्रतिनिधित्व झारखंड विधान सभा में होती है नाही चुने गये सदस्य ओड़िया लोगों के प्रति, उनके समस्याओं यहां तक कि उनके मौलिक अधिकारों की बात उठाते हैं। नतीजा नौकरशाही ओड़िया समुदाय एवं जनमानस को एक तरह से नकारते चले हैं गांव-गांव, गली-गली तक। मूल वासी ओड़िया निमित्त 52 वर्ष बिहार तथा 25 वर्ष झारखंड में क्या काम हुए इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता कि महामहिम कोल्हान सब-डिवीजन के तीनों जिले में एक भी ओडिया स्कूल सरकारी आंकड़े में आज नहीं है। इससे बड़ा ओड़िया को समाप्त करने की षड्यंत्र और क्या हो सकता है?

लोगों ने आगे हां है आदित्यपुर जो महाराजा सरायकेला आदित्य प्रताप सिंह देव के नाम से इलाका नामित है आज महामहिम का आगमन हेतु तैयारियां जोरों पर है। पर वहां स्थित NIT का नाम NIT Adityapur के बदले NIT Jamshedpur रखा जाना इलाके के ऐतिहासिक गौरव/सम्मान को तहस नहस करता है। जमशेद जी ने अंग्रेजों को सस्ते में लोहा उपलब्ध कराया था इसलिए काली माटी, साकची का नाम बदलकर जमशेदपुर/टाटा अंग्रेजों ने नामित किया था। परन्तु सरायकेला में अंग्रेज कभी नहीं आये यहां यूनियन जैक कहीं नहीं उडा कभी। इसकी अपनी ऐतिहासिक महत्व है इसे अक्षुण रखा जाय।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023